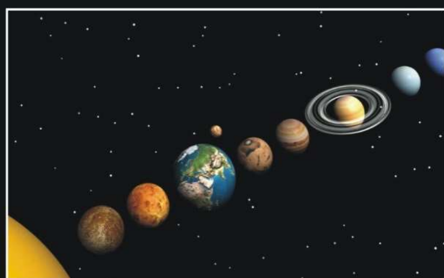
वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

तर्कशील पथ

TARKSHEEL

जुलाई 2019



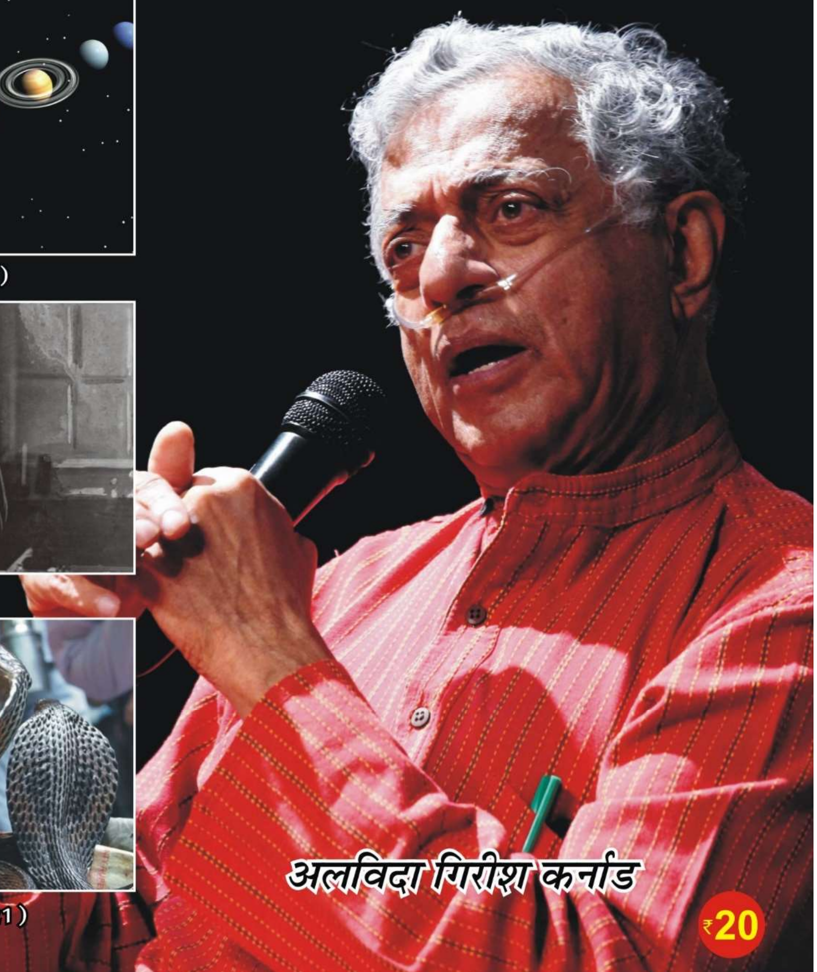
सौरमंडल में गृह (23)



मैडम क्यूरी (39)



क्या है पैनिक अटैक (21)



अलविदा गिरीश कर्नाड

₹20

विज्ञान एवं तर्क ही सत्य को जानने का तरीका है। ...हिमांशु कुमार

हम हार क्यों गए स्पार्टाकस?

पूछा था बुढ़िया ने,
मरते हुए स्पार्टाकस से।
हम तो लड़े थे, कमजोरों के लिए,
आज़ादी और जाने कितने
अब बेमानी उसूलों के लिए,
फिर हार क्यों गए स्पार्टाकस?'
स्पार्टाकस की खून की बूंदे
गिर गीला कर रही थीं, बुढ़िया के सफेद बाल।
उसने सूखे गले से बोलना चाहा / पर कह न सका कि
सच जीतेगा इसलिए उसकी तरफ
नहीं खड़े रहते।
बहुत बार हारता है सत्य-
जब भी वो रखता है कदम किताबों के बाहर।
तुम्हारी हीरो वाली गाथाओं के
बाहर बहुत बार मार भी दिया जाता है सच।
उस मरते सच को बस अकेला नहींविनोदमरने देना है,
वो हारे भी तो उसके साथ खड़े रहना है।
क्योंकि तभी कविताओं में भी सच बच पायेगा।
गीतों में तभी हर बार विजयी होगा।
सच के साथ रहना क्योंकि
कल के लिए उसके मरे हुए टुकड़ों से
फिर नए सच के पेड़ आएंगे,
जिनके छाँव में बड़े होंगे/ हमारे बच्चे,
जो एक रोज़ उन पेड़ों का जंगल खड़ा करेंगे।
और जंगल को हराना काफी मुश्किल है।
स्पार्टाकस हार चुका था/ उसपे थूका जा रहा था,
पर क्रॅास पर भी तो खड़ा रहा /वो सच के लिए।
स्पार्टाकस मर चुका था,
बुढ़िया घर जा चुकी थी,
बिना जवाब सुने
सब जान चुकी थी।।

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 30191855465 IFSC: SBIN 0002420 में जमा करा सकते है। शुल्क Paytm के माध्यम से मोबाईल नम्बर 9416036203 पर या कोड को स्कैन करके भी भेजा जा सकता है। शुल्क भेजने के बाद इसी मोबाइल नम्बर पर अपना पता SMS या WhatsApp करें।

Reg.No.HARHIN/2014/60580

संपादक : बलवन्त सिंह - 94163-24802

संपादक सहयोग :-

गुरमीत अम्बाला - 94160-36203

बलबीर चन्द लौंगोवाल - 98153-17028

हेम राज स्टेनो - 98769-53561

पत्रिका शुल्क :-

द्विवार्षिक : 200/- रू.

विदेश : वार्षिक : 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरण :

गुरमीत अम्बाला

Email: tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पता:

बलवन्त सिंह (प्रा.)

म.नं. 1062, आदर्श नगर,

नजदीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली।

जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा)

Email: tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए

www.facebook.com/tarksheelindia
पेज को लाईक करें।

पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है-

http://tarksheelblog.wordpress.com
पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:

www.tarksheel.org
Tarksheel on Whatsapp : 9416036203
Tarksheel Mobile App :

Readwhere.com
Tarksheel on Twitter:

@gurmeeteditor

टाईप सैटिंग और डिज़ाइनिंग:
दोआबा कम्यूनिकेशंस
मोबाईल : 92530 64969
Email: baldevmehrok@gmail.com

संकेतिका

मीटिंग की सूचना

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विमासिक मीटिंग, दिनांक **15 सितंबर, 2019** को दिन रविवार, उकलाना में प्रातः 10.00 से 3.00 बजे तक होगी।

नोटः तिथि, स्थान व समय के बारे में सभी साथी फोन संपर्क करके सुनिश्चित कर लें।

सम्पर्क सूत्रः
फरियाद सिंहः 9416091782
सत्यवान मुगलपुराः 9416589987

नोट : किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ जगाधरी यमुनानगर (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

सम्पादकीय

मैडिकल कालेजों की मृतक शरीर लेने प्रति उदासीनता

15 जून. 2019 को तर्कशील कार्यकर्ता मुखविंदर सिंह इस जहां को अलविदा कर गए। उनकी इच्छा अनुसार एवं तर्कशील सोसायटी द्वारा चलाये जा रहे अभियान के अनुसार उनका मृतक शरीर मैडीकल कालेज को सौंपने का निर्णय उनके परिवार ने लिया। इस कार्य को पूर्ण करने के लिए अमृतसर एंव आसपास स्थानीय मैडीकल कालेजों से सम्पर्क किया गया लेकिन सभी कालेजों ने मृतक शरीर लेने से बहाने बाजी करके मना कर दिया। किसी ने मृतक शरीर रखने की जगह की कमी का बहाना बनाया तो किसी ने साप्ताहिक अवकाश का बहाना बनाया। यह सब तर्कशील कार्यकर्ताओं को नागवार गुजरा। अंत में और आदेश मैडीकल कालेज भठिंडा से सम्पर्क करने पर उन्होंने मृतक शरीर लेना स्वीकार किया जो अमृतसर से लगभग 200 किलोमीटर दूर था। इसी प्रकार कई वर्ष पूर्व सिरसा से तर्कशील सोसायटी ने लगभग 250 किलोमीटर दूर मुलाना के मैडीकल कालेज में शरीर ला कर सौपा था। इस मामले में अक्सर मैडीकल कालेजों, खासकर सरकारी संस्थानों का रवैया बेहद खराब रहता है, दूसरा इस सम्बंध में अभी तक भी मैडीकल कालेजों के एनाटॉमी विभागों में मृतक शरीर सम्भालने की पर्याप्त जगह ही नहीं है। तर्कशील सोसायटी पंजाब के प्रभारी कृष्ण बरगाड़ी की मृतक देह को सन 2002 में मैडीकल कालेज में प्रदान करने से शरीर प्रदान का एक आंदोलन तर्कशील सोसायटी ने चलाया था जिसको भरपूर समर्थन मिला और बेहद चर्चा मिडीया में हुई। मैडीकल कालेजों को अब शरीर संरचना के अध्ययन के लिए नकली मॉडलों पर अध्ययन करने की जरूरत नहीं रही, लेकिन सोसायटी के लगातार प्रयास से भी मैडीकल कालेजों का इस दिशा में प्रयास उत्साह जनक नही रहा। मृतक शरीर को मैडीकल कालेजों में पहुंचाने का दायित्व मृतक के परिवारों का ही है। कोई एम्बुलेंस की व्यवस्था इस दिशा में नही बन पाई। दूसरा तर्कशील सोसायटी के मृतक शरीर चिकत्सीय उपयोग हेतु प्रदान करने की मीडिया में बेहद प्रशंसा होने से अन्य बहुत सारी धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं ने इस दिशा में प्रयास करने शुरू कर दिए हैं। तर्कशील सोसायटी के देखादेखी आज हरियाणा पंजाब के बहुत से शहरों में मृत्योपरांत मैडीकल कालेज को मृतक शरीर सौपने के लिए बहुत से संगठन सक्रिय हैं और मैडीकल कालेजों में जरूरत से ज्यादा शरीर पहुंचने या सम्भालने उनके यहां उचित व्यवस्था न होने के कारण ज्यादातर मैडीकल कालेजों का रवैया उदासीन हो चला है। ऐसी व्यवस्था राष्ट्रीय

स्तर पर नहीं बन पाई कि मृतक शरीर को अन्य राज्यों के मैडीकल कालेजों को सरकारी खर्चे से भेजा जाए। हमें इस आंदोलन को लगातार जारी रखते हुए और इस दिशा में सरकारी प्रबन्धों को बेहतर बनाने के प्रयासों के साथ ही मृतक शरीर को 200 या ज्यादा किलोमीटर तक ढोने की जरूरत नहीं है, क्योंकि इससे परिवार को बहुत मानसिक पीड़ा होती है ज्यादातर मैडीकल कालेज के मोर्चरी विभाग में उपलब्ध आम स्टाफ ही मृतक शरीर को आम लावारिश लाशों की तरह लेता है। बहुत कम मैडीकल कालेज हैं जहाँ सम्मान जनक तरीके से वरिष्ठ डाक्टर मृतक शरीर को लेकर परिवार का एंव संस्था का आभार व्यक्त करते हैं। जरूरत है कि तर्कशील सोसायटी व अन्य सामाजिक संस्थाएं हर जिले में गैस आधारित या बिजली से चलने वाले मृतक शरीर को ठिकाने लगाने के संयंत्र लगवाने की दिशा में कोशिस करें, इससे जहां पर्यावरण को नुकसान भी नही पहुंचता वहीं बहुत जल्दी मृतक शरीर को निरस्त किया जा सकता है। अभी ऐसे संयंत्र चंडीगढ़, दिल्ली, अमृतसर आदि बड़े शहरों में ही है। इन संयंत्रों में ही कई प्रसिद्ध हस्तियों जैसे नाटककार गुरशरण सिंह, सरिता के सम्पादक विश्वनाथ, पत्रकार खुशवंत सिंह, समाजवादी नेता राममनोहर लोहिया को अलविदा दी गई थी जो कि बेहद महत्वपूर्ण कदम था।

मृतक शरीर के निस्तारण से पूर्व नेत्र प्रदान किया जा सकता है, ऐसे प्रबंध हर जिले में हैं और नेत्र उपयोग की मांग भी बहुत रहती है। अभी श्री लंका ही दुनिा में इकलौता देश है जो अपनी जरूरतों के बाद अन्य देशाों को भी प्रत्यारोपण के लिए नेत्र प्रदान करता हैं समय के साथ होने वाले परिवर्तनों को अंगीकार करना जीवन में बेहद लाभदायक होता है।

– गुरमीत अम्बाला

महाराष्ट्र के अंधश्रद्धा निमूर्लन समिति के नेता राजा शिरगुपे के अमृतसर आगमन पर

महाराष्ट्र की तर्कशील संस्था अंधश्रद्धा निर्मूल समिति के तर्कशील नेता तथा पत्रकार, नाटककार और मराठी फिलमों के अदाकार राजा शिरगुपे का पिछले दिनों अमृतसर आगमन हुआ। इस दौरान वे तर्कशील सोसायटी पंजाब के स्थानीय नेताओं से मिले और महाराष्ट्र व पंजाब में तर्कशील लहर के कार्यो बारे विशेष चर्चा हुई।

इस अवसर पर उन्होंने महाराष्ट्र में तर्कशील लहर संबंधी अपने तजुर्बे साझे करते हुए बताया कि अंधश्रृद्धा निर्मूलन समिति महाराष्ट्र के संस्थापक नरेंद्र दाभोलकर ने लगातार चालीस सालों तक इस संस्था के माध्यम से लोगों को अंधश्रद्धा, जाति-पाति, सांप्रदायिक विरोधी जागरूकता, मूर्ति विसर्जन ज्योतिष, बाबावाद, नशा मुक्ति व कई अन्य प्रकार की रूढ़िवादी पाखंडी बाबाओं आदि के खिलाफ जागरूकता लाने का कार्य किया। महाराष्ट्र में अंधविश्वास और जादू-टोना विरोधी कानून पास करवाने में दाभोलकर ने अत्यंत निडरता के साथ संघर्ष किया। इस कानून के अंतर्गत अब तक हजारों पाखंडी, तांत्रिक, ज्योतिषियों के खिलाफ केस दर्ज किये जा चुके हैं और कइयों को सजा भी हो चुकी है।

इस चर्चा के आदान-प्रदान के दौरान तर्कशील सोसायटी, पंजाब के अमृतसर जोन के नेता और इकाई के प्रधान ने भी तर्कशील सोसायटी पंजाब द्वारा वैज्ञानिक चेतना के प्रचार-प्रसार के लिए किए जा रहे कार्यो के बारे मेहमान को अवगत करवाया कि किस तरह वे तर्कशील साहित्य वैन, विद्यार्थी चेतना परख परीक्षा, तर्कशील मैगजीन और तर्कशील मेलों, व सेमिनारों आदि के माध्यम से लोगों को जागरूक करने का अभियान चलाये हुए हैं।

इस अवसर पर तर्कशील नेताओं ने सरकार से मांग की कि डा. दाभोलकर, गोविंद पानसरे, प्रो. कलबुर्गी और गौरी लंकेश के कातिलों को गिरफ्तार करके सख्त सजायें दी जावे और मोदी सरकार व हिंदुत्व फासीवाद ताकतों के खिलाफ आवाज उठाने वाले पत्रकारों, लेखकों, बुद्धिजीवियांं, वकीलों, तर्कशीलों, सामाजिक कार्यकर्ताओं को जान से मारने की धमकियां देने वालों पर नकेल कसी जावे।

मन की बीमारियां : भूतबाधा, देवी सवारना

लेखक : डा. नरेन्द्र दाभोलकर,

गंभीर मानसिक बीमारी के लक्षण

ऐसी बीमारी को सायकोसिस कहा जाता है। ऐसे मरीज वस्तुस्थिति से दूर भागते हैं। कभी-कभी वे बिना कुछ खाए-पिए घंटों निष्क्रिय बैठे रहते हैं प्राकृतिक विधियां भी भूल जाते हैं। कभी-कभी असामान्य ऊर्जा से काम भी करते हैं। कुछ मरीज स्वयं से बातें करते हैं, हंसते हैं, चुटकियां बजाते हैं, चक्कर लगाते हैं। उनके चेहरे के हावभावों में लगातार परिवर्तन आता रहता है, आवाज बदल जाती है।

किसी बात का आभास अथवा भ्रम होना इस बीमारी का प्रमुख लक्षण माना जाता है। यह आभास किसी ज्ञानेंद्रिय से जुड़ा होता है। पीड़ित व्यक्ति को अपनी आंखों के सामने कभी तेजस्वी व्यक्ति का आभास होता है, कभी भयंकर स्वरूप का प्राणी नजर आता है। कभी-कभी उसे चंदन अथवा इत्र की सुगंध आती है, तो कभी सड़े हुए कचरे की बदबू आती है। प्रत्यक्षतः ऐसा कुछ भी नहीं होता। कभी त्वचा पर मुलायम स्पर्श का आभास होता है, तो कभी कीड़ों के बिलबिलाने का भ्रम होता है। कान में निरंतर कोई न कोई संदेश सुनाई देता है। 'जग के कल्याण के लिए तुझे चुना गया है', 'यह दवा तल ले, यह तुझे मारने के लिए दी जा रही है'-ऐसी फुसफुसाहट उसे सुनाई देती है। वास्तव में ऐसा कुछ भी नहीं होता है, लेकिन मरीज के लिए यह सब सच्चाई होती है।

यह आभास कैसे और क्यों होते हैं, यह समझ लेना जरूरी है। आवाज का उदाहरण लीजिए-स्वस्थ व्यक्ति को जब आवाज सुनाई देती है, तो उसमें दिमाग की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। दूर कहीं इंजन की सीटी बजती है। हवा में उसका ध्वनिकंपन तैयार होता है। वह कंपन कानों के पर्दो तक पहुंचती है। पर्दा हिलने लगता है और वह हलचल सूक्ष्म संदेश में रूपांतरित होती है। श्रवणेंद्रिय के मज्जातंतु (तंत्रिकाएं) यह संदेश दिमाग तक पहुंचाते हैं। दिमाग संदेश को फिर आवाज में रूपांतरित करता है। अब दिमाग की खूबी यह होती है कि वह स्पष्ट करता है कि आवाज कान से नहीं, बल्कि दूर इंजन की सीटी से आ रही है।

इसके विपरीत कुछ मानसिक बीमारियों में आवाज के भ्रम निर्मित होते हैं। यह दिमाग का दोष होता है। प्रत्यक्ष आवाज आती ही नहीं है। कान में आवाज के भ्रम के शिकार व्यक्ति उस काल्पनिक आवाज का उत्तर देते हैं। मानसिक बीमारी के कारण उनमें यह भ्रम निर्मित होता है। उसे वे सच मानते हैं। प्रतिक्रिया के रूप में चिल्लाने, हाथों से इशारे करने, गालियां देने जैसे हावभाव दिखते हैं। प्रत्यक्षतः यह किसी को संबोधित नहीं होता। बीमार व्यक्ति का यह व्यवहार समाज की दृष्टि में निरर्थक होता है।

ऐसे आभासों के संदर्भ में समिति से एक प्रश्न हमेशा पूछा जाता है (भारतीय परंपरा ने भी उसे महत्व दिया है)। प्रश्न यह है कि अनेक साधु-महात्मा ईश्वर की अनुभूति का दावा करते हैं। निश्चय ही वे झूठ नहीं बोलते और न ही उन्हें मानसिक बीमारी होती है। ऐसी महान हस्तियों के अनुभवों का स्पष्टीकरण क्या है?

उत्तर के रूप में मानसिक आभासों के चार प्रकारों पर रोशनी डाली गई है :

(अ) प्रगाढ़ सम्मोहन

व्यक्ति स्वयं को दी गई सूचनाओं के द्वारा ही सम्मोह की अवस्था में चला जाता है। दूसरों के द्वारा प्राप्त सूचनाओं को स्वीकार करने पर वह परसम्मोह अवस्था में आ जाता है। इस अवस्था में इंद्रियां भ्रमित हो जाती हैं। सम्मोहन की गहरी अवस्था में पहुंचे व्यक्ति को 'चींटियां' काट रही हैं, ऐसी सूचना मिलने पर वह आभासी चींटियों को मारने लगता है। उसका कुलदेवता उसके सामने प्रकट हुआ है, यह जानने पर वह साष्टांग नमस्कार करने लगता है। करेले को चाकलेट समझकर खाने लगता है। कपास के सूखे चीथड़े को इत्र का चीथड़ा

समझ करउसे सूंघता है। इसमें कुछ भी रहस्य या अद्‌भुत बात नहीं है। मन सम्मोह की अवस्था में होता है, तब ऐसे भ्रम पैदा होते हैं। मन की तीव्र इच्छाओं के कारण भी व्यक्ति इस अवस्था में पहुंच सकता है। इसीलिए प्रियतमा की लगन में डूबा व्यक्ति उसे अपनी अमानत समझने लगता है। ईश्वरीय अनुभूति की सच्ची लगन वाला भक्त ईश्वर की अराधनाएं करने लगता है। उसे ईश्वर का आभास होना स्वाभाविक है। गुरु के प्रति श्रद्धा से ईश्वर-प्राप्ति की आस रखने वाले शिष्य को गुरु के आने की सूचना मिलने पर ही ईश्वर प्राप्ति का संतोष मिल जाता है। संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि मन की एक विशिष्ट अवस्था में होने वाली अनुभूति ही सम्मोह है।

(ब) नशीले पदार्थों का सेवन

शराब, चरस, अफीम, गांजा, ब्राउन-शुगर जैसे नशीले पदार्थो की आदत व्यक्ति को बहुत जल्द ही काबू में कर लेती है।। इसका एक कारण यह है कि नशीले पदार्थो के सेवन से अनेक भ्रम पैदा होते हैं उनकी चाहत बढ़ जाती है। इन अनुभवों को दोबारा प्राप्त करने के लिए नशा जरूरी हो जाता है। प्रसाद खाने पर भक्त को अपने अंदर अपनी 'आत्मा' का आभास होता है। पापी शरीर में रहने का दुख उसे होता है और वह कभी पाप न करने का निश्चय करता है। प्रसाद के सेवन से भक्त को आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त नहीं हुआ तो इसका मतलब है, उस प्रसाद में कुछ नशीले पदार्थ की मिलावट की संभावना हो सकती है, इसका पता लगाना चाहिए। भांग ऐसी ही अनुभूति देने वाला पदार्थ है, जिसे विशिष्ट प्रसंगों में हमारे यहां के लोग पीते या खाते हैं।

(स) पाखंड

अंनिस के आंदोलन में इस बात का हमेशा ध्यान रखा जाता है कि व्यक्ति जो दावा करता है, वह सम्मोह, परसम्मोह, नशीले पदार्थो के सेवन के कारण तो नहीं है? या फिर किसी मानसिक बीमारी का लक्षण तो नहीं? अगर नहीं तो फिर वह एक ढकोसला या ढोंग होता है। बाबा दावा करता है कि देवी के सामने बैठकर भक्त जब उससे प्रश्न पूछता है। तब देवी उन प्रश्नों के उत्तर उसके कानों में बताती है। फिर वह भक्त ओरों को सुनाता है। सीधे देवी की सलाह देने के बदले वह अच्छी-खासी रकम भक्तों से जमा करवाता है। ऐसे ढकोसलों के विरुद्ध समिति ने हमेशा ही आवाज उठाई है।

(द) गंभीर मानसिक बीमारी

जहां पर आभासों के कारण सम्मोह, ढोंग अथवा नशापान नहीं होते, वहां गंभीर मानसिक समस्या इसका कारण होती है। ऐसे आभासों पर मरीजों को पूरा विश्वास होता है। 'मैं बीमार हूं' अथवा 'मैं गलत हूं'-ऐसा मानने को वे कतई तैयार नहीं होते। सलाह देने वालों को भी वे अपना दुश्मन अथवा अज्ञानी जीव समझते हैं।

भ्रम भी एक गंभीर मानसिक बीमारी का लक्षण है। मरीज के मन में कुछ गलतफहमियां होती हैं। यह उसके विचारों का दोष होता है। ऐसी स्थिति में False usshakable belifs तैयार होते हैं। एक मरीज में एक अथवा अनेक भ्रम एक ही अवस्था में नजर आते हैं, जैसे-'कोई मुझ पर नजर रखता है, मुझ पर काला जादू करता है, वह मुझे मार डालेगा, मेरी पत्नी व्यभिचारी है, लोग मेरी चर्चा करते हैं, मुझ पर ताने कसते हैं, मेरे पास बहुत पैसा है, मैं बहुत बड़ी हस्ती हूं।'-ऐसे स्वरूप में ये भ्रम होते हैं। कुछ भ्रम असंभव स्तर के होते हैं, जैसे-मेरे दिमाग पर काबू कर उपग्रहों के द्वारा मेरी हलचल पर नियंत्रण रखा जा सकता है अथवा मेरा हृदय किसी ने निकाल दिया है और सीने में खाली जगह रह गई है, आदि।

गंभीर मानसिक बीमारियों के इलाज

उपर्युक्त आभास अथवा भ्रम के शिकार मरीज स्वयं अथवा उनके रिश्तेदार उनको लेकर अंनिस के पास आते हैं। उनकी ऐसी धारणा होती है। कि भूत-पिशाच की बाधा हो ही गई है, समिति के कार्यकर्ता इस क्षेत्र में काम करते हैं, इसीलिए वह इलाज करें। ऐसे इलाज के लिए जानकार लोगों की जरूरत होती है। ऐसी बीमारियों के इलाज के लिए आज अनेक दवाओं की खोज हुई है। ये उपलब्ध भी हैं। ये दवाएं पीड़ित व्यक्ति के दिमाग में हुए रासायकि परिवर्तन को सामान्य कर देती हैं। इन दवाओं के परिणाम तकरीबन 10-15 दिनों में नजर आते हैं। कुछ बीमारियों में दी हुई दवाओं का असर

नहीं होता, तब वे बदलकर दी जाती हैं। दवाओं की खुराक लंबे समय तक लेनी पड़ती है। रिश्तेदारों को मरीज के शीघ्र स्वस्थ होने की अपेक्षा होती है। तब वे डाक्टर और इलाज दोनों को बदलते हैं। भूतबाधा की कल्पना से मांत्रिक, भगतों की शरण ली जाती है, जो उचित नहीं है। बिजली के झटके और शॉक ट्रीटमेंट भी ऐसी बीमारियों में प्रभावी होते हैं, लेकिन इनके बारे में अंधविश्वास अधिक हैं। प्रायः लोग मानते है कि मरीज को शॉक उसका पागलपन हद से बढ़ जाने के कारण दिया जाता है, पर इसे लेकर समाज में गलतफहमी है। शॉक को बहुत भयावह इलाज पद्धति माना जाता है, जबकि वास्तव में बात ऐसी नहीं है। इस इलाज-प्रक्रिया में मरीज को 2-3 मिनट के लिए बेहोश किया जाता है। बेहोशी की दवा दी जाती है। मरीज को लगता है, उसे कोई इंजेक्शन दिया गया है। उसके बाद बिजली का हलका-सा झटका मरीज के दिमाग में पहुंचाया जाता है। उसे 10-15 सेकेंड की फिट आती है और कुछ समय बाद वह होश में आ जाता है। मरीज को कोई पीड़ा नहीं होती। दवाओं की तरह यह भी एक इलाज है और गंभीर बीमारियों में इसका इस्तेमाल किया जाता है। इस इलाज के पूर्व मरीज की शरीर की जांच की जाती है। इसीलिए इलाज के दौरान मरीज की मृत्यु की संभावना '2 से 3 लाख में एक' यानी कि 'न' के बराबर होती है।

मानसिक बीमारियों का इलाज सक्षम और विशेषज्ञ डाक्टरों से ही करवाया जाना चाहिए। इस संदर्भ में लोगों की गलतफहमियां दूर करना, उचित इलाज के लिए जनमानस को प्रेरित करना समिति का काम होता है। जिस माहौल में ऐसी बीमारियां होती है। उसे बदलने की जरूरत होती है। इन बीमारियों में कुछ बातों पर ध्यान रखना जरूरी होता है, जिनसे मरीज की दुर्दशा होती है। इलाज में थोड़ा वक्त लग सकता है, इसीलिए लोग उसे बाबा, भगत, मांत्रिकों के पास लेकर जाते हैं। वे लोग मरीजों का शोषण करते हैं। उनके विरुद्ध संघर्ष अथवा उचित इलाज में मरीज को सहयोग देना जरूरी होता है।

मरीज के इस विकार को उस पर लगा कलंक मानना एक विकृति है। उसे हीन दृष्टि से देखना गलत है। किसी भी बढ़ती हुई बीमारी के लिए मरीज को सहानुभूति देनी चाहिए। उसकी बेचारगी का चित्र बनाना मरीज के रिश्तेदारों को सुविधाजनक लगता है। ऐसे बुरे विचार आरंभ में बीमारी को नजरअंदाज करते हैं और उसके बढ़ जाने पर अंधविश्वासी कार्यवाही की जाती है। इसके संदर्भ में जनजागृति जरूरी है। समाज के सभी संवेदनशील घटकों को संगठित होकर प्रचार कार्य को हाथ में लेने का सामाजिक कर्तव्य निभाना चाहिए।

भगत-मांत्रिक-बाबा के पास जाने से क्या होता है?

मांत्रिक मनोरुग्ण पर दो पद्धतियों से इलाज करते हैं। वे मरीज की इस स्थिति के लिए उसके पूर्वजन्म, पूर्वकर्म, कुंडली, ग्रहदशा जैसी दैवी बातों को जिम्मेदार ठहराते हैं। व्रत रखना, तीर्थस्थानों की यात्रा करना, मंदिर-दरगाहों में जाना जैसे उपायों का सुझाव देते हैं।

दूसरी पद्धति में भगत अथवा बाबा स्वयं सम्मोह अवस्था में जाते हैं। अथवा मरीज को उस अवस्था में ले जाते हैं। किस पिशाच ने कौन से समय में क्यों बाधित किया है, इसका उस मरीज के मुंह से पता लगाया जाता है। फिर उस बाधा को दूर करने के लिए भूत को उतारा देना, मरीज को दागना, मारपीट करना जैसे दुष्कृत्य किए जाते हैं।

ये दोनों इलाज अंधविश्वास पर आधारित हैं। कभी-कभी भगत के इलाजों को सफलता मिलती है, जिससे लोगों में यह भ्रम बनता है कि मरीज को डाक्टर के पास लेकर जाने से वह ठीक नहीं होता है, लेकिन महाराज अथवा मांत्रिक के इलाज से वह ठीक हो जाता है, तो फिर क्यों न उनसे ही इलाज करवाया जाए?

संक्षेप में, बाबा-भगत के पास जो मनोरुग्ण लाए जाते हैं, उनके इलाज में निम्नलिखित वास्तविकता पर भी गौर करना चाहिए :

1. कुछ हलके या गंभीर मनोविकार भी कुछ समय में ठीक हो जाते हैं। उस दौर में मांत्रिक का इलाज शुरू हो तो ठीक होने का श्रेय उसे ही जाता है। वास्तव में बिना मांत्रिक अथवा डाक्टर के इलाज से उसका स्वस्थ होना तय होता है। शरीर

अथवा मन के सुरक्षा तंत्र के सक्रिय हो जाने के कारण कुछ समय के लिए मरीज ठीक हो जाता है। कुछ मरीजों में गंभीर मानसिक बीमारियां ज्वार-भाटे की तरह आती-जाती है।

2. बीमारी का कारण पूर्वजन्म, जन्मपत्री या कुंडली आदि को बताया जाता है, इसीलिए बीमारी होने का संत्रास कम हो जाता है। 'मेरी कोई गलती नहीं है, बाहरी कारणों से मैं बीमार हुआ हूं'-ऐसा विचार व्यक्ति के लिए आधार बनता है। इससे मरीज और रिश्तेदारों की 'कलंक लगने' की चिंता मिट जाती है।

3. मरीज को तथाकथित बाबा एवं भगतों का गुरुत्व प्राप्त होता है। ऐसे में वह आश्वस्ति महसूस करता है कि सक्षम गुरु की कृपा में उसका इलाज हो रहा है।

4. मानसोपचार विशेषज्ञ मरीज को सीमित वक्त देते हैं। वे मरीज के परिवार से सीमित संवाद करते हैं। उनके व्यवसायिक हिसाब और व्यवहार में रूखापन होता है। इसके विपरीत भगत और बाबा मरीज के लिए अधिक वक्त देते हैं। वे पूरे परिवार से संवाद करते हैं। उनकी बातें मरीज और उसके परिवार की श्रद्धा एवं परंपरागत भावजगत् के अनुरूप होती है। परिणामस्वरूप इलाज सफल होता है।

5. 'किसी दैवी शक्ति ने मेरी शिकायत सुनी है, मेरा इलाज किया है, मुझे आशीर्वाद दिया है'-जैसे विचारों से मरीज का आत्मविश्वास बढ़ जाता है।

6. यह इलाज-पद्धति किसी न किसी कर्मकांड से जुड़ी होती है। कर्मकांड पूरा होने पर प्रायश्चित पूरा होने की भावना निर्मित होती है। इसीलिए अपराधी होने की भावना दूर हो जाती है।

7. ऐसे इलाज जहां किए जाते है। उस स्थान पर एक वातावरण तैयार होता है। रामरक्षा का जप शुरू रहता है। दासबोध का पाठ होता रहता है। गुरुचरित्र का पाठ सुनाई देता है। एक छोटे कुंड में जमा हुई राख लोग बड़ी श्रद्धा से माथे पर लगाते हैं। आने वाले लोग उस स्थान और बाबा के बारे में बड़े आदर से बातें करते हैं। कुछ लोग अपने अनुभव बताते हैं। ऐसे माहौल में परंपरागत विचार के मरीज को मानसिक आधार मिलता है और उसके ठीक होने की संभावना बढ़ती है।

8. इस इलाज-पद्धति के दौरान अनेक लोगों पर देवी सवार होती है। तब दबी हुई भावनाओं का विकास होता है। इस क्रिया को कैथर्सिस अर्थात भावनात्मक विरेचन कहा जाता है।

9. कुछ स्थानों पर मरीजों का भूत उतारने के लिए उन्हें बहुत मारा-पीटा जाता है। कहा जाता है कि यह मारपीट मरीज के लिए नहीं, बल्कि उसके अंदर के भूत के लिए है। वास्तव में मन मारपीट से ऊब जाता है और जल्द संभलने लगता है।

अनेक कारणों से हलकी मानसिक बीमारी में अथवा मानसिक सदमें से अंधा होने, लकवा मार जाने जैसे शारीरिक लक्षण निर्मित होते हैं। कुछ मामलों में तथाकथित इलाज में सफलता भी मिलती है। उसकी व्यापक तौर पर धाक भी जमती है। बाबा को अपना धंधा चलाने के लिए ऐसे प्रचार करना जरूरी होती है। जिसका इलाज सफल होता है, उसे वह इलाज अद्‌भुत व दैवी लगता है। ऐसे व्यक्तियों के संदर्भ में जो सर्वेक्षण हुआ, उससे पता चला कि ऐसा इलाज करने वाले 20 प्रतिशत वैद्य स्वयं ही मनोरुग्ण होते हैं। 44 प्रतिशत लोग गुप्त रोग से पीड़ित होते हैं। 12 प्रतिशत लोग फरार अपराधी अथवा उस जैसे अन्य अपराधी होते हैं। इलाज से जिन लोगों को अच्छा लगता है, उनका वह आनंद कुछ क्षणों के लिए होता है। गलत इलाज के पीछे पड़कर उचित इलाज को नजरअंदाज करने से किसी भी समय बीमारी बढ़ने की संभावना होती है।

' **अनमोल विचार**

'अंधानुकरण करने वाले की अपनी कोई हस्ती नहीं होती।''

-बूसे

अंधविश्वासों के विरुद्ध प्रज्जवलित लौः नंदिनी जाधव

-राम स्वर्ण लखेवाली, मो. 9501006626

राष्ट्रीय तर्कशील लहर के नायक डा. नरेंद्र दाभोलकर के नेतृत्व में फली-फूली अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति महाराष्ट्र के पास अनेकों पूर्णकालिक कार्यकर्ता/नेता हैं, जो कि अंधविश्वासों के अंधेरे को मिटाने के लिए लगाता प्रकाश बिखेर रहे हैं। जिनके मन-मस्तिष्क में भ्रम-मुक्त, समानता वाले समाज का सपना है। वे अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए दिन रात निःस्वार्थ भावना के साथ लहर को आगे बढ़ा रहे हैं। रोशन दिमाग, बुलंद इरादों वाले ऐसे अनिस (अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति) नेताओं में से एक नंदिनी जाधव को तर्कशील पाठकों के रूबरू करने की खुशी ले रहे हैं।

...अदारा।-----

अज्ञानता के अंधकार को मिटाने वाले कठिन मार्ग पर चलने का हौसला?

मार्ग तो कोई भी आसान नहीं होता। बचपन से ही मेरी कुछ अलग, न्यारा एवं कठिन कार्य करने की चाहत रही है। बड़ी हुई, पढ़-लिख कर आगे बढ़ी। शिक्षा ने बहुत सा ज्ञान एवं खेलों ने साहस तथा कठिनाइयों के साथ मुकाबला करने की कला सिखलाई । मैं अपने कॉलेज में अध्ययन करते समय राष्ट्रीय वालीवाल का हिस्सा रही तथा जेवलिन में भी राष्ट्रीय खिलाड़ी बनी। डा. नरेन्द्र दाभोलकर की शहादत मेरी प्रेरणा स्रोत बनी तथा उनके गुजर जाने के पश्चात् समाज के लिए कुछ अच्छा करने का यह मार्ग चुना।

अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति में शामिल होने का कारण?

पुणे में मेरा स्वयं का ब्यूटीपार्लर का एक बड़ा केन्द्र था। अनेकों विद्यार्थी यह कार्य सीखने हेतु मेरे द्वारा चलाए जा रहे केन्द्र में आते थे। महाराष्ट्र के समाज में विधवा महिलाओं की जीवन स्थिति दयनीय है। साधारण परिस्थितियों में वे समाज में सम्मानपूर्वक ढंग से रह नहीं सकती। उनको घृणा की दृष्टि से देखा जाता है।

वे शादी-ब्याह में नहीं जा सकतीं। विधवाओं के जीवन में सुधार के लिए मैंने अपने केंद्र पर उनको प्रेरणा देकर मुफ्त सिखलाई देनी आरम्भ की ताकि वे यह कार्य सीख कर स्वयं कमाने के योग्य बन सकें। अनाथ घरों में मैं अपने केंद्र के शिक्षार्थी ले जाकर मुफ्त में उनके बाल कटवा कर आती। यह सुखद समाचार जब डा. नरेन्द्र दाभोलकर जी के पास पहुंचा तो उन्होंने मुझे अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति में कार्य करने के लिए कहा। मेरा पार्लर एवं सिखलाई सेंटर का विशाल कार्य था, जिस की एक लाख से अधिक की महीने की आय थी। मैंने डा. दाभोलकर जी को यह कह कर अपनी असमर्थता जताई कि मेरे पाास इतना वक्त नहीं है। मैं तो विधवाओं के स्व-रोजगार में ही सहायता कर सकती हूं।

निर्मूलन समिति में आपका दायित्व?

अंधश्रद्धा की समाप्ति एवं चेतना के प्रसार के लिए मैं समिति के सभी कार्यक्रमों में भाग लेती हूं। अनिस के सम्मेलनों, सिखलाई कैंपों में लेक्चर करने, चेतना प्रोग्राम करने, महिलाओं एवं लड़कियों की काऊंसलिंग करने, रोगों के बारे में जागरूक करने, तथाकथित बाबाओं के स्टिंग ऑप्रेशन करने, चेतना शो करने एवं पुलिस से ब्लैक मैजिक एक्ट के तहत अंधविश्वासों का धंधा करने वालों के विरूध करवाई करने में प्रमुख रोल अदा करती हूं। अब तक मैं 20 जिलों में जाकर अनिस के चेतना कार्यक्रम कर चुकी हूं। वर्तमान में मैं पुणे जिला की पूर्णकालिक संगठन प्रमुख के तौर पर कार्य कर रही हूं। वैसे मुख्य तौर पर मेरा कार्य महिलाओं एवं लड़कियों की समस्याओं पर कंद्रित है क्योंकि अंधश्रद्धा एवं सामाजिक असमानता का संताप महिलाओं को अधिक भोगना पड़ता है।

– महिला-कल्याण एवं चेतना के लिए आपके क्रियाकलाप ?

हमारे समाज में अंधश्रद्धा ने महिलाओं का जीना ही दूभर कर रखा है। अधिकतर ग्रामीण क्षेत्रों में बालों में जटाएं आ जाने पर महिलाओं का जीवन कष्टप्रद हो जाता हैं किसी महिला/लड़की के बालों में जटाएं आ जाएं तो अंधश्रद्धा के कारण यह माना जाता है कि यह 'भगवान' की हो गई है। फिर उनको बाबाओं, तांत्रिकों के पास ले जाया जाता है। जहां पर उनका शोषण होता है। ऐसी महिलाओं का जट-मूलन (जटाएं काट देने) करने के बजाए उनको धर्म एवं अंधविश्वास के जंजाल में फंसाया जाता है। जटाएं आ जाने पर अंधश्रद्धावश तांत्रिकों के पास जाने की घटनाएं समाज के सम्पन्न वर्ग जज, वकील, मैनेजर इत्यादि के घरों में भी घटित होती हैं। इस अवैज्ञानिक एवं महिला विरोधी रीति की समाप्ति के लिए अनिस हार्दिक यत्न जुटा रही है। हमें जब भी लोगों में जाने का अवसर मिलता है तब हम चेतना फैलाने का कोई मौका हाथ से जाने नहीं देते। वैसे भी पीड़ित महिलाओं/लड़कियों के परिवारों को प्रेरित करके उनका जट-मूलन करने की हर संभव कोशिश करते हैं। अब तक मैं अपनी टीम के साथ 115 से अधिक महिलाओं/लड़कियों को जटाओं से मुक्त कर चुकी हूं। पीड़ित महिलाओं/लड़कियों को जटाओं से मुक्त कर के परिवार एवं वहां पर उपस्थित स्नेहियों को अंधविश्वासों से बचने एवं अपने मिशन के साथ जुड़ने के लिए प्रेरित किया जाता है।

– जटा-मूलन का कार्य करते समय कठिनाइयां ?

यह कार्य ही कठिनाइयों से परिपूर्ण है। अनिस इसको चुनौती के रूप में लेती है। जटाओं से पीड़ित महिलाएं एवं परिवार इस अंधविश्वास का शिकार होते हैं कि जटाओं को कटवा देने से उनका नुकसान अवश्य ही हो कर रहेगा क्योंकि ये 'भगवान' की मर्जी से निकली हैं। इन से मुक्ति पूजा-पाठ के द्वारा ही मिल सकती है। हम उसकी 'अवज्ञा' कैसे कर सकते हैं? इसके साथ ही धर्मगुरुओं, तांत्रिकों एवं तथा कथित बाबाओं का मिथ्या प्रचार हमारे वैज्ञानिक चेतना के मार्ग में बहुत सी बाधाएं डालता है। यदि पीड़ित सदस्य जटाएं कटवाने के लिए मान भी जाए तो परिवार तैयार नहीं होता। उनके मन में यह डर समाया रहता है कि ऐसा करने पर कथित शक्तियों के 'कोपभाजन' का सामना करना पड़ेगा। घर के किसी सदस्य की मृत्यु हो सकती है। हम ऐसी निर्मूल धारणाओं के खात्मे के लिए अत्यंत यत्न जुटाते हैं। निर्मूलन समिति के कार्यकताओं एवं प्रशंसकों के सहयोग के कारण हमें इस कार्य में धीरे-धीरे परंतु विशाल सफलता मिल रही है। गांवों में अनिस के चेतना एवं सुधार के कार्यो से प्रभावित लोग हम से संपर्क करके ऐसे मामलों के बारे में जानकारी देते हैं। हम किसी न किसी प्रकार से संपर्क बना कर पीड़ित महिलाओं एवं परिवार तक संपर्क बनाते हैं। किसी भी गांव, शहर में ऐसा केस हल होने पर मीडिया में बात लेकर जाते हैं, जिसकी लोगों में चर्चा चलती है और हमारा कार्य आसान हो जाता है।

यह मुश्किल एवं निस्वार्थ कार्य करते हुए जब मैं किसी लड़की को जटाओं से मुक्त करती हूं तो उसके चेहरे पर आई मुस्कराहट मन का सकून बनती है। सोचती हूं, पार्लर सेंटर पर कमाए जाने वाले लाख-डेढ़ लाख रुपये का इस मुस्कराहट के समाने क्या मोल है? जिसमें एक ज़िंदगी की जीत की खुशी छुपी हुई है।

– जट-मूलन के किसी केस की गाथा?

जटाएं महिलाओं एवं लड़कियों के लिए संताप लेकर आती हैं। जटाएं आ जाने पर औरतों के सामाजिक जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ता है। जटाओं का बोझ उनके लिए ज़िंदगी का बोझ बन जाता है। जटाएं लड़कियों के भविष्य को अंधकार की ओर धकेलती हैं। प्रत्येक केस में बेबसी, मजबूरी, अज्ञानता, अंधश्रद्धा जीवन मार्ग में बाधा बन जाती है। एक गांव से किसी ने अपना नाम गुप्त रखने की शर्त पर बताया कि एक परिवार की 11 वर्षीया लड़की 'भगवान' की हो गई है। परिवार ने उसको स्कूल में भेजना बंद कर दिया है। आप उसकी अवश्य ही सहायता करें।

हमने बताये जाने वाले उस घर का संपर्क नंबर लिया। मैंने पीड़ित लड़की की मां के साथ फोन द्वारा संपर्क कायम किया। लगातार कई महीनों तक

लड़की को बचाने के लिए मां को समझाया। फिर उस से मिलकर भी अनेक बार प्रयत्न किए। अंत में एक वर्ष के बाद लड़की के परिवार को जट-मूलन के लिए सहमत किया। उस लड़की को जटाओं से मुक्त कर के परिवार में व्याप्त अंधविश्वास भी दूर किए तथा लड़की की बर्बाद हो रही ज़िंदगी बचाई।

-महाराष्ट्र विधान सभा में पारित हुए अंधविश्वास विरोधी बिल बारे ?

यह अत्यंत महत्वपूर्ण बिल है। जिस के बारे में हम पूरे प्रांत में अनिस द्वारा पुलिस की जानकारी हेतु सेमिनारों, लेक्चरों का प्रबंध करते हैं। पारित हुए कानून के बारे में पुलिस प्रशासन की जिम्मेदारी एवं कानून की ताकत के बारे में अवगत करवाते हैं। जब किसी तथाकथित बाबा द्वारा लोगों के किये गए शाोषण के बारे में खबर मिले तो उसके विरूद्ध इस एक्ट के तहत कारवाई के लिए पीड़ित लोगों के साथ खड़े होते हैं। कई बारे ऐसे मामलों में पुलिस सहयोग नहीं करती तो यह मुद्दा मीडिया में लेकर जाते हैं। हमारे प्रांत में बने अंधविश्वास विरोधी कानून को लागू करवाने के लिए हम अनिस की ओर से हर संभव यत्न जुटाते हैं।

- अन्य क्षेत्रों में आपकी पहल कदमी ?

अनिस के मिशन के लिए कार्य करते हुए मैं अन्याय को हरगिज़ सहन नहीं करती। अपना सारा गृह-कार्य समाप्त करके चलती हूं। लड़कियों के साथ दुर्व्यवहार करता हुआ कोई नज़र आ जाए तो उसे सबक सिखाती हूं। महिलाओं के प्रत्येक समारोह, समस्या में अवश्य पहुंचती हूं। मीडिया में अनिस का पक्ष ज़ोरदार ढंग से रखती हूं। यह सभी कुछ अनिस के नेताओं के उचित मार्गदर्शन में एवं घर परिवार के सहयोग के साथ संभव होता है।

-अपना निजी काम एवं निजी जीवन को त्याग कर निर्मूलन समिति में कार्य करने का उद्देश्य ?

महाराष्ट्र की भूमि से अंधविश्वास, अज्ञानता, असमानता एवं अंधश्रद्धा के साथ जुड़ी परम्पराओं को खत्म करने के लिए डा. नरेन्द्र दाभोलकर ने अपना बलिदान दिया है। उनके चले जाने के पश्चात् एक बहुत बड़ी कमी के चलते हुए भी अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति उसी दृढ़ता के साथ कार्य कर रही है। हमारे कार्य का घेरा और भी विशाल हुआ है। दूर-दराज के गांवों, शहरों तक अनिस की आवाज़ पहुंच रही है। मेरा अनिस के साथ जुड़ कर समाज के लिए काम करने का वही उद्देश्य है, जो कि डा. दाभोलकर जी ने अपने सम्पूर्ण जीवन में किया है। निजी खुशियों की अपेक्षा मिशन, उद्देश्य, समाज के लिए किया गया कार्य कहीं अधिक बड़ा है।

-हिन्दी अनुवादः बलवन्त सिं

स्व-घोषणाः
अनिस परिवार का संकल्प

अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति एक विशाल परिवार की भांति है, जिस की किरणों का प्रकाश महाराष्ट्र के युगपुरुषों की इस भूमि पर अंधविश्वासों, अज्ञानता, जहालत, असमानता एवं जाति-पांति का खात्मा करके एक ज्ञानवान, खुशहाल, समानता वाले समाज की स्थापना करना हमारा संकल्प है। स्कूलों, कालेजों, सेमिनारों, गांवों में भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में कार्य करते हुए हम अपने ध्येय को मन में बसा कर रखते हैं। स्कूलों, कालेजों में ज्ञान-विज्ञान का संदेश देने के लिए अनीस की वैन चलती है, विद्यार्थियों को रू-ब-रू होती है। विद्यार्थियों के मनों में उपजते प्रश्नों के उत्तर मिलते हैं, अध्यापकों के चिंतन को दिशा मिलती है।

गांवों, शहरों के चेतना समारोहों में जा कर अनिस कार्यकर्ता अपनी प्रकाशयुक्त वाणी के साथ वैज्ञानिक चेतना का प्रचार-प्रसार करते हैं। वे चमत्कारों की पोल खोलते हैं, तथाकथित बाबाओं के दंभ का पर्दाफाश करते हैं। सभी कार्यकर्ता समर्पण भावना के साथ कार्य करते हैं। सांगली से प्रकाशित मासिक पत्रिका 'वार्तापत्र' प्रत्येक वर्ग के लोगों के पास पहुंचता है। यह चेतना का संदेशवाहक है। रास्ते में आने वाली समस्त बाधाओं पर विजय प्राप्त करता हुआ अनिस का काफिला लगातार आगे बढ़ता चला जा रहा है। नौजवान, विद्यार्थी, अध्यापक, महिलाएं एवं सभी वर्गों के लोग हमारे काफिले का जीवनदृव्य हैं।

-नंदिनी जाधव

संताप के पल

डा.हरीश मल्होत्रा ब्रमिंघम
00447763013424

'विश्व में हर वर्ष लगभग 30 लाख नवजात बच्चे जन्म के पहले महीने में ही मर जाते हैं। परंतु इन में से अधिकतर बच्चों का जीवन बचाया जा सकता है। इन में से एक तिहाई बच्चे प्रथम दिन ही मर जाते हैं।' यह कथन 'बच्चों की रक्षा करो' नाम की एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था का है।

ब्रिटेन में वर्ष 2011 की इंग्लैंड की सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्था के अनुसार लंदन के 15 क्षेत्रों में मृत्यु की दर वायु के प्रदूषण के कारण वृद्धि हुई है। माना जाता है कि डीज़ल की कम खपत करने वाली गाड़ियों में से कार्बन डाईआक्साईड कम मात्रा में निकलती है जो कि वातावरण के लिए कम नुकसानदायक है। परंतु सत्य तो यह है कि उन क्षेत्रों में 91 प्रतिशत प्रदूषण इन्हीं डीज़ल की कारों से ही निकलता है।

विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार अनेक देशों में लोगों को पता ही नहीं है कि खाली पड़ी भूमि किस के नाम पर हैं परिणाम स्वरूप वहां पर कृषि नहीं हो रही और गरीबी बढ़ती चली जा रही है। जिसके कारण से बच्चों, बुजुर्गों, नवयुवकों एवं नवयुवतियों की मृत्यु हो रही है। पूरी पृथ्वी पर लगभग 100 करोड़ एकड़ भूमि बगैर जोतने के पड़ी हैं यद्यपि इस भूमि का आधा भाग अफ्रीका में है, फिर भी अफ्रीका से केवल 25 प्रतिशत उपज ही प्राप्त होती है। अफ्रीका महाद्वीप के बहुत से देशों में गृहयुद्ध होने के कारण बहुत से लोगों की मृत्यु हो रही है तथा भुखमरी बढ़ रही है।

बहुत से लोगों की मृत्यु कुदरती तौर पर किसी दुर्घटना अथवा बीमारी के कारण हो जाती है। अब यह कहना कि यह तो पहले से ही उस प्रकार से लिखा हुआ था, विज्ञान एवं तर्क की कसौटी पर यह बात उचित नहीं बैठती।

विश्व में बहुत से लोग ऐसे हैं जिनका किसी दैवी शक्ति में विश्वास नहीं है। तो फिर उनके जन्म-मरण का लेखा-जोखा कौन रखता है जैसा कि 2018 में किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार 16 से 29 वर्ष के 70 प्रतिशत से अधिक नौजवान ऐसे हैं जिनका ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं है। नार्वे, फिनलैंड, न्यूजीलैंड एवं चीन जैसे देशों में भीबहुत से लोग ईश्वर के अस्तित्वसे इनकार करते हें।

रूस की पब्लिक ओपीनियन फाऊंडेशन ने वर्ष 2013 में एक सर्वेक्षण करवाया, जिससे पता चला कि लगभग 52 प्रतिशत रूसी लोग स्वयं को आर्थोडक्स अर्थात् पक्के ईसाई मानते हैं परंतु सच्चाई यह है कि उन्होंने कभी भी बाईबल नहीं पढ़ी। साथ ही 28 प्रतिशत लोग मानते हैं कि उन्होंने कभी प्रार्थना भी नहीं की। जो भी जीव इस संसार मेंपैदा होता है, वह एक न एक दिन यहां से सदा के लिए चला जाता हैं यह एक प्रकृतिक घटनाक्रम है और अभी तक इस प्राकृतिक घटनाक्रम पर रोक नहीं लग सकी।

शीघ्र मृत्यु के कुछ कारणों में से राजनीतिक, सामाजिक माहौल, लड़ाई-झगड़े, राज्य व्यवस्था, वातावरण एवं जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति न होना जिस में रोटी, कपड़ा एवं मकान के अतिरिक्त शुद्ध पानी तथा स्वास्थ्य सेवाएं भी शामिल की जा सकती हैं। परंतु किसी की मृत्यु पर दुख तो अवश्य होता है। जाने वाले के निकट संबंधियों के लिए दुख को सहन करना अत्यंत मुश्किल हो जाता हैं जितनी भी निकटता अधिक हो, उतना ही अधिक दुख होता है। आज नहीं ताक कल जीवन में हर किसी को कोई न कोई दुख के क्षणों में से गुज़रना पड़ता हैं इस में वे लोग भी सम्मिलित हैं जिन के पास सभी कुछ उपलब्ध होता हैं विद्वानों का मत है कि तेज दौड़ने वाला हमेशा प्रथम दर्जे पर नहीं आता। बहादुर हमेशा ही युद्ध में विजयी नहीं होता। बुद्धिमान हमेशा रोटी नहीं कमाते तथा समझदार हमेशा ऊँचे पद पर नहीं पहुंचते। हर किसी पर कभी बुरा वक्त आता है।

इस लिए सवाल यह उठता है कि जब आप पर कठिन समय आ जाए तब उस का सामना किस प्रकार से कर पाआगे? उदाहरण के लिएः

★यदि आप किसी प्रकृतिक आपदा के दौरान अपना सभी कुछ गंवा बैठो?

★यदि आपको पता चले कि आपको कोई जानलेवा रोग है।

★यदि आपके किसी अति प्रिय की मृत्यु हो गई हो।

11 मार्च 2011 को जापान में 9.00 की तीव्रता वाला भूकम्प आया। इस ने 15000 लोगों की जीवन लीला समाप्त कर दी तथा 200 अरब अमेरिकी डालर का नुकसान हो गया। 32 वर्षीय केअ ने सुनामी के बार में पहले से ही चेतावनी सुनी हुई थी। जिस के कारण किसी ऊंचे स्थान पर जा कर उसकी जान बची। वह कहता है,'जब अगली प्रातः मैं अपनी वस्तुएं एकत्र करने के लिए घर वापिस आया तो पानी मेरा सभी कुछ बहा कर ले गया था। मेरे घर की केवल नींव ही दिखाई दे रही थी।

मुझे यह समझने में कुछ समय लगा कि मेरी केवल वस्तुएं ही नहीं अपितु मेरा सभी कुछ ही मेरे हाथ से यला गया था। मेरी कार, कंप्यूटर जो कि मैं अपने कार्य के लिए प्रयोग में लाता था; मेज, कुर्सियां, सोफा, की-बोर्ड, मेरी गिटार, बंसुरी, पेंटिंग का सारा सामान तथा तस्वीरें सभी कुछ तबाह हो गया।

विद्वानों का कथन है कि जो वस्तुएं आपके पास नहीं हैं उन पर ध्यान लगाने की बजाए, जो चीजें आप के पास हैं उन पर क ध्यान लगाओ। चाहे किसी व्यक्ति के पास जितनी मर्जी चीजें हों, परंतु उस का जीवन इन चीजों पर निर्भर नहीं करता।

जापानी केअ का कथन हैः 'पहले मैंने उन चीजों की सूची बनाई जिनकी मुझे आवश्यकता थी, परंतु ऐसा कर के मुझे अपनी तबाह हो चुकी चीजों की याद आई। फिर मैंने निर्णय लिया कि मैं केवल वही वस्तुएं सूची में शामिल करूंगा जिनकी वास्तव में मुझे आवश्यकता हैं जब मेरी आवश्कताएं पूर्ण हो जाती थीं तो मैं उन चीजों को सूची में से निकाल देता था । इस प्रकार करने पर मैं अपनी जिंदगी दोबारा आरम्भ कर सका।'

स्वयं के बारे में ही सोचने के बजाए दूसरों को अपने अनुभव द्वारा सांत्वना देना अच्छी बात है. ...बताते हैंः 'मुझे अपने दोस्तो एवं स्नेहियों से बहुत सहायता मिली। परंतु मुझे प्राप्त करने की आदत हो गई जिसके फलस्वरूप में अपनी ही नज़रों से गिर गया। परंतु फिर मुझे स्मरण हुआ कि प्राप्त करने से कुछ देने में अधिक प्रसन्नता हैं यद्यपि मैं आर्थिक रूप में किसी की अधिक सहायता नहीं कर सकता था, परंतु मैं प्रकृतिक आपदा के शिकार लोगों को संत्वना देने लग गया। दरिया-दिली दिखा कर मुझे बहुत सुकून मिला।

सुजाता अपने बेटे राजीव के साथ थी, जब उसकी एक सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। उस दुर्घटना में उसके मम्मी-पापा, दो भाइयों एवं मौसी की भी जान चली गई थी। वह बताती हैः 'मैं दो महीने अस्पताल में पड़ी रही और इन सभी मौतों के बारे में मुझे किसी ने नहीं बताया। पहले-पहल मुझे विश्वास ही नहीं हुआ कि वे इस दुनिया में नहीं रहे। यह सोच कर मेरे होश उड़ गये। मैंने स्वयं से कहा कि यह केसे हो सकता है? मैं शब्दों में ब्यान नहीं कर सकती कि मेरे लिए यह सदमा सहन करना कितना मुश्किल था। मैं प्रतिदिन बस यही सोचती थी कि उनके बगैर जीवन जीने का क्या अर्थ है। पता नहीं कितने महीने मैं खून के आंसू बहाती रही। मैं सोचती कि काश मैं स्वयं ही कार चला लेती तो शायद वे बच जाते। मैं स्वयं को दोषी मानने लगी थीं अब 16 वर्ष बीत चुके हैं और मैंने दोबारा से जीवन जीना सीखा है। परंतु दिल के किसी कोने में आज भी मुझे उन की कमी बहुत महसूस होती है।'

यह जरूरी है कि अपने दुख को दिल में दबा कर न रखें; क्योंकि रोना भी जरूरी है। सुजाता का कहना हैः 'जब भी मेरा मन रोने को करता था तो मैं रो लेती थी। अपने आंसुओं को दिल में दबाए रखने का कोई फायदा नहीं। रो कर मेरा मन हल्का हो जाता था।' यह सच हे कि सभी का शोक मनाने का ढंग भिन्न-2 भिन्न होता है। इसलिए यदि कोई सभी के सामने नहीं रोता तो इस का अर्थ यह नहीं कि उस ने अंदर ही अंदर अपना दुख दबाया हुआ है अथवा उसे जबरदस्ती औरों के सामने रोने का

दिखावा करना चाहिए।

दूसरों से दूर रहने से समस्या का हल नहीं होता। सुजाता बताती हैः 'मैं किसी से मिलना नहीं चाहती थी, परंतु मैंने बहुत कोशिश की कि मैं इस प्रकारन करू। जब भी कोई मुझे मिलने के लिए आता था तो मुझे बहुत अच्छा लगता था।'

कुछ लोगों की चुभने वाली बातों का गुस्सा न करो। शायद कुछ लोग कह दें, 'चलो जो होना था हो गया', यह कहना तो आसान है परंतु इसे मानना अत्यंत कठिन है। साथ ही कई लोगों को समझ ही इतनी सी होती है कि उनको बात करने का पता नहीं होता। इसमें कोई संदेह नहीं, चुभने वाली बातें सुन कर किसी को ढांढस मिलने की बजाए दिल दुखी होता है। परंतु प्रत्येक की कही गई बत को हम मानें भी क्यो ? यद्यपि ऐसा करना है तो कठिन, परंतु यदि हम उन द्वारा कही गई बातों को अपने मन पर लाग लेंगे तो हम और अधिक दुखी होंगे।

दामी की आयु छह वर्ष थी, जब उसके पापा की मृत्यु दिमाग की नस फटने के कारण हो गई थी। देविन्द्र जब नौ वर्ष का था, तब उसके पिता की मृत्यु दिल की बीमारी लगने से हो गई थी। जसवीर छह वर्ष की थी जब उस की मम्मी के गर्भाश्य में कैंसर हो गया और मात्र एक वर्ष के पश्चात् वह सदा के लिए साथ छोड़ गई। उन तीनों को अल्पायु में ही अपने प्रिय की मृत्यु का के दुःख को झेलना करना पड़ा।

हमें पता है कि हर कोई अलग-अलग ढंग से शोक मनाता हैं इससे तात्पर्य यह है कि आप जिस ढंग से शोक मनाते हो वह ढंग शायद अन्य लोगों से भिन्न हो। मृत्यु का गम सहन करने के कोई नियम नहीं हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि आप अपने गम को अंदर ही अंदर मत छुपाओ, क्योंकि गम को अंदर छुपाने से नुकसान ही होता है। जेनी बताती है,'मैं सोचती थी कि मुझे अपनी छोटी बहन के कारण हौसला रखना पड़ेगा। इस कारण से मैंने अपनी भावनाएं अंदर ही अंदर दफ़न कर लीं। यद्यपि मुझे पता है कि ऐसा करना स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है, परंतु मैं आज भी अपनी भावनाएं अंदर ही छुपा लेती हूं।'

विशेषज्ञ इस बात से सहमत हैं कि जिन भावनाओं को छुपा लिया जाता है, वे हमेशा छुपी नहीं रहतीं, बल्कि जब आपने सोचा भी नहीं होता, यह गुबार निकल जाता है अथवा कोई रोग लग जाता है। कई लोग गम को छुपाने के लिए शराब पीना अथवा नशा करना शुरू कर देते हैं कि वे इस प्रकार से दुख को भुला देंगे। परंतु इस प्रकार करने से वे अपना स्वास्थ्य खराब कर सकते हैं।

गम के चलते शायद भावनाओं पर नियंत्रण रखना कठिन हो। उदाहरण के लिए कुछ लोग मर चुके व्यक्ति के साथ गुस्सा होते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि वह व्यक्ति उन को 'छोड़ कर' चला गया है। कई लोग 'ईश्वर' पर दोष लगाते हैं तथा सोचते हें कि 'ईश्वर' उस पर मृत्यु न आने देता। बहुत से लोगों में दोषी भावनाएं आ जाती हैं, क्योंकि उन्होंने मर चुके व्यक्ति को कुछ गलत कहा था अथवा उसके साथ कुछ बुरा किया था तथा अब वे उस मर चुके व्यक्ति से क्षमा नहीं मांग सकते।

अतः यह निश्चित है कि गम में से उभर सकना कोई आसान बात नहीं। परंतु आप गम को किस प्रकार से कम कर सकते हैं तथा अपने जीवन में आगे कैसे बढ़ सकते हैं? देखने में आया है कि डायरी लिखना गम को भुलाने में मददगार हो सकता है। अपने बिछुड़ चुके मां-बाप के बारे में लिखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, आपको उनकी कौन सी बात सब से अधिक याद आती है? उनके गुणों के बारे में लिखा जा सकता है। यह भी देखो कि आप उनके कौन से गुणाों का अनुकरण करना चाहोगे? खास करके तब, जब आपके मन में निराशाजनक विचार आते हों। यदि आप यह भी सोचते जाओगे कि आपने अपने मम्मी अथवा पापा के गुज़र जाने से पूर्व उनके साथ रूखा व्यवहार किया था तो लिखो कि आप क्या महसूस करते हो और क्यों? उदाहरण स्वरूप, 'मुझे बहुत बुरा लग रहा है क्योंकि मैं अपने पापा के गुजर जाने से एक दिन पूर्व उनसे फालतू की बहस की थी।'

हद से ज्यादा दोषी महसूस करना अच्छी बात नहीं। आप इस कारण से स्वयं को दोषी मत ठहराओ कि आप को पता नहीं था कि आपको क्षमा याचना करने का कभी अवसर नहीं मिलेगा। यह

बात याद रखने वाली है कि कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है कि जिसे अपनी कथनी या करनी के चलते कभी क्षमा याचना न करनी पड़े।

इन परिस्थितियों में अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है। भली प्रकार से आराम करना, व्यायाम करना एवं पौष्टिक भोजन अच्छे स्वास्थ्य के लिए लाभदायक हैं यदि आप का रोटी खानेको मन नहीं करता, तो पूरा दिन कुछ-न-कुछ हल्का-फुल्का खाते रहो। तब तक ऐसा करते रहो जब तक आपको भली प्रकार से भूख नहीं लगने लग जाती। अपने गम को भुलाने के लिए न तो जंक फूड खाना चाहिए और न ही शराब एवं ड्रग्स का सेवन करना चाहिए।

मनिंदर बताती है, 'कुछ वर्ष पूर्व दो बच्चों की एक मां की कैंसर के साथ मृत्यु हो गई, हम उन के परिचित थे। उनकी आयु छह और तीन वर्ष की थी जब 17 वर्ष पूर्व हमारे डैडी की मृत्यु हुई थी, तब मेरी और मेरी बहन की आयु इतनी सी ही थी। मैं मेरी मम्मी, मेरी छोटी बहन एवं भाई ने उनकी सहायता की। हम उनको अपने घर में बुलाते थे। जब भी वे बात करना चाहते तो हम उनकी बात को सुनते थे। हम उनके साथ समय व्यतीत करते थे, हम उनके साथ बातचीत करते एवं खेलते भी थे। जब वे किसी मामले में सलाह मांगते हम उनसे सलाह-मशवरा भी करते थे।'

'मां-बाप के गुज़र जाने का दुख असह्य होता है और इसे कभी भी भूला नहीं जा सकता। समय बीत जाने के साथ दुख सहना आसान हो जाता है, परंतु इसे भुलाया नहीं जा सकता। मुझे पता था कि यह परिवार किन परिस्थितियों में से गुज़र रहा हैं इस कारण मुझे खुशी है कि हमारे परिवार ने उनकी सहायता की। ऐसा करने से हमारा उनके साथ आपसी रिश्ता भी मजबूत बना।'

दामी का कथन है, 'पहले पहल लगता था कि डैडी के सिर में बस दर्द ही होता हैं परंतु मम्मी जी ने अम्बुलैंस बुलाई। मुझे अब भी याद है कि जब एम्बुलैंस वाले डैडी जी को अस्पताल में ले गए। मुझे पता ही नहीं था कि मैं अंतिम बार डैडी जी को देख रही थी। तीन दिन पश्चात् मेरे डैडी जी की मृत्यु दिमाग की नस फट जाने के कारण हो गई। मैं उस समय केवल छह वर्ष की थी।'

'कई वर्ष तक मैं स्वयं को डैडी जी की मृत्यु का दोषी मानती रही। मुझे स्मरण आता था कि एम्बुलैंस वाले डैडी जी को कैसे अस्पताल में ले गए थे। मैं स्वयं से पूछती थी ,'मैं क्यों खड़ी देखती रही ? मैंने कुछ किया क्यों नहीं ? मैं बीमार वृद्धों को देखती और सोचती थी कि ये क्यों जीवित हैं और मेरे डैडी जी क्यों मर गए ?' समय के बीतने पर मेरी मम्मी ने मेरी मदद की कि मैं उनको अपनी भावनाएं बता सकूं। हमें अपने दोस्तों एवं स्नेहियों से भी सहारा मिला।'

'कुछ लोग सोचते हैं कि आप उसी समय शोक मना कर गम के दायरे से बाहर आ सकते हैं। परंतु मेरे साथ ऐसा नहीं हुआ। मैंने 13-14 वर्ष की आयु तक शोक नहीं किया। जिन नवयुवक व नवयुवतियों के मां अथवा बाप गुज़र गए हों, उनके लिए मेरा परामर्श यही है कि, 'वे कि वे किसी को बताएं कि उनके साथ क्या बीत रही है। आप जितना जल्दी अपने दिल की बात किसी से साझा करोगे, आपके स्वास्थ्य के लिए उतना ही अच्छा रहेगा।'

'मेरे जीवन में जब भी कोई विशेष अवसर आता है,तो मुझे उस समय बहुत दुख लगता है कि उस समय मेरे डैडी मेरे साथ क्यों नहीं होते।'

देवन्द्रि बताता है, डैडी के साथ मेरी बहुत सी मीठी स्मृतियां जुड़ी हुई है। मैं अपने डैडी के साथ पहाड़ों पर चढ़ने के लिए जाया करता था। मेरे डैडी को पहाड़ अत्यंत पसंद थे।

मेरे डैडी दिल के मरीज थे। मुझे याद है कि मैं बचपन में अपने डैडी जी के साथ एक दो बार अस्पताल में गया था। परंतु उस समय मुझे पता नहीं था कि उनकी बीमारी इतनी गंभीर हैं मैं नौ वर्ष का था। जब मेरे डैडी गुज़र गए।

उनकी मृत्यु के पश्चात् मैं बहुत रोया। मुझे ऐसा लगा जैसे कि मेरा दम घुट रहा हो और मैं किसी के साथ भी बात नहीं करना चाहता था। मैंने अपने पूरे जीवन में ऐसे महसूस नहीं किया था तथा मेरा कुछ भी करने को मन नहीं कर रहा था। मेरे

कुछ मित्रों ने पहले-पहल तो कुछ दिल चस्पी दिखाई परंतु बाद में वे मुझे कभी न मिले। कुछ लोग इस प्रकार की बातें करते थे-'तेरे डैडी के जाने की बारी थी अथवा 'भगवान ने उसे अपने पास बुला लिया' अथवा 'वे अब स्वर्ग लोक में हैं।' इस प्रकार की बातों ने मुझे कभी सांत्वना नहीं दी। मुझे केवल इस बात से सांत्वना मिली कि दुनिया में मैं ही अकेला नहीं हूं जिसने अपने डैडी को सदा के लिए खो दिया हो। कुछ हमदर्द दोस्तों एवं सहृदय मित्रों ने भी सदा हमारा साथ निभाया।

जसवीर का कहना है, 'जब मैं सात वर्ष की थी, उस समय मेरी मम्मी की कैंसर के कारण मृत्यु हो गई। मुझे इस बात पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। मुझे याद है कि उनकी मृत्यु घर पर ही हुई थी तथा उस समय मेरे नाना-नानी भी वहीं पर थे। मुझे यह भी याद है कि सभी एकदम से शांत थे। मुझे लगा कि मेरा पूरा जीवन धीरे-धीरे बदल रहा था।

उस समय में तथा कई सालों के बाद भी मैं सोचती थी कि मुझे अपनी छोटी बहन के कारण हिम्मत रखने की जरूरत थी। इस कारण मैंने अपनी भावनाओं को अंदर ही छुपा लिया। मैं आज तक भी अपनी दुखदायी भावनाओं को अंदर ही दबा लेती हूं। मुझे पता है कि ऐसा करने से स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

मुझे याद है, उस समय मैं अपनी भावनाओं को एक छोटी सी कापी में लिखती रही थी। इस बातने मुझे काफी हौसला दिया। मैं अक्सर अपनी बहन एवं सहेलियों के साथ अपनी मम्मी के बारे में बातें करती रहती थी और हमारे डैडी जी ने भी हमें बेहद स्नेह दिया था। वे भी हमारे साथ हमारी मम्मी की अच्छी-अच्छी बातें हमारे साथ करते रहते थे। । इससे यह बात मेरे मन में बस गई कि मैं भी मम्मी जी की भांति अच्छी आदतें एवं गुण अपने में पैदा करूंगी। इन बातों ने मुझे जीने की शक्ति दी कि मैं अपने मां-बाप का नाम रोशन करूंगी। मैं अपना मन पढ़ाई में लगा कर स्वंय को व्यस्त रखने लग गई थी तथा घर का सारा काम भी मैं ही संभाल रही थी। मेरे डैडी व मेरी बहन भी मेरी मदद करते थे। मैं महसूस करती हूं कि यदि आज मेरे मम्मी जी जीवित होते तो डैडी जी की भांति, वे भी मुझ पर गर्व महसूस करते।'

-हिंदी अनुवादः बलवंत सिंह

नींद में जब ऐसी स्थिति आती है

कभी-कभी सोते हुए अचानक आपकी नींद खुलती है और आपको लगता है कोई आपके ऊपर बैठा है। आप देख तो सब रहे होते हो पर हिलडुल नही पाते, बोल नही पाते, कुछ सेकंड के लिए ऐसी स्थिति से बहुत सारे लोग गुजरे होंगे। इसे स्लीप पैरालिसिस कहते है,

धर्म :-भूत प्रेत का साया है, नज़र लगी है, अपशगुन होगा

धार्मिक उपाय - पूजा पाठ, दान दक्षिणा, कथा भागवत (जैसे लूट सके)

वैज्ञानिक रहस्यः हमारा मस्तिष्क हमारी खुद की भलाई के लिए हमारे शरीर को पेरालाईस (अपंग) कर देता है, इसलिए जब हम सोते समय सपने में किसी का पीछा कर रहे होते हैं या चलते हैं तो हमारे पैर आगे नहीं बढ़ते ! स्लीप पैरालिसिस की स्थिति में हमारा मस्तिष्क जाग जाता है लेकिन शरीर सोया रहता है इसलिए हम खुद तो जाग जाते हैं पर हिल नहीं पाते, बोल नहीं पाते।

ये तब होता है जब शरीर नींद की प्रक्रिया के साथ सामंजस्य नहीं बैठा पा रहा है। इसके कई सारे कारण हैंः

★- अनुवांशिक कारण
★-नींद पूरी न हो पाती हो
★-नींद का रूटीन गड़बड़ हो
★-बा पोलर डिसआर्डर समस्याओं
★-स्लीप डिस्आर्डर्स से गुज़र रहा हो
★-किसी मानसिक स्थिति के लिए दवाइयां ले रहे हो
★ सीने में हाथ रख कर सोने से।

ये कोई घातक बीमारी नहीं। सबके साथ हो जाता है, पर बार-बार ऐसा होने पर अगर नास्तिक है तो डॉक्टर से मिलें।

-साभार

स्वतंत्र चिंतन

प्रगति

-कर्नल इंगरसोल

भाषाएंः

यह दिखाने के लिए कि उनके ज्ञान अथवा अज्ञान को अत्यंत बेहूदा मिथ्या-विश्वासों ने दबा रखा था। मैं आपको उनके कुछ भाषाओं संबंधी विचारों से परिचित करना चाहता हूं। सभी का यह विश्वास था कि सभी भाषाओं का मूल स्रोत हिब्रू में है, अर्थात्, हिब्रू ही मूल-भाषा है। कोई भी बात जो इस मान्यता के प्रतिकूल पड़ती, त्याज्य थी। इस विश्वास के रहते भाषा-विज्ञान संबंधी खोज के सभी प्रयत्न निष्फल थे। कुछ समय के बाद जब हिब्रू विचार ठंडा पड़ गया, तो दूसरी भाषाएं अपने-अपने अधिकार की बात लेकर क्षेत्र में आई।

आन्द्रे कोम्पे ने सन् 1569 में स्वर्ग की भाषा के संबंध में एक ग्रंथ प्रकाशित किया। उसमें उसने लिखा कि परमात्मा ने जब आदम से बातचीत की, तो वह स्वीडन की भाषा थी और आदम ने डेनमार्क की भाषा में उसका उत्तर दिया। एसेने मैड्रिड ने एक पुस्तक प्रकाशित की, जिसमें लिखा है कि आदम के उद्यान में बास्क (?) भाषा बोली गई थी। 1580 में गोरोपियस्न एंटवर्पसे ने अपना प्रसिद्ध ग्रंथ प्रकाशित किया। उसने यह लिखकर कि वह भाषा हालैण्ड की डच भाषा थी, इस विवाद को कुछ शांत किया। वर्तमान भाषा-विज्ञान का सच्चा संस्थापक जर्मनी का लाइबनिज था-सर आइजक न्यूटन का समकालीन। उसने सभी भाषाओं की एक ही भाषा से निकलने की बात को छोड़ दिया और यह स्वीकार किया कि भाषाओं का एक अपना स्वाभाविक विकास होता है। वास्तविक अनुभव ने हमें सिखाया है कि यही बात सत्य है। संज्ञाओं को छोड़कर, प्राचीन मिश्र के लोगों की शब्द-संख्या कुल छह सौ पचासी थी। अंग्रेजी-भाषा में कम से कम एक लाख शब्द होंगे।

भू-वृत्त

छठी शताबदी में कॉस्मस नाम के एक ईसाई साधु ने भूगोल और ज्योतिष को मिला-जुलाकर एक पुस्तक लिखी। उसका दावा था कि यह सब बाइबल के अनुसार है। उसके अनुसार यह संसार एक गोल किंतु चपटी भूमि है। इस चपटी भूमि के टुकड़े के चारों ओर पानी ही पानी है। यही समुद्र है। पानी की इस धरती के बाद फिर एक स्थल का घेरा है। उसका विश्वास था कि बाढ़ के आगमन से पहले का सारा प्राचीन संसार इसी बाह्य-पृथ्वी पर रहता था। नूह ने ही पानी की धारी पार की और इस केंद्रीय-स्थल पर जहां हम सब इस समय हैं, वह आ पहुंचे। बाह्य-पृथ्वी पर एक ऊंचा पर्वत है, जिसके चारों और सूर्य और चंद्रमा घूमते हैं। जब सूर्य उस पर्वत की पीछे रहता है तो रात हो जाती है और जब हमारे सामने की ओर, तो दिन होता है। उसने यह भी बताया कि बाह्य आकाश एक उल्टे बरतन की तरह उलटा रखा हुआ है और वह बाह्य-पृथ्वी के बाहर के किनारों के साथ बंधा हुआ है और यह घोषणा की गई थी कि जो कोई उस पुस्तक में लिखे से कम या अधिक मानेगा, वह नास्तिक समझा जाएगा। जब तक कोलम्बस ने अमेरिका का पता नहीं लगाया, तब तक यही एक पुस्तक प्रमाण मानी जाती थी। मैं आपको यह निश्चित करा देना चाहता हूं कि हर गलती एक प्रकार का जहरीला-सांप है और जो भी कोई उसे अपने हृदय में स्थान देगा, वह उसे कभी न कभी अपने जहरीले फन का डंक मारेगा ही।

तुम पूछोगे कि इधर इन सौ वर्षो में ही यह अद्भुत परिवर्तन कैसे हो गया? तुम्हें याद होगा कि उन दिनों यह कहा जाता था कि सूर्योदय होने पर तमाम भूत-प्रेत भाग जाते हैं। 1444 में प्रेस का आविष्कार हुआ। अगली ही शताब्दी में प्रेस एक शक्ति बन गया। तब से आज तक यह संसार में प्रकाश की किरणें फैला रहा है।

जब लोग पढ़ते हैं तो वे तर्क करते हैं। जब तर्क करते हैं तो प्रगति करते हैं। तुम्हें यह नहीं समझना चाहिए कि प्रगति के शत्रुओं ने लोगों को जब तक वे रोक सके, तब तक पुस्तकें प्रकाशित करने और पढ़ने से नहीं रोका। मजहब और सरकार की सारी शक्ति अज्ञान के पक्ष में थी। जिस किसी के पास कोई पुस्तक दिखाई दे जाती, उसकी प्रायः हत्या ही कर दी जाती थी। पुस्तक छापना, पुस्तक पढ़ना, पुस्तक लिखना सभी अपराध थे। यह प्रकाश के विरुद्ध अंधकार की, स्वतंत्रता के विरुद्ध गुलामी की, तर्क के विरुद्ध मिथ्या-विश्वास की लड़ाई थी। किंतु पादरी-पुरोहितों के बावजूद, राजाओं के बावजूद, वेदिकाओं के बावजूद, सिंहासनों के बावजूद पुस्तकें प्रकाशित हुईं और पुस्तकें पढ़ी गईं। प्रकाश की एक-एक किरण अंधकार को बीधने लगी। स्वतंत्रता का उदय हो गया। अंतिम-पराजय के भय ने पगलाए हुए प्रकाश के शत्रु क्रुद्ध होकर दूना अत्याचार करने लगे।

पृथ्वी गोल है, यह कहने के लिए लोगों को मार दिया गया। सूर्य नक्षत्रों में एक मध्य नक्षत्र है, कहने पर लोगों को जला दिया गया। एक स्त्री की इसलिए हत्या कर दी गई कि वह जाकर किसी ज्वर-ग्रस्त रोगी के ज्वर की पीड़ा को कम करना चाहती थी। विचारक शब्द ही दण्डनीय बन गया। मामूली से मामूली अपराध पर मृत्यु-दण्ड दे दिया जाता था। सोलहवीं शताब्दी के आरंभ में प्रेग के लूथर और जेरोम ने जर्मनी में महान सुधार की लहर उठाई, हंगरी में जिस्काने और स्विटजरलैंड में ज्विग ल्यूने। डैनमार्क, स्वीडन और इंग्लैंड में यह महान कार्य प्रगति-पथ पर था। यह सब 1534 में ही हो गया। उन्होंने भ्रष्टाचारी की पोल खोली और मजहब के अत्याचारों का मुकाबला किया।

उत्साह के साथ, बहादुरी के साथ, शक्ति के साथ, निश्चय के साथ, दृढ़ता के साथ सुधारकों की इस पुनीत मंडली ने आक्रमण किया। एक दुर्ग के बाद दूसरा दुर्ग विजय किया गया और थोड़े से किंतु भयानक वर्षों में सुधार की पताका संत पीटचर की रक्तरंजित पताका के स्थान पर फहराने लगी। हजार वर्ष से सोई हुई चेतना जाग उठी। दास तर्क करना आरंभ करते हैं, तभी दास्ता मरती है। बारूद के आविष्कार ने लाखों-करोड़ों आदमियों को सेनाओं से मुक्त कर दिया और वे शांति की कलाओं के विकास में लग गए, उद्योग-धंधों से अधिक आय होने लगी और वे सम्माननीय भी हो गए। विज्ञान ने अपने पर खोलने आरंभ किए जो अंत में मनुष्य को स्वर्ग ले जा सकते हैं। दैस्कार्ट ने इस अनुपम सिद्धांत की घोषणा की कि संसार नियम से शासित है।

व्यापार ने भी अपने पर खोलने आरंभ किए। भिन्न-भिन्न देशों के लोग परस्पर सम्पर्क में आने लगे। ईसाई यह बात समझने लगे कि मुसलमानों का सिद्धांत भिन्न होने के कारण उनका स्वर्ण कम मूल्यवान नहीं है। दूर-वीक्षण यंत्र का मुंह सितारों की ओर कर दिया गया। वि व का आकार बढ़ने लगा, प थ्वी छोटी लगने लगी। यह समझ में आने लगा कि आदमी के स्वस्थ रहने के लिए यह आव यक नहीं है कि वह कैथोलिक-धर्म का अनुयायी हो। अंधकार को दूर भगाने के अनेक साधन अस्तित्व में आ गए। अनैतिकता परित्यक्त होने लगी और आदमी ने भौतिक प्रश्नों की भौतिक व्याख्या आरंभ की और दूसरे आवि कार भी शीघ्र ही पीछे-पीछे आए। वाट और फुल्टन ने संसार को भाप की शक्ति का अद्भुत आविष्कार दिया। स्टीफन्सन ने रेल का इंजन दिया और फ्रेंकलिन तथा मोर्स ने तार भेजने का आविष्कार। जहाज की द्रुत-गति ने, रेल के इंजन की चीखने और बिजली के प्रकाश ने अज्ञानरूपी सभी भूत-प्रेतों को भगा दिया। सच्चा धर्म अपने मनोवेगों को बुद्धि के अधीन करने में है, लेकिन जब धर्म सुख-प्राप्ति का एक साधन न समझा जाकर अपने में स्वयं एक साध्य ही समझा जाने लगा, तो वह बन गया मानवता का हत्यारा। वह एक हजार सिर वाला भयानक सर्प बन गया-एक ऐसा सांप जो स्वर्ग से कुंडली मारता हुआ नीचे की ओर बढ़ता है और अपने हजारों जहरीले दांत आदमियों के रक्त-रंजित, कांपते हुए हृदयों में घुसेड़ देता है।

दासताः

अभी तक मैंने जो कुछ कहा, उसका उद्देश्य यही रहा है कि आप यह देख सकें कि आदमी के दिमाग को गुलाम बनाने के क्या दुष्परिणाम हुए हैं। मैं अब आपका ध्यान इसी विषय के एक दूसरे भयानक पहलू की ओर आकर्षित करना चाहता हूं –शरीर की दासता की ओर। दास-प्रथा एक बड़ी प्राचीन प्रथा है, उतनी ही प्राचीन, जितनी प्राचीन डकैती, चोरी और हत्या है और ये ही सब इसके आधार हैं।

जिस स्रोत से इस सिद्धांत ने जन्म लिया है कि आदमी अपनी आत्मा का स्वामी नहीं है, उसी स्रोत से इस सिद्धांत ने भी जन्म लिया है कि आदमी अपने शरीर का मालिक नहीं है। दोनों सिद्धांत प्रायः साथ-साथ चलते हैं। दोनों का आधार लगभग वे ही तर्क हैं। दोनों के साथ पापी-अत्याचार समान रूप से जुड़ा हुआ है। प्राचीनतम समय से अभी कल तक सभी देशों में और सभी प्रकार के लोगों में दास-प्रथा रही है। पूफैण्डोर्क नामक विद्वान का कथन है कि आरंभ में दास-प्रथा दो पार्टियों के बीच हुए एक समझौते का परिणाम थी। वाल्टेयर ने उत्तर दिया कि मुझे वह मूल कागज दिखाओ, जिस पर गुला बनने वालों के भी हस्ताक्षर हों, तो मैं तुम्हारी बात मान लूं। आप इस बात को ध्यान में रखेंगे कि जिस दासता की, मैं इस समय चर्चा करने जा रहा हूं, वह श्वेत-दासता है।

यूनान के लोग जिन्हें युद्ध में पकड़ पाते, उन्हें भी दास बनाते थे और आपस में एक-दूसरे को भी। जूलियस सीजर ने सबसे अधिक बोली बोलने वालों को तिरपेन हजार युद्ध-बंदी नीलाम किए। ये सभी श्वेत थे। हैनिवाल ने एक समय तीस हजार बंदियों की बिक्री की। ये सभी रोमन नागरिक थे। रोम में अपना कर्ज चुकाने के लिए आदमी दास हो जाते थे। जर्मनी में प्रायः लोग अपनी स्वतंत्रता को जुआ खेलते समय दांव पर भी लगा देते थे। बारबरी रियासतों में इस उन्नीसवीं शताब्दी में भी श्वेत ईसाई दास थे। 1574 तक इंग्लैंड में भी श्वेत दास थे। अठारहवीं शताब्दी के अंत तक स्काटलैंड में श्वेत दास थे।

ये स्काटलैंड के दास कोयले और नमक की खानों में काम करने वाले थे। जिस समय एक खान किसी एक मालिक से दूसरे मालिक के पास जाती थी, उस समय ये दास भी बिक्री-पत्र के अनुसार विधिवत बिक जाते थे।

नियम यह भी था कि कोई खान में काम करने वाला जिस खान का वह होता था, उसे छोड़ किसी दूसरी खान में काम नहीं कर सकता था। नियम यह भी था कि उनकी संतान भी माता-पिता का पेशा छोड़कर कोई दूसरा पेश नहीं कर सकती थी। स्काटलैंड में यह दासता शानदार उन्नीसवीं के सदी के आरंभ तक रही।

कुछ रोम के सरदार बीस-बीस हजार दासों के मालिक थे। फ्रांस के सामान्य-जन चौदह सौ वर्ष तक दास रहे। वे जमीन के साथ बिक जाते थे और बहुधा स्त्रियों को पशुओं के साथ मिलकर हल में जुतना पड़ता था। यह सब होने पर भी कुछ लोग निर्लज्जतापूर्वक यह कहते थे कि काले आदमियों को दास बनाने में कुछ अनौचित्य नहीं, क्योंकि काले लोग अपने देश में सदा ही सदा रहे हैं। मेरा उत्तर है कि अभी काल तक श्वेत-लोग भी तो दास रहे हैं। कोई यात्री जब प्राचीन नगरों तथा साम्राज्यों के ध्वंसावशेषों (खण्डहरों) को देखता है, जब वह चारों ओर गिरे हुए खंभे तथा नीचे पड़ी हुई दीवारें देखता है, तो पूछ बैठता है कि ये नगर क्यों नष्ट हो गए? ये साम्राज्य क्यों लड़खड़ा गए? अतीत को भूत और युगों की बुद्धि उत्तर देती है-ये मंदिर, ये महल, ये नगर, जिनके ध्वंसावशेषों पर आप खड़े हैं, अन्याय और अत्याचार द्वारा बनाए गए थे। जिन हाथों ने उन्हें बनाया, उन्हें उचित मजदूरी नहीं मिली थी। जिन पीठों ने ये पत्थर ढोए, उन पर चाबुकों के निशान भी बने हुए हैं। चोरों तथा डाकुओं के अभिमान और महत्वाकांक्षा की संतुष्टि के लिए इन्हें दासों ने बनाया था। इन्हीं कारणों से वे आज धूल में मिल गए हैं।

उनकी सभ्यता एक झूठ थी। उनके कानून डाके और चोरों के नियमित ठहरा देने भर के लिए थे। उन्होंने आदमियों के शरीर और आत्माओं को खरीदा और बेचा। कोई जाति, जिसके मूल में शरीर

और आत्मा की दासता है, कभी जीती नहीं रह सकती। यह सब होने पर भी आज हजारों-लाखों लोग ऐसे हैं, जो पुराने ढंग पर ही मंदिरों और शहरों का निर्माण करना चाहते हैं और शासन-चक्र चलाना चाहते हैं। जो दिमाग की मुक्ति के कारण हुए, ठीक वहीं शरीर की मुक्ति के भी कारण थे। आदमी के दिमाग को मुक्त कर दो, उसे पुस्तकें पढ़ने-लिखने तथा छापने का अवसर दो, तो उसके बंधन एक-एक करके टूटकर धूल में मिल जाएंगे। यह सत्य हमेशा ज्ञात था। इसलिए दासों को कभी पढ़ने की छूट नहीं रही है। किसी दास को पढ़ाना सदा से एक अपराध रहा है। समझदार लोग गुलामी से मृत्यु को श्रेयस्कर समझते हैं। शिक्षा संसार में सबसे बड़ी दासताविरोधी है। किसी को वर्णमाला सिखा देने का मतलब है एक क्रांति को जन्म देना। एक स्कूल बनाने का मतलब है एक किला बनाना और हर पुस्तकालय एक तोपखाना है।

यह न सोचिए कि श्वेत-दासता को नष्ट करने के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ा। जिन आदमियों ने श्वेत-दासता का विरोध किया, उनका मजाक उड़ाया गया, उन्हें घरों से निकाल दिया गया, उन्हें फांसी पर लटकाया गया और जला दिया गया। जिन आदमियों के पास कोई एक भी विचार नहीं था, वे यह कहकर उनकी निंदा करते थे कि उनके पास केवल एक ही विचार है। जो आदमी इतने पागल थे कि किसी एक तुच्छ राजा के बनाए हुए नियमों को विश्व के नियमों से भी ऊंचा समझते थे, वे उन्हें कट्टर कहकर निंदा करते थे। अपराध नैतिकता को मुंह चिढ़ाता था और ईमानदारी अछूत बनी हुई थी। लूट और डाकों द्वारा स्थापित, यंत्रणा और अनन्त अत्याचार द्वारा संवर्धित श्वेत-दासता को अंत तक बचाने का प्रयत्न किया गया।

अब मैं आपको बताना चाहता हूं कि यूरोप में श्वेत-दासता के उठ जाने का निकटतम कारण क्या था? मध्य-युग के लोग तीन बड़े वर्गों में विभक्त थे-जनसाधारण, पादरी-पुरोहित और सरदार। ये सारे ही लोग दो वर्गों में विभक्त हो सकते थे-लूटेरे और लुटे जाने वाले।

सरदारों को राजाओं से ईर्ष्या थी और राजा सरदारों से डरते थे। पादरी सदैव शक्तिशाली पक्ष लेते थे। जन साधारण को काम करना पड़ता और टैक्स देने पड़ते। सरदारों की सम्पति कानून द्वारा करों से मुक्त थी। परिणाम यह था कि जब कभी सरदारों और राजा में युद्ध होता, तो दोनों पक्ष किसानों को अपनी ओर मिलाने का प्रयत्न करते। पादरी-पुरोहित जब राजा के पक्ष में होते, तो वे जन-साधारण और सरदारों में यह कहकर कि सरदार अत्याचारी हैं, भेद उत्पन्न कर देते। जब वे सरदारों की ओर होते तो कहते कि राजा बड़ा अत्यचारी है। अंत में लोगों को विश्वास हो जाता कि दोनों अत्याचारी हैं। पुरानी कहावत है कि जब चोर लड़ते हैं, तब ईमानदार आदमी नफे में रहते हैं। यूरोप में दासता को समाप्त करने में ये युद्ध ही कारण हुए। एक तरह से कहा जाए तो इतिहास के महानतम पृष्ठों में से एक पृष्ठ फ्रांसीसी राज्य-क्रांति ने वेतदासता को समाप्त किया। जो लोग चौदह सौ वर्षों से गुलामी का जुआ अपने कंधों पर ढो रहे थे, वे ही लोग इन भयानक दिनों में धूलि झाड़कर उठ खड़े हुए। उन्होंने अपने बंधन तोड़ डाले और दिल खोलकर अत्याचारों का बदला लिया। उन्होंने अपने मालिकों के रक्त से पृथ्वी को लाल कर दिया। उन्होंने मंदिरों और सिंहासनों को ध्वंसावशेष बना दिया और अपने रक्त-रंजित हाथों से उस वेदी के टुकड़े-टुकड़े कर दिए, जिस पर उनके अधिकारों की बली चढ़ ही गई थी। उन्हें न केवल अतीत के मिथ्या-विश्वासों से घृणा हो गई, किंतु अतीत से ही घृणा हो गई। फ्रांस की राज्यक्रांति एक नए युग का आरंभ थी। जिस समय यूरोप में वेत-दासता का ह्रास होने लगा, जब सोलहवीं शताब्दी के मध्य में श्वेत-दासों की अवस्था कुछ सुधरने लगी, उसी समय पुर्तगाल के अलोंजो गोंजले ने अपने देश के निवासियों को एक दूसरा रास्ता सुझाया। आदमियों के व्यापार का एक दूसरा बाजार। थोड़े ही समय में अपनी तमाम भयानकता लिए हुए अफ्रीका के दास-व्यापार का शुभारंभ हो गया।

यह व्यापार आधुनिक युग का एक महान अपराध सिद्ध हुआ है। यह कल्पना कर सकना

लगभग असंभव है कि जो जातियां अपने को ईसाई मानती थीं, या कुछ हद तक सभ्य भी मानती थी, वे पार-पूर्ण व्यापार कैसे करती रही होंगी। यह सब होने पर भी यूरोप की लगभग सभी जातियां इन दासों के व्यापार में पड़ी, इसे कानूनी बनाया, इसकी रक्षा की, इसे जोर-जबरदस्ती से चालू किया और आपस में वे एक-दूसरे से ऐसे काम करने में बाजी मारने लगीं, जिनके वर्णन मात्र से आदमी का दिल पथरा सकता है।

यह हिसाब लगाया गया है कि वर्षो तक कम से कम चार लाख अफ्रीका-निवासी प्रतिवर्ष या तो मौत के घाट उतार दिए जाते थे या उन्हें गुलाम बना लिया जाता था। वे इन अभागों से अपने जहाजों को इतना अधिक ठूस-ठूस कर भर लेते थे कि सामान्यतः दस प्रतिशत तो इनमें से रास्ते में ही मर जाते थे। उनके साथ जंगली पशुओं-सा बर्ताव किया जाता था। खतरे के समय उन्हें समुद्र में फेंक दिया जाता था। यह बात याद रखने योग्य है कि सोलहवीं शताब्दी में आरंभ हुआ, यह भयानक व्यापार उन जातियों द्वारा किया जाता था जो अपने-आपको ईसाई सभ्यता का ठेकेदार समझती थीं और आप क्या समझते हैं कि देशों में से कुछ ने इसे कब बंद किया? इंग्लैंड में विल्वर फोर्स और क्लार्कसन ने दासों के क्रय-विक्रय को बंद करने के प्रयत्न में अपना जीवन खपा दिया। उनसे लोग घृणा करते थे, उन पर थूकते थे। वे बीस वर्ष तक लगे रहे। 25 मार्च, 1808 में कहीं जाकर इंग्लैंड ने इस मानवी-मांस के व्यापार को गैरकानूनी घोषित किया। जब यह पता लगा कि अमेरिका में भी ऐसी ही घोषणा हुई है, तो इंग्लैंड में दुगुनी प्रसन्नता हुई। कुछ समय बाद इस व्यापार में लगे हुए लोगों को समुद्री-डाकू घोषित किया गया।

28 अगस्त, 1833 को इंग्लैंड ने अपने सब उपनिवेषों से दास-प्रथा को समाप्त कर दिया। उस समय सभ्य संसार में संयुक्त-राज्य ही सबसे बड़ा दासों का स्वामी देश था।

हम सभी इस देश के दासता के इतिहास से परिचत हैं। हम जानते हैं कि इसने हमारे लोगों को भ्रष्ट किया, इसने हमारे देश की भूमि को भाई-भाई के रक्त से लाल किया, इसके कारण हम अपने तीन लाख वीरतम पुत्रों को गंवाकर विलाप करने पर मजबूर हुए, यह हमें संसार के सबसे अधिक अंधकारपूर्ण युग में ले गई तथा इसने हमें एकदम विनाश के तट पर ले जाकर खड़ा कर दिया।

लेकिन अंत में स्वतंत्रता ने अपना सिर उठाया और 1853 की पहली जनवरी को-इस देश के महानतम नूतन वर्ष के दिन-वीर उत्तर-अमरीका की इच्छा के अनुसार उस एक महान विभूति की कलम से-जिसका नाम भविष्य के लिए अमर है-इतने दिनों से जो न्याय न हो सकता था, वह न्याय हो गया। अब्राहम लिंकन ने दासता को समाप्त कर दियां चार लाख दास बंधन-मुक्त हो गए।

स्वतंत्रता की विजय

स्वतंत्रता वह पवित्र शब्द है, जिसके बिना और सारे शब्द व्यर्थ हैं, जिसके बिना जीवन मृत्यु से भी बुरा है और आदमी पशु बन जाते हैं। यह वह शब्द है, जिसका उच्चारण कर देवता भी धन्य होते हैं। क्या आप इसका अनुभव कर सकते हैं कि कुछ ही वर्ष पहले दासता की दिल दहला देने वाली प्रथा हमारे देश में विद्यमान थी। हमको, आपको और सभी को इस देश का कानून एक आदमी और उसकी स्वतंत्रता के बीच बाधक बनाकर खड़ा किए हुए था। हम कानून से मजबूर थे कि आदमी का चाबुकों और जंजीरों के सुपुर्द कर दें। हमारे कानून द्वारा बच्चों को उनकी माताओं से और पत्नियों को उनके पतियों से पृथक कर बेच दिया जाता था।

यह सब होता था, स्वतंत्रता के पवित्र नाम पर, एक प्रजातंत्र सरकार द्वारा, जो सभी आदमियों की समानता के सिद्धांत पर स्थापित थी। यह सब मुझे एक भयानक स्वप्न मालूम दे रहा है। इतना सब होने पर भी हमें इतिहास के कटघरे में खड़े होकर अत्यंत संकोच और लज्जा के साथ अपना अपराध स्वीकार करना पड़ रहा है।

यह सत्य है कि एक बड़ी हद तक हमने इस जातीय अपराध का प्रायश्चित कर दिया है। हमने अपने वीरतम तथा श्रेष्ठतम पुत्रों का बलिदान दिया है। हमने भयानक रक्त-रंजित युद्ध का भार वहन

किया है। नेक और सच्चे आदमियों ने हमारा साथ दिया है। उत्तरी अमेरिका की देवियां तो अमर हो गई हैं। उन्होंने युद्ध की आधी भयानकता को समाप्त कर दिया। नेता के माथे पर विजय का सेहरा बांधने मात्र से संतुष्ट न रहकर उन्होंने सैनिकों के जख्मों पर पट्टियां बांधी हैं, उन्होंने जीवितों को साहस दिया है। उन्होंने मरने वालों को सांत्वना दी है और उन्होंने इस महान विजय पर प्रसन्नता के आंसू बहाए हैं।

लेकिन, अभी बहुत कुछ शेष है। दासता समाप्त हो गई है, किंतु प्रगति के लिए अभी बहुत कुछ आवश्यक है। हमसे आशा की जाती है कि स्वतंत्र शब्द के व्यापकतम अर्थों में सरकार को एक स्वतंत्र सरकार बनाएं, अर्थात् सभी स्वतंत्र हों। हम समस्त इतिहास के सम्मुख उत्तरदायी हैं। हमारे सामने मानवता का सारा अनुभव है। हम जानते हैं कि पृथ्वी असंख्य निर्दयतापूर्ण असफलताओं का घर है। हम से आगे गए हुए शहीद और वीर-पुरुष अपील कर रहे हैं। अनगिनत कब्रों की पवित्र धूलि हमसे अपील कर रही है। हमारे श्रेष्ठ हुतात्माओं की याद हमसे अपील कर रही है। हमारे भूत-काल के कष्ट और हमारी भूत-काल की आशाएं हमसे अपील कर रही हैं। इन सबकी ओर से, मैं अमेरिका के लोगों से अत्यंत विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करता हूं, दरख्वास्त करता हूं कि वे सदाकालिक न्याय के सिद्धांतों पर अपनी सरकार को स्थगित करें। मैं उनसे प्रार्थना करता हूं कि वे व्यापक मानवी स्वतंत्रता के सिद्धांत पर ही अपनी सरकार के भवन का शिलान्यास करें-यह वह सिद्धांत है, जिसे आज तक सभी जातियों ने ठुकराया है। तभी उनकी सरकार स्थिर रह सकेगी और उसके भवन का गगनचुम्बी शिखर तारागण को स्पर्श करेगा।

इस प्रकार मैंने दासता के कुछ कुपरिणामों की ओर आपका ध्यान आकर्षित करने का प्रयत्न किया है। मैं यह सिद्ध करना चाहता हूं कि स्वतंत्रता की ओर उठने वाला कदम ही प्रगति की ओर उठ सकता है। मैंने मन और शरीर की दासता को समाप्ति के कुछ कारण बताने का प्रयत्न किया है। एक सत्य है जो आपको याद रखना ही चाहिए और वह यह कि हर बुराई के नाश का बीज भी उस बुराई में ही छिपा रहता है। मैं मानता हूं कि दूसरी सभी बातें मिलकर भी मानवता का उतना उद्धार नहीं कर सकीं, जिनका ज्ञान प्रसार द्वारा हुआ है। जब वाणी की स्वतंत्रता नहीं थी और छापेखाने नहीं थे, तो प्रत्येक विचार जिस मस्तिष्क में जन्मग्रहण करता था, उसी में मर जाता था। एक आदमी दूसरे के विचार से लाभ नहीं उठा सकता था। भूतकाल के अनुभव बहुत करके अज्ञात ही रहता था। किंतु छापेखाने के आविष्कार के बाद विचार फैलाने लगे और वे वास्तविक घटनाओं के छोटे-छोटे स्रोतों तथा दूसरी जानकारी रूपी बड़े-बड़े दरियाओं के साथ मिलकर मानवी-ज्ञानरूपी समुद्र का हिस्सा बनने लगे।

हम एक अनन्त समुद्र के तट पर खड़े हैं, जिसकी असंख्य लहरें साहसी कदमों का स्वागत करने के लिए उत्सुक हैं। आज मानव-जाति प्रगति पथ पर है।

हे प्रगति के सैनिको, बढ़े चलो जब तक न्याय कानून नहीं बन जाता, बढ़े चलो जब तक अज्ञान नष्ट नहीं हो जाता, बढ़े चलो जब तक कहीं कोई आकाश का अथवा जमीन का राज्य-सिंहासन शेष है, बढ़े चलो जब तक मिथ्या-विश्वास एक भूले हुए स्वप्न नहीं बन जाते, बढ़े चलो जब तक संसार स्वतंत्र नहीं हो जाता और बढ़े चलो जब तक मानवी-बुद्धि को अधिकाररूढ़ करके राजाओं का राजा स्वीकार नहीं कर लिया जाता।

अखबारों का असली कर्तव्य शिक्षा देना, लोगों से संकीर्णता निकालना, साम्प्रदायिक भावनाएँ हटाना, परस्पर मेल-मिलाप बढ़ाना और भारत की साक्षी राष्ट्रीयता बनाना था, लेकिन इन्होंने अपना मुख्य कर्तव्य अज्ञान फैलाना, संकीर्णता का प्रचार करना, साम्प्रदायिक बनाना, लड़ाई-झगड़े करवाना और भारत की साक्षी राष्ट्रीयता को नष्ट करना बना लिया है।

-श॰भगत सिंह

–सौरमंडल में ग्रह

आज मैं सौरमंडल व planets से सम्बंधित कुछ तथ्यों को आपके सामने रखूँगा ।

ब्रह्मांड में लगभग 100 अरब या उससे भी ज्यादा मंदकिनी (Gala) हैं और आकाशगंगा या मिल्की वे या क्षीरमार्ग या मन्दाकिनी हमारी गैलेक्सी को कहते हैं, जिसमें पृथ्वी और हमारा सौर मण्डल स्थित है। सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने वाले विभिन्न ग्रहों, छुद्र ग्रहों, धूमकेतुओं, उल्काओं तथा अन्य आकाशीय पिण्डों के समूह को सौरमंडल कहते हैं। सौरमंडल में सूर्य का प्रभुत्व है, क्योंकि सौरमंडल निकाय के द्रव का लगभग 99.999 द्रव सूर्य में निहित है। सूर्य समस्त सौरमंडल का ऊर्ज़ा स्रोत है।

बुधः

१. यह सूर्य के सबसे निकट है (nearest to the sun)

२. यह सबसे छोटा ग्रह है (smallest planet)

३. अपनी धुरी पर 58.65 दिल में एक घूमता है.

४. यह सूर्य के चारों ओर 88 दिन में एक बार चक्कर लगाता है.

५. यहाँ दिन अत्यधिक गर्म और रातें बर्फीली होती हैं.

६. परिमाण में यह पृथ्वी का 18वां भाग है.

७. इसका गुरुत्वाकर्षण पृथ्वी का 3/8 भाग है.

शुक्र (VENUS)

१. यह ग्रहों में पृथ्वी के निकटतम (nearest to the earth) है.

२. यह सौरमंडल में सूर्य से दूसरे निकटतम स्थान पर है.

३. यह ”शाम का तारा- evening star और सुबह का तारा- morning star’ के रूप में ज्यादा प्रसिद्ध है.

४. यह सबसे गर्म ग्रह है। लोग बुध को सबसे गर्म ग्रह मानने की गलती कर देते हैं क्योंकि वह सूर्य के सबसे नजदीक है.

५. यहाँ रात तथा दिन के तापमान लगभग समान होते हैं.

६. शुक्र ग्रह के वायुमंडल में ९०-९५ % CO_2 है.

७. इसका कोई उपग्रह नहीं है.

८. इसे पृथ्वी की बहन (sister planet of the earth) भी कहा जाता है क्योंकि पृथ्वी और शुक्र के एक समान हैं (भार, आकार आदि)

९. यह सूर्य की परिक्रमा 225 दिन में पूरी करता है.

१०. इसके चारों और Sulfuric Acid के जमे हुए बादल हैं.

मंगलः

1. यह सौरमंडल में सूर्य से चौथे स्थान पर स्थित है.

२. इसके दो उपग्रह हैं-फोबस और डीमोस ।

३. सबसे ऊंचा पर्वत (निक्स ओलम्पिया) है जो एवरेस्ट से भी तीन गुना ऊँचा है.

४. इस ग्रह को ”लाल ग्रह“ भी कहते हैं.

५. सूर्य से इसकी दूरी 22.79 cr km है.

६. मंगल के दो ध्रुव हैं तथा यहाँ भी पृथ्वी की भांति ऋतु परिवर्तन होता है. ऐसा पृथ्वी की तरह इसकी धुरी झुकी होने के कारण होता है.

बृहस्पतिः

1. यह सौरमंडल का सबसे बड़ा ग्रह है.

२. यह सूर्य से पाँचवे स्थान पर है.

३. इसका घनत्व पृथ्वी के घनत्व का एक चौथा है.

४. यह सूर्य की परिक्रमा में 11.9 वर्ष लगाता है.

५. इसका द्रव्यमान सौरमंडल के सभी ग्रहों का 71þ एवं आयतन (volume) उनका डेढ़ गुना है.

६. यह तारों की तरह सूर्य से प्राप्त ऊर्जा से दोगुनी या तिगुनी ऊर्जा उत्सृजत करता है.

७. इसकी अपनी रेडियो उर्जा है.

८. इसके वायुमंडल में अधिकांशतः हाइड्रोजन और हीलियम गैसें हैं.

९. इसके 69 उपग्रह हैं.

१द्र. शनि के समान इसके उपग्रहों में कुछ विपरीत तो कुछ अनुकूल दिशा में परिक्रमा करते हैं.

शनि :

१. यह नंगी आँखों द्वारा दिखने वाला सबसे दूर का ग्रह है.

२. यह बृहस्पति के बाद दूसरा सबसे बड़ा ग्रह है.

३. इसके सबसे ज्यादा उपग्रह हैं - 21

४. इसका व्यास 1,20,0000 कि.मी. है.
५. यह सूर्य की परिक्रमा 29.5 वर्ष में पूरी करता है.
६. इसका सबसे बड़ा उपग्रह टाइटन है.
७. यह सूर्य से छठे स्थान पर स्थित है.
८. इसका घनत्व पृथ्वी से कम है.
९. इसके उपग्रह "टाइटन" पर नाइट्रोजन वाला वायुमंडल है

अरुण

१. यह ग्रह सूर्य से सातवें स्थान पर स्थित है.
२. इसके 15 उपग्रह हैं.
३. इसके चारों और पाँच बहुत धुँधले वलय अल्फ़ा, बीटा गामा, डेल्टा और इप्सिलान के हैं.
४. इसके वायुमंडल में मिथेन गैस हैं.
५. इस ग्रह की खोज 1781 में William Herschel ने की थी.
६. यह 84 वर्ष में सूर्य की परिक्रमा करता है.
७. यह एकमात्र ऐसा PLANET है जो एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक अपने परिक्रमा कक्ष में लगातार सूर्य के सामने रहता है.

वरुण (NEPTUNE)

१. यह सूर्य से आठवाँ सबसे दूर स्थित ग्रह है।
२- 'ट्राइटन (triton)' और 'Proteù' दो उपग्रह इसके सबसे बड़े उपग्रहों में से हैं. टाइटन उपग्रह पर वायुमंडल है. इसमें मुख्यतः नाइट्रोजन व्याप्त है.
३. यह सौरमंडल का तीसरा पड (third body) है, जहाँ जागृत ज्वालामुखी पाया गया है।

प्लूटो PLUTO

१. यह नव अण्वेषित कु पर बेल्ट का एक बड़ा पड है.
२. प्लूटो बौने ग्रह (dwarf planet) की श्रेणी में आता है. अंतर्राष्ट्रीय खगोलीय संघ ने 3 सितम्बर 2006 को ऐलान किया कि प्लूटो ग्रह नहीं है.
३. इसका व्यास 300 कि.मी. है.
४. यह सूर्य से 586.56 कि.मी. दूर है और यह सूर्य की परिक्रमा 248 वर्ष में पूरी करता है.
६. प्लूटो के पाँच ज्ञात उपग्रह हैं । शैरन (Charon) सबसे बड़ा है.
७. 1930 में अमेरिकी खगोलशास्त्री Clyde Tombaugh ने प्लूटो को खोज निकाला और इसे सौर मण्डल का नौंवा ग्रह माना था.

पृथ्वी (EARTH)

१. पृथ्वी का भूमध्यरेखीय व्यास (equatorial diameter) 12,757 कि.मी. (7,927 मील) एवं ध्रुवीय व्यास 'polar diameter' 12,714 कि.मी. (7,900 मील) है.
२. पृथ्वी की भूमध्यरेखीय परिधि (equatorial circumference) 40, 075 किलोमीटर (24, 900 मील) है.
३. पृथ्वी 107160 कि.मी. प्रति घंटे की गति (speed per hour) से 365 दिन, 5 घंटे, 48 मि. एवं 46 सेकंड में सूर्य का चक्कर लगाती है.
४. पृथ्वी अपनी धुरी पर पश्चिम से पूर्व की ओर 1610 कि.मी. प्रति घंटे की गति से 23 घंटे 56 मिनट एवं 4 सेकंड में एक चक्कर लगाती है.
५. पृथ्वी का 71 प्रतिशत भाग जलमंडल (hydrosphere) एवं 29 प्रतिशत भाग स्थलमंडल (lithosphere) है.
६. पृथ्वी की दैनिक घूर्णन गति के कारण दिन एवं रात तथा वार्षिक परिभ्रमण गति के कारण ऋतु परिवर्तन होता है.
७. पृथ्वी का परिभ्रमण पथ दीर्घ (Elliptical) है एवं पृथ्वी तथा सूर्य के बीच की दूरी में परिवर्तन होता रहता है. यह दूरी 3 जनवरी को न्यूनतम 'minimum' एवं 4 जुलाई को अधिकतम 'maÚimum' होती है.
८. न्यूनतम दूरी की अवस्था को उपसौर (Perihelion) एवं अधिकतम दूरी की अवस्था को सूर्योच्च (Aphelion) कहा जाता है.
९. पृथ्वी अपने कक्ष तल 'Plane of orbit' के साथ 66° कोण बनाती है.
१०. 21 June को कर्क रेखा पर सूर्य की किरणें 90° लम्बवत् पड़ती हैं, अतः इस तिथि को उत्तरी गोलार्ध में दिन की अवधि सर्वाधिक लम्बी होती है जिसे Summer Solstice कहा जाता है.
११. इसी प्रकार 22 दिसम्बर को मकर रेखा पर सूर्य की किरणें लम्बवत् पड़ती हैं जिसे Winter Solstice कहा जाता है और इस तिथि को दक्षिणी गोलार्ध 'south hemisphere' में दिन की अवधि सर्वाधिक लम्बी होती है.
१२. 21 मार्च एवं 23 सितम्बर को विषुवत् रेखा पर सूर्य की किरणें लम्बवत् पड़ती हैं. इस दिन पृथ्वी पर सभी जगह दिन एवं रात को अवधि समान '12-12 घंटे' होती है.

नास्तिक हो जाने की —
हिमांशु कुमार की कहानी–उनकी ज़बानी

नास्तिक तर्कशील होता है। किसी बात को मानने के पहले अपनी बुद्धि, विवेक और अनुभव से काम लेता है। ऐसा नहीं कि किसी ने कह दिया और वह मान लेता है।

नास्तिक किसी बात को इसलिए नहीं मान लेता कि बहुत सारे लोग उस बात को मान रहे हैं। अर्थात वह भेड़चाल में यकीन नहीं करता। वह यह भी मानने में हिम्मत करता है कि कई बार बहुसंख्यक लोग भी गलत हो सकते हैं।

नास्तिक किसी बात को लेकर पूर्वाग्रह नहीं पालता। जब जो विषय उसकी समझ और अनुभव में आ जाता है, उसे स्वीकार कर लेता है। ऐसा नहीं सोचता कि लोग क्या कहेंगे?

व्यक्ति, समाज और दुनिया के प्रति एक आलोचनात्मक दृष्टि रखता है। किसी चीज, व्यव्हार, व्यक्ति, परम्परा आदि को जितना तक संभव है, तथ्य जुटाता है। आखिर में ज्यादा तर्क और थोड़ा सम्भावना में भी यकीन कर निर्णय लेता है।

नास्तिक व्यक्ति अपनी नैतिकता किसी धर्म ग्रन्थ, किसी भगवान, अल्लाह, गॉड आदि को गिरवी नहीं रखता। उसकी नैतिकता इंसानियत की परवाह करने के कारण है। इसलिए नहीं कि बाबा लोग, पुजारी, समाज, धार्मिक ग्रन्थ, परंपरा आदि उस पर क्या कहते हैं। इसलिए वह पुरानी और बेकार नैतिकता को त्याग भी कर सकता है तथा नई नैतिकता भी अपनी समझ और विवेक से गढ़ सकता है।

नास्तिक सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार भी करता है यदि उसे यह लगता है कि वह समाज और मानवता के लिए खतरनाक है। जैसे जाति व्यवस्था, सती प्रथा, बाल विवाह, दहेज़ प्रथा, अंधश्रद्धा, ओझा–गुणी आदि।

नास्तिक कर्म में विश्र्वास करता है। भाग्य, पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक, बैतरनी, यमराज, पुनर्जन्म, अवतारवाद, ईश्र्वरवाद आदि में विश्र्वास नहीं करता। वह इसलिए कि उसके बारे में उसे कोई प्रमाण नहीं होता। बिना तर्क से संतुष्ट नहीं होता। जो लोग उसके बारे में कहते रहे हैं, वह उसे ढ़ोकर पूर्वजों से लाये हैं। उनका अपना अनुभव नही होता।

नास्तिक व्यक्ति विज्ञान, इंसानियत, व्यक्ति-व्यक्ति के बीच समता, स्वतंत्रता, निजता, मानवाधिकार आदि की क्रद्र करता है। वह इसलिए कि उसे किसी ईश्र्वर को खुश नहीं करना होता, बल्कि उसके लिए इन्सान, जीव और जगत ही सच होते हैं, वह किसी परलोक में यकीन नहीं होता।

नास्तिक ज्ञान और विज्ञान के प्रसार में यकीन करता है। ज्ञान को समस्त मानवता की निधि मानता है। ऐसे में उसपर कब्ज़ा करना अथवा छुपाना मानवता के साथ अन्याय करना और अनैतिक लगता है।

नास्तिक चर्चा और बहस से नहीं डरता। उसे हार जीत की तरह भी नहीं लेता। संवाद को वह ज्ञान के लिए ज़रूरी समझता है। नास्तिक देश समाज के बारे में सिर्फ चर्चा नहीं करता, बल्कि उसे बेहतर बनाने के लिए कदम भी उठाता है। वह शिक्षक हो सकता है, संगठनकर्ता, वैज्ञानिक, कृषक, पर्यावरणवादी, डॉक्टर, वकील, राजनेता आदि कुछ भी हो सकता है। पर वह पंडा, पुरोहित, मुल्ला, पादरी आदि नहीं हो सकता।

मैं भी जन्म से आस्तिक था। मंगलवार का व्रत रखता था। हनुमान चालीसा पढता था। मन्दिर में जाता था तो मूर्ति के सामने साष्टांग दंडवत करता था। मैं और मेरी पत्नी अपनी शादी के बीस दिन बाद ही आदिवासियों की सेवा करने के मक़सद से दिल्ली छोड़ कर बस्तर के जंगल में जाकर एक झोंपड़ी बना कर रहने लगे। हमने आदिवासियों की शिक्षा, स्वास्थ्य, रोज़गार के लिए अट्ठारह साल काम किया। हमारी संस्था धीरे धीरे बढ़ती गई और हमारे कार्यकर्ताओं की संख्या दो सौ पच्चास हो गई।

इसी बीच निजीकरण, उदारीकरण और वैश्र्वीकरण का दौर शुरू हो गया। बड़े देशों की पूंजी

गरीब देशों के खनिज और संसाधनों को लूटने के लिए टूट पड़ा। गरीब देशों के भ्रष्ट नेता और अफसर चंद पैसों के लालच में अपने देशों की ज़मीनें, जंगल,खनिज और समुन्द्र तट कम्पनियों को सौंपने लगे।

अपनी ज़मीनों की लूट का विरोध करने वाले आदिवासियों और किसानों पर पुलिस और सुरक्षा बलों के द्वारा गोलियां चलवाना, जेलों में ठूंसना उनकी औरतों से बलात्कार करवाने के काम सरकारें करवाने लगीं।

जहां हम काम कर रहे थे जब उन आदिवासियों की ज़मीनों को छीनने के लिए सरकार ने आदिवासियों के साढ़े छह सौ गाँव जला दिये, हजारों नौजवानों का कत्ल किया, निर्दोष आदिवासियों और मानवाधिकार कार्यकर्ताओं को जेलों में डाल दिया गया। तब मुझे ईश्वर के होने पर शक होने लगा। मैंने देखा कि ज़ालिम जीतता है और बेकसूर मारा जाता है। बेकसूर की पूजा प्रार्थना सुनने वाला कोई है ही नहीं। पुलिस वालों ने बलात्कार करते समय लड़कियों के निप्पल दांतों से काट दिए और उन्हें नक्सली कह कर जेलों में ठूंस दिया पुलिस वालों का कुछ नहीं बिगड़ा और आदिवासी तकलीफें ही झेलते जा रहे हैं।

मैं और मेरी पत्नी इन आदिवासियों को बचाने के लिए लड़ रहे थे। हम राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, राष्ट्रपति सर्वोच्च न्यायालय को लिख रहे थे। हम सरकार और पुलिस के खिलाफ कोर्ट में मुकदमें कर रहे थे। सरकार के ज़ुल्मों का विरोध करने की वजह से सरकार ने हमारी आर्थिक मदद रुकवा दी, हमारे साथियों को जेलों में डाला जाने लगाद्य

अन्त में भाजपा सरकार ने हमारे सात एकड़ में फैले आश्रम पर बुलडोज़र चला दिया और मेरी पांच बार हत्या की कोशिश करी। आखिरकार जिस रात मेरे घर में घुस कर पुलिस मुझे मार डालने वाली थी। अपनी लड़ाई जारी रखने के लिए मुझे छत्तीसगढ़ छोड़ना पड़ा। उसके बाद मैं कुछ समय दिल्ली में रहा, फिर हिमाचल में आकर रहने लगा।

इस सब में मेरा ईश्वर से विश्वास पूरी तरह उठ गया। इस बीच मुझे जे.कृष्णमूर्ति को पढने का मौक़ा मिला। उससे अपनी धारणाओं और दिमाग के सोचने के तरीके को ठीक से समझ गया।

आज मेरी दोनों बेटियाँ और पत्नी सहित किसी का कोई भरोसा किसी धर्म या किसी ईश्वर में नहीं है। हमारे घर में किसी भगवान, गुरु या किसी भी तरह की मूर्ति या कलेंडर नहीं है। इसी के साथ साथ परिवार हर तरह के अंधविश्वास से आज़ाद हो गया

अब हम आत्मा, रूह, भूत जिन्न, चुड़ैल, शुभ या अशुभ दिन शुभ मुहूर्त जैसे मूर्खतापूर्ण सोच से आज़ाद हैं। पिछले साल मेरे पिता की मृत्यु हुई तो उनके शव का अंतिम संस्कार करने की बजाय मेडिकल कालेज को दे दिया गया।

कुछ लोग कहते हैं कि नास्तिक लोग दुष्ट और पापी होते हैं। मैंने और मेरी पत्नी ने पूरा जीवन समाज के लिए लगाया। कोई पैसा नहीं कमाया। आज तक हमने अपना कोई ज़मीन नहीं खरीदी ना कोई मकान बनाया। आज भी किराए के मकान में रहते हैं।

नास्तिक बनने के बाद हमारा ध्यान अब इस दुनिया की तरफ ज़्यादा जाता है। हम प्रकृति की सुन्दरता, पर्यावरण को बचाने आसपास के लोगों और जीव जंतुओं पर ज्यादा ध्यान देते हैं। मेरी पत्नी हर साल ज़रूरतमंदों को गर्म कपडे खरीद कर बांटती है, गरीब बच्चों को पढ़ाने का सामान खरीद कर दिलवाती है। मेरी दोनों बेटियाँ भूखे और बीमार कुत्तों और बूढ़ी गायों और छोड़ दिए गये बैलों को खाना खिलाने और उनका इलाज करवाती हैं। गऊ माता को भगवान मानने वाले लोग मेरी बेटियों से झगड़ा करते हैं कि तुम इन जानवरों को यहाँ घर के आसपास क्यों आने देती हो ?

असल में धर्म आपको यह मौका देता है कि आप दुनिया के सारे गलत काम कर के भी नमाज़ और पूजा करके अच्छे बने रह सकते हैं। जैसे राष्ट्रवाद आपको यह मौका देता है कि आप अपने देश के दलितों मुसलमानों और आदिवासियों को मार कर सिर्फ भारत माता की जय बोल दीजिये तो आप देशभक्त हो गये।

इसे मैं फर्ज़ी धर्म और फर्ज़ी राष्ट्रवाद कहता हूँ और मेरा विश्वास इन दोनों पर बिलकुल भी नहीं है। बल्कि मैं मानता हूँ जब इंसान इन दोनों से आज़ाद होगा तभी असली इंसानियत का जन्म होगा।

दुकान खुलवाने का झांसा देकर महिला को ठगा

अखिल भारतीय मोहन राम संत समागम के कथित महंत पर लगा आरोप, छह साल पुराने मामले में पुलिस ने केस दर्ज किया

अमर उजाला ब्यूरो

कुरुक्षेत्र : अखिल भारतीय मोहन राम संत समागम में मेडिकल स्टोर खुलवाने का झांसा देकर कथित महंत ने शहर की एक महिला भक्त को चार लाख रुपये का चूना लगाया। पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। हालांकि आरोपी महंत की गिरफ्तारी अभी तक नहीं हुई है।

जानकारी के अनुसार सेक्टर-तीन की रहने वाली वीना कुमारी ने पुलिस को दी शिकायत में बताया है कि वर्ष 2012 में अखिल भारतीय मोहनराम संत समागम में महंत प्रवीन दास ने उसे मेडिकल स्टोर खुलवाने का आश्वासन दिया था। इसके लिए विधिक औपचारिकताओं को पूरा करने के लिए कुछ रुपये खर्च करने की आवश्यकता बताई थी। महंत प्रवीन दास की बातों पर विश्वास करक वीना ने उनको चार लाख रुपये दे दिए। तब से छह साल बाद भी महंत ने उसे मेडिकल स्टोर नहीं दिलवाया।

इस संबंध में अनेक बार वीना ने महंत से मिलकर दुकान खुलवाने की बात कही। लेकिन वो बार-बार टालता रहा। अंतिम बार जब वो महंत से रुपये मांगने पहुंची तो प्रवीन दास ने उसे जान से मारने की धमकी दी है। शिकायत के आधार पर पुलिस ने अरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। उधर महिला द्वारा लगाए गए आरोपों के संबंध में आरोपी महंत से संपर्क नहीं हो सका। पुलिस भी आरोपी महंत से महिला द्वारा लगाए गए आरोपों की जांच कर रही हैं हालांकि गिरफ्तारी के संबंध में पुलिस के अधिकारी किसी तरह की टिप्पणी करने से बच रहे हैं। माना जा रहा है कि केस दर्ज करने के बाद आरोपों की पुष्टि और साक्ष्य जुटाने के बाद ही आरोपी के खिलाफ कोई कार्रवाई की जा सकेगी। वहीं गांव बारवा की रहने वाली दो महिलाओं द्वारा गामीण स्कीम के तहत आए 1 लाख 5 हज़ार रुपये हड़पने लिए जाने का मामला सामने आया है।

-अमर उजाला 28-4-2019

प्रयागराजः प्रयागराज के चर्चित संत ने की विदेशी युवतियों से बदसलूकी

प्रयागराजः प्रयागराज के चर्चित संत और निरंजनी अखाड़े से जुड़े योग गुरू स्वामी आनंद गिरि को विदेशी युवतियों से बदसलूकी के आरोप में ऑस्ट्रेलिया के सिडनी शहर में गिरफ्तार कर लिया गया। जज ने उन्हें फौरी तौर पर जमानत देने से इनकार करते हुए 26 जून तक के लिए न्यायिक हिरासत में भेज दिया है।

नाबालिग के बलात्कार करने के दोष में तांत्रिक को 10 साल कैद की सजा

संगरूरः अतिरिक्त सेशन जज जसजीत सिंह भिंडर की अदालत ने एक तांत्रिक को एक नाबालिग लड़की के बलात्कार के दोष में 10 की कड़ी जेल की सजा सुनाई है। जज महोदय ने उस पर एक लाख रूपये का जुर्माना भी लगाया है जिस में से 50000 पीड़िता को दिया जायेगा। लड़की प्रेगनेंट हो गई थी और एक बच्चे को जन्म दिया जिसकी कुछ ही दिनों में मृत्यु हो गई। पीड़िता का आरोप था कि नवंबर 2017 में उसे सांस की बीमारी हो गई थी। परिणाम स्वरूप उसके माता पिता उसे कई डाक्टरों के पास ले गये परंतु जब वे उसकी समस्या दूर करने में असफल रहे तो उसकी माता उसे रूढ़गढ़ गांव के एक तांत्रिक मंदीप सिंह के पास ले गई जिसने उसका बलात्कार किया।

अंधविश्वास के चलते

मेढ़क-मेढ़की की शादी के कार्ड छपे, होटल बुक

जीव विज्ञानी से नर और मादा की पहचान कराई

मेंगलूरू 9 जन (एजेंसी): बारिश के देवता को प्रसन्न करने और राज्य झमाझम बारिश कराने के लिए उडुपी में दो मेढ़कों की शादी कराई गई। उडुपी नागरिक समिति और पंचरत्न सेवा ट्रस्ट शानिवार को एक होटल में यह विवाह कराया। इस विवाह के लिए कार्ड भी छपवाए गए।

उडुपी के कलसंका से लाए गए मेढ़क का नाम 'वरुण' और किलिंजी के कोलालागिरी से लाई गई मेढ़की का नाम 'वर्षा' को पति-पत्नी घोषित किया गया। यह विवाह कराने वाले न्यास के महसचिव नित्यानंद ओलाकुडू ने बताया कि 'मानडूका कल्याणोत्सव' का आयोजन बारिश कराने वाले देवता को प्रसन्न करने के लिए किया गया था। उडुपी जिले में लंबे समय से बारिश नहीं हुई है और क्षेत्र पानी की कमी के संकट से जूझ रहा है।

मेढ़क के विवाह की पूरी प्रक्रिया भी काफी दिलचस्प है। आयोजक चार मेढ़क ले कर मनिपाल के जीवविज्ञान विभाग पहुंचे। जीव विज्ञानी ने इनमें से नर और मादा मेढ़क की पहचान की। इसके बाद दोनों को विवाह के लिए अलग-अलग होटल ले जाया गया। लोगों ने उनकी आरती उतारी और मादा मेढ़क को 'करिमनी' तथा 'बिछुआ' पहनाया। शादी के लिए बाकायदा कार्ड छपवाए गए थे और लोगों को दावत दी गई।

अच्छी फसल के लिएअंधविश्वास में भतीजे की दे दी बलि

नई दुनिया, खरियार रोडः खेत में बलि दे देने से फसल की पैदावार बढ़ जाएगी, इस अंधविश्वास में फंस कर एक ग्रामीण ने अपने ही भतीजे को मौत के घाट उतार दिया। पुलिस ने आरोपित को गिरफ्तार कर लिया है। इस घटना के बाद से पूरा गांव सदमे में है।

छत्तीसगढ़ के सीमावर्ती ओडिशा के खरियार रोड से करीब 30 किमी दूर कोमना थानांतर्गत ग्राम जाड़ामुंडा में यह लोमहर्षक घटना शनिवार को हुई। जाड़ामुंडा निवासी चिंतामणी माझी व सगन माझी सगे भाई हैं। छोटा भाई सगन पलायन कर आंध्र प्रदेश गया हुआ है। शनिवार को चिंतामणी (46) बड़े भतीजे (13) को लेकर खेत पर गया हुआ था। करीब 11 बजे छोटा भतीजा धन सिंह (11) खाना लेकर खेत पहुंचा। चिंतामणि पेड़ की डाल काटने में मदद करने के बहाने घनसिंह को साथ ले गया। धनसिंह की नजर दूसरी ओर थी। इसी दौरान चिंतामणि ने गंडासे से इतने जोर से वार किया कि धनसिंह की मौके पर ही मौत हो गई।

मंदिर में चढाया गया नींबू, 27000 में बिका

नई दिल्ली 22 जून(इंट) नींबू एक ऐसा पदार्थ है जिसमें अनंक गुण हैं। खासतौर पर गर्मियों में नींबू काफी लाभदायक होता है जिस कारण इसकी मांग बढ़ जाती है। इसमें मौजूद रस शरीर की सेहत के लिए काफी फायदेमंद होता है। सेहत के साथ- साथ धार्मिक स्तर पर भी नींबू का बहुत अधिक महत्त्व है। दरअसल एक नींबू की कीमत 27,000 रुपये लगाई गई है। अब आप सोच रहे होंगे कि आखिर इस नींबू में ऐसा क्या है जो इतना मंहगा बिका है? दरअसल तमिलनाडु के एक मंदिर में भगवान के सामने ये नींबू चढ़ाए गए थे। 11 दिनों तक लगातार चले पंगुनी उथीराम फैस्टीवल की समाप्ति पर मंदिर प्रशासन ने ऐसे नींबू नीलामी के लिए रखे थे। इनमें सभी नींबू कुल 68,000 रुपये में नीलाम हुए। इनमें से सिर्फ एक नींबू के लिए 27,000 रुपए दिए गए। ...(पंजाब केसरी, 23-6-2019)

ओस कहां से आती है?

ठंड के मौसम में सुबह-सुबह घास, स्कूटर की सीट आदि पर आपने पानी की महीन बूंदें देखी होंगी। ये बूंदें कहां से आती हैं? यह जानने के लिए एक सरल गतिविधि करके देखते हैं। इसे करने के लिए बर्फ के कुछ टुकड़ों की ज़रूरत होगी।

इस तरह से करें:

★ तीन चौथाई ग्लास पानी में बर्फ के कुछ टुकड़े डाल दें। ग्लास की बाहरी सतह को अच्छे से पोंछकर साफ कर लें। कुछ ही समय में, ग्लास की बाहरी सतह पर पानी की छोटी-छोटी बूंदें दिखाई देने लगेंगी।

कुछ चर्चा:

★ नदियों, समुद्रों, तालाबों आदि से (आपके शरीर, पेड़-पोधों, गीले कपड़ों आदि से भी) लगातार वाष्पन होता रहता है। विभिन्न स्रोतों से हवा में पहुंची यह जल वाष्पण, हवा को आर्द्र (नम) बना देती है।

★ जब आर्द्र हवा किसी ठंडी सतह के संपर्क में आती है तोजल वाष्प पुनः पानी में तब्दील हो जाते हैं। यह क्रिया संघनन (CONDEN-SATION) कहलाती है।

★ हमारे प्रयोग में भी, ग्लास की (ठंडी) सतह के संपर्क में आने वाली जल वाष्प संघनित होकर पानी की बूंदों में तब्दील हो जाते हैं।

★ ओस भी संघनित जल वाष्प ही हैं।

धूप वाष्पन की दर बढ़ाती है

धूप भी वाष्पन की दरको प्रभावित करती है।

जरूरी सामान:

एक जैसे आकार की दो कम गहरी प्लेट, चम्मच और पानी।

इस तरह से करें:

★ दोनो प्लेट में, चमच स`समान मात्रा में, इतना ही पानी डालें कि प्लेट की पूरी सतह पर पानी फैल जाए।

★एक प्लेट धूप में और दूसरी छांव में रख दें।

★आपके विचार से किस प्लेट का पानी पहले वाष्पित होगा?

कुछ चर्चा:

★धूप में पानी गर्म होने लगता है। गर्म होने पर पानी के अणुओं की ऊर्जा भी बढ़ जाती है। इसलिए, सतह से हवा में छलांग लगाने वाले अणुओं की संख्या भी बढ़ जाती है।

★राजस्थान जैसे गर्म इलाकों में कुएं ऐसी जगह खोदे जाते हैं जहां सूरज की रोशनी न पहुंचती हो। इन कुंओं को बावड़ी कहा जाता है।

इंद्रधनुष कैसे बनता है?

सूर्य का प्रकाश जो कि हमें सफेद दिखाई देता है, वास्तव में सात रंगों से बना होता है। 'बैगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी और लाल। ये सातों रंग ही इंद्र धुनष को बनाते हैं। बरसात के बाद हवा में पानी की छोटी छोटी बूंदें तैर रही होती हैं। जब प्रकाश की किरणें इन पानी की बूंदों में से गुज़रती हैं, तो वे परावर्तित हो कर एक कोण की ओर झुक जाती हैं। और सात रंगों में विभाजित होती हैं। जो हमें इंद्रधनुष के रूप में दिखाई देती हैं।

तर्कशील हलचल

रिवाड़ी के गांव गुजरीवास के खेतों में लगे ट्यूबेल के पानी पीने व नहाने से गम्भीर बीमारियां ठीक होने कें दावे को तर्कशीलों ने दी चुनौती।

तर्कशील सोसाइटी हरियाणा की टीम ने वहां गांव के खेतों में लगे ट्यूबेल पर जा कर जाँच पड़ताल करने के बाद आज पत्रकारों को जानकारी दी। उन्होंने बताया इससे पहले कुछ जागरूक लोगों ने उस पानी का जन-स्वास्थ्य विभाग की लैब से पानी टैस्ट करवाया। इस रिपोर्ट के अनुसार यह पानी साधारण ट्यूबेलों की तरह ही है, जो पीने योग्य भी नहीं है। समाज के कुछ लोगों ने इस अंधविश्वासी कार्य पर कार्यवाही करने व लोगों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जागरूक करने की अपील तर्कशीलों से की थी। उन लोगों की मांग पर तर्कशील सोसायटी के सदस्य स्वयं वहां जा कर विभिन्न लोगों से बातचीत की। उन्होंने वहां देखा कि वहां पानी प्राप्त करने वाले गम्भीर बीमारियों से पीड़ित लोगों की भीड़ लगी हुई थी, जोकि आमजन के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ है। गांव व आस पास के बहुत सारे लोग भी इसे अन्धविश्वास कह रहे हैं। उन्होंने हमें बताया कि इस पानी के नहाने से ठीक होने का दावा करने वाले लोग भी अब गायब हैं, और मीडिया के सामने नहीं आ रहे हैं। दूसरी तरफ प्रशासन ने भी सख्ती का उपयोग किया है। सबसे पहले प्रचारित किया कि इस पानी के नहाने से हमारी चमड़ी की बीमारी ठीक हो गई और पीने से शूगर ठीक हो गया। यह बात पहले सोशल मीडिया पर फैलाई गई और उसके बाद यह ख़बर अखवारों, टीवी में प्रकाशित भी हो गई। जिससे लोगों का वहां आने का सिलसिला शुरू हो गया। तर्कशील सोसाइटी हरियाणा के प्रधान फरियाद सिह सनियाना ने बताया की यह ड्रग्ज एंड मैजिक रेमिड्ज के अनुसार ऐसी इश्तिहारबाजी संविधान के अनुच्छेद 51 का सीधा उलन्घन है, जिसमें कोई किसी रोगी का इलाज किसी दैवीय या चमत्कारी पानी से होने का दावा नहीं कर सकता। साथ ही उन्होंने कहा कि यह आम जनसाधारण को मूर्ख बनाने का काम किया जा रहा है। सनियाना ने आगे बताया कि तर्कशीलों की पहले से ही चुनौती उन लोगों से है जो ऐसे चमत्कारी पानी से ठीक होने का दावा करते रहते हैं। सोसाय टी द्वारा रखे पांच लाख रुपये नाम उन्हें जीतने की पेशकश की और कहा रोगी हम लेकर आएंगे अगर वे इस पानी से ठीक कर देंगे तो उन्हें 5 लाख रुपये के इलावा अन्य संस्थाओं द्वारा घोषित करोड़ों रुपये के नाम भी दिलवायेंगे। परन्तु हमें पूरा विश्वास है इस पानी में ऐसा को चमत्कार नहीं है, जिससे गम्भीर बीमारियां ठीक हों।

सचिव गुरमीत सिह ने कहा कि ऐसी अंधविश्वासी अफवाहें अक्सर चालाक और शरारती लोग हमारे समाज में फैलाते रहते हैं, जिनका पर्दाफाश हमारी संस्थाएं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कर देती हैं। उन्होंने लोगों को सचेत रहने बीमारियों का इलाज सम्बंधित डॉक्टरों से ही करवाने व चमत्कारों के जाल में न फंसने की सलाह दी। उन्होंने बताया कि 3 वर्ष पूर्व ऐसे ही अन्धविश्वास चमत्कारी पानी का पर्दाफाश सिरसा जिला के चामल, झोरड़रोही गांवों के खेतों में लगे ट्यूबेल से निकलने वाले पानी का तर्कशील सोसायटी कालांवाली द्वारा किया गया था। बार-बार ऐसी घटनाओं से लोगों को सबक लेना चाहिए और वैज्ञानिक विचारधारा से सचाई जानने की विधि सीखनी होगी।

प्रवक्ता बलवन्त सिंह ने जन स्वास्थ्य विभाग व पुलिस प्रशासन से अपील की और कहा कि ये सरासर प्रशासन की नाक के नीचे लोगों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है, और कुछ शरारती लोगों द्वारा जानबूझकर अन्धविश्वास फ़ैलाकर रोज़ाना भोले-भाले हजारों लोगों का आर्थिक व मनोवैज्ञानिक शोषण किया जा रहा है। प्रशासन कानून के मुताबिक बनती कार्यवाही दोषी लोगों के खिलाफ़ करे। अगर प्रशासन ने इस अंधविश्वासी कार्य को न रोका तो वे जिला अधिकरियों को लिखती तौर पर ज्ञापन देंगे।

★★★

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की द्विमासिक मीटिंग एवं वैज्ञानिक सेमिनार

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की द्विमासिक मीटिंग एवं वैज्ञानिक सेमिनार का आयोजन हनुमान वाटिका, कैथल में हुआ। इस सभा में स्थानीय नागरिकों के अलावा राज्य भर से तर्कशील कार्यकर्ता पहुंचें। सभा के प्रारम्भ में आपसी परिचय के बाद सर्वप्रथम राज्य कार्यकारिणी सदस्य डा. विजय कुमार ने सोसायटी के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि तर्कशील आंदोलन की शुरुआत हरियाणा में 1988 में हुई जबकि पंजाब में पहले से ही कार्यरत थी। सभा में प्रोफेसर महेंद्र विवेक ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सभी के एक जुट होकर अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने पर ऐतिहासिक दृष्टि से प्रकाश डाल।उन्होंने बताया कि उस समय यह सांप्रदायिक बंटवारा नहीं था। सभी देश भक्त एक साथ संगठित होकर लड़े थे। उन्होंने रेखांकित किया कि देश की आजादी में महात्मा गांधी और शहीद भगत सिंह का एक समान योगदान था।

सभा में कामरेड कृष्ण ने अपने संघर्ष को लोगों के सामने रखा कि वह विगत तीन वर्षो से समाज में तर्कशील विचारों को फैला रहे हैं। सोसायटी सदस्य रामेश्वर ने अंधविश्वास से बाहर निकल कर तर्कशील बनने के अपने सफर को सब के सामने रखा कि एक बाबा के प्रभाव में वह परिवार सहित फंस गया था लेकिन डेरे की शंकित गतिविधियों के कारण वह मानसिक रूप से परेशान हो गया था। परंतु तर्कशील सोसायटी से जुड़ने के बाद आज वह बेहद अच्छा महसूस करते हैं।

सभा में सोसायटी के महसचिव गुरमीत सिंह ने देश-विदेश में चल रहे तर्कशील आंदोलन पर प्रकाश डाला कि आज विश्व स्तर पर तर्कशील आंदोलन बेहद मजबूत है। पत्रिका संपादक प्रा. बलवंत सिंह ने विभिन्न तांत्रिकों, बाबाओं से हुई समय समय पर मुठभेड़ का विवरण सामने रखा कि कैसे उन्हें डराने, धमकाने की बहुत कोशिश की गई, परंतु वह निर्भय होकर अडिग रूप से उसमें लगे रहे। इस सभा के आयोजन में कैथल ईकाई के कायकर्ताओं कृष्ण लाल, कुलदीप, रामदत, फकीरचंद आदि ने अहम योगदान दिया। सभा के अंत में सोसायटी प्रधान फरियाद सिंह ने सोसायटी की गतिविधियों को रेखांकित करते हुए सभा का समाप्न किया।

रिपोर्ट-फरियाद सिंह सनियाना
प्रधान, तर्कशील सोसायटी

चीन में 5-जी तकनीक से एक घंटे में रिमोट सर्जरी

200 किलोमीटर दूर बैठै डॉक्टरों ने किया गॉल ब्लाडर का सफर ऑपरेशन

चीन के बीजिंग में डॉक्टर 200 किलोमीटर दूर बैठकर गॉल ब्लेडर की समस्या से जूझ रहे मरीज की 5जी नेटवर्क तकनीक से रिमोट सर्जरी करने में सफल हुए। चीनी मीडिया को मंगलवार को जारी रिपोर्ट के मुताबिक, उत्तरी चीन के हुबेई प्रांत में यह सर्जरी लगभग एक घंटे तक चली। लेप्रोस्कोपिक कोलेसिस्टेकटोमी नामक इस सर्जरी के लिए दूर संचार कंपनी चाइना मोबाइल ने 6 जून को 5जी नेटवर्क के लिए लाइसेंस प्राप्त किया। यह सर्जरी 5जी इंटरनेट कनैक्शन की प्रक्रिया में ही संभव हो सका। सर्जरी शैओन्गजिया फॉरेस्ट्री जिला के ताइहे अस्पताल की ब्रांच में हुई जिसे 200 किलोमीटर दूर शियान शहर से लाइव फीड के माध्यम से रिमोट के जरिये अंजाम दिया गया। डॉक्टर ने कहा, 5जी तकनीक को धन्यवाद देना चाहिए जिसने नेटवर्क में कोई बाधा नहीं पहुंचाने दी। सर्जरी के बाद मरीज की स्थिति बेहतर है। *-एजेंसी।*

केस रिपोर्ट

और फिर पेशाब का बंध खुल गया

-बलवंत सिंह, लेक्चरार

सुरेंद्र सिंह अपने गांव में अपने छोटे से परिवार के साथ प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत कर रहा था। उसके परवार में उसकी पत्नी एकमात्र पुत्र गुरनाम तथा पुत्रवधु दीक्षा एवं एक वर्ष का एक पोता ही सदस्य थे। सुरेंद्र सिंह एक छोटा सा किसान था। उसकी केवल तीन एकड़ कृषि योग्य भूमि थी। अतः वह अपनी खेती के साथ साथ अपने ट्रैक्टर से किराये का कार्य भी कर लिया करता था। उसका लड़का गुरनाम पास के शहर में एक प्राईवेट कंपनी में नौकरी करता था। दोनों बाप-बेटा के कठोर परिश्रम से उनके घर का गुज़ारा बहुत बढ़िया ढंग से चल रहा था।

जब से गुरनाम और दीक्षा की शादी हुई थी तब से ही उसकी पत्नी दीक्षा को कोई न कोई छोटी-मोटी समस्या होती रही थी। कभी-कभी दीक्षा को बहुत अधिक गुस्सा आ जाता था और कभी वह स्वभाव से बहुत अधिक नर्म व सहनशील हो जाती थी। एक बार गुरनाम के कुछ मित्रों ने उसे बताया कि वे मेंहदीपुर बालाजी के धाम पर अपनी निजी समस्याओं के चलते यात्रा पर जा रहे हैं। तब गुरनाम भी शौकिया तौर उनके साथ बालाजी धाम पर यात्रा पर जाने के लिए तैयार हो गया। गुरनाम की बालाजी धाम पर जाने की तैयारी को देखकर दीक्षा भी उनके साथ जाने की जिद करने लगी। दीक्षा की जिद के आगे समर्पण कर गुरनाम उसे भी अपने साथ बालाजी धाम पर ले गया। वहां पर वे सभी दो-तीन दिन के लिए ठहरे। उस दौरान वहां पर कथित भूत-प्रेतों से परेशान लोगों को सिर घुमा कर खेलते हुए देख कर दीक्षा भी उन में शामिल हो गई और सिर घुमा कर खेलने लग गई। वहां पर सिर घुमा कर खेलते हुए दीक्षा ने अपने तन के कपड़े भी फाड़ डाले। जैसे कैसे परेशान हो कर गुरनाम दीक्षा को वापिस घर लेकर आया। घर आ कर दीक्षा और भी अधिक परेशान रहने लग गई।

अब दीक्षा ज्यादातर चारपाई पर ही लेटी रहती। घर के काम-धंधे की ओर बिल्कुल भी ध्यान न करती। पूछने पर शरीर में कभी कहीं तो कभी कहीं पर दर्द बता देती। इस दौरान उस का गर्भ धारण भी हो चुका था। इसी तरह कुछ महीने कभी ठीक तो कभी परेशानी में व्यतीत हो गए। समण पूर्ण होने पर दीक्षा ने एक पुत्र को जन्म दे दिया। इस से घर में खुशियों का माहौल लौट आया। परंतु कुछ महीनों के पश्चात् दीक्षा की परेशानियां फिर से बढ़नी शुरू हो गईं। अब दीक्षा घर वालों के पास उसे पेशाब का बंध पड़ जाने की शिकायत करने लग गई। जब वह शौच के लिए शौचालय में जाती तब उस का कहना था कि उसका मल-त्याग तो भली-भांति प्रकार से हो जाता है परंतु उसे पेशाब का बंध पड़ जाता है। जब दीक्षा पेशाब का बंध पड़ने की ज्यादा शिकायत करने लगी तो घर वाले उसे नजदीकी शहर के एक निजी अस्पताल में चैक अप के लिए ले गए। वहां डाक्टरों ने कई प्रकार के टेस्ट किए परंतु मामला उनकी समझ में नहीं आया। फिर भी वे इन्फेक्शन वगैरह की दवाई कुछ दिनों तक चलाते रहे। जब दीक्षा को कोई आराम नहीं आया तो उन्होंने उसे पी.जी.आई. चण्डीगढ़ में रेफर कर दिया।

पी.जी.आई. वालों ने दीक्षा को दाखिल करके गई प्रकार के टेस्ट लिए। सभी टेस्टों की रिपोर्ट सामान्य निकली, परंतु दीक्षा वहां पर भी पेशाब के बंध की रट लगाए जा रही थी। इस पर पी.जी.आई. के डाक्टरों ने स्पष्ट कह दिया कि दीक्षा झूठ बोल रही है। अतः वे उसे घर वापिस ले आए। घर पर आकर भी दीक्षा पेशाब के बंध की शिकायत करती रही।

इसी दौरान एक दिन दीक्षा शौच करने के लिए शौचालय में गई, परंतु काफी समय बीत जाने के बाद भी वापिस नहीं आई। घर वालों ने जब जाकर बाथरूम का दरवाजा खटखटाया तो अंदर से कुण्डी लगी हुई थी। खटखटाने पर भी जब दीक्षा ने अंदर से कोई जवाब नहीं दिया तो उन्होंने दरवाजे

को ही तोड़ दिया। दरवाजा तोड़ कर अंदर देखा तो वहां दीक्षा बेहोश पड़ी हुई थी।

उसकी ऐसी दशा देखकर अंधविश्वासी माहौल होने के कारण घर वाले गांव के काली माता की चौकी लगाने वाले को बुला लाए। उस द्वारा झाड़फूंक करने पर दीक्षा को होश आ गया। उसने दीक्षा पर शमशान वाली माता की पकड़ का असर बताया और अपनी दक्षिणा लेकर चला गया। साथ ही उपाय के तौर पर कई प्रकार के अनुष्ठान बता गया। अभी वे अनुष्ठान चल ही रहे थे कि उनके घर के पास बनाए गए तूड़ी (भूसा) के कूप को अचानक ही आग लग गई। जब तक फायर ब्रिगेड वाले पहुंचते तब तक आधा भूसा जल चुका था। दो दिन के पश्चात् उनके तूड़ी के दूसरे कूप में भी आग लग गई। इस प्रकार उनके पशुओं के चारे के लिए बनाया गया भूसा लगभग सारा ही खराब हो चुका था। उसके तीन दिन पश्चात् घर के अंदर बैडों को आग लग गई, फिर अगले दिन उनकी एक पेटी के अंदर रखे हुए कपड़ों में आग लग गई। फिर एक दिन दीक्षा ने अपने बच्चे को एक चारपाई पर कपड़ा बिछा कर उस पर सुलाया हुआ था और खुद आंगन में काम कर रही थी। उसी दौरान बच्चे के नीचे बिछाए गये कपड़ों में आग लग गइ। फिर एक दिन दीक्षा घर में आए रिश्तेदारों के लिए रसोई में चाय बना रही थी । साथ में उसकी चाची भी खड़ी थी। उसी दौरान दीक्षा के दुपट्टे को पीछे से आग लग गई। इस प्रकार से कुछ ही दिनों में उनके घर का ज्यादातर सामान जल कर राख हो गया।

इस प्रकार से जब घर में एक से बढ़कर एक विचित्र घटनाएं घटित होने लगी तो समस्या के समाधान के लिए घर वाले अनेकों बाबाओं, तांत्रिकों-मांत्रिकों, मुल्ला-मौलवियों व ओझाओं की शरण में जा कर समस्या के हल के लिए नाक रगड़ते रहे। बाबा लोगों ने उनके हज़ारों रूपये अनुष्ठानों के नाम से बर्बाद करवा दिये और हजा़रों ही रूपये दक्षिणा के रूप में उन से ऐंठ लिये परंतु उनकी समस्या कम होने की बजाये और भी गंभीर रूप धारण करती चली गई।

अंत में उन का एक रिश्तेदार उनकी भंयकर समस्या को देख और सुन कर उन्हें मेरे पास परामर्श केंद्र में ले आया। उनकी सारी समस्या को सुन कर अगले दिन मैंने उनके घर जा कर सारे माहौल का निरीक्षण किया। परिवार के सदस्यों से बातचीत कर के मामला तो स्पष्ट था कि इन सभी घटनाओं के पीछे दीक्षा का ही हाथ है। परंतु वह ऐसा क्यों करती रही है, यह बात पेचीदा थी। पेचीदा मामले के पेंच खोलने के लिए जरूरी था कि दीक्षा के अवचेतन मन को पूरी तरह से टटोला जाए। अतः मैंने दीक्षा के साथ मनोवैज्ञानिक ढंग से बातचीत करनी शुरू की। थोड़ा सा मानसिक दबाव देने पर ही दीक्षा ने समस्त घटनाओं के पीछे अपना हाथ होना स्वीकार कर लिया। उसने माना कि सभी जगह पर उसने माचिस के द्वारा स्वयं ही आग लगाई थी। साथ ही उसने यह भी स्वीकार किया कि उसे पेशाब का बंध नहीं पड़ता था, यह तो वह अपने ससुरालों को परेशान करने के लिए बहाना बनाया करती थी।

वास्तव में दीक्षा एक कामचोर प्रवृत्ति की महिला थी। वह अपना अधिकतर समय अपने मोबाईल पर चैटिंग में बिताती थी। घर के काम की ओर वह बिल्कुल भी ध्यान नहीं देती थी। जब कभी उस की सास उसे घर का काम करने के लिए कहती तो वह उल्टे झगड़ा कर लिया करती थी उसकी सास पशुओं का घास डालने के साथ पशुओं का गोबर कूड़ा भी स्वयं ही किया करती थी। पशुओं का सारा काम निपटा कर जब वह घर में आती तो देखती कि घर का सारा काम ज्यों का त्यों पड़ा है। बर्तन अभी साफ नहीं किए हैं तथा कपड़े भी सभी धोए बगैर ही पड़े हैं और दीक्षा मजे से सोफे पर बैठी हुई फोन पर उंगलियां चला रही है। तंग आ कर गुरनाम की मां ने दीक्षा के क्रियाकलापों की शिकायत गुरनाम से करनी शुरू कर दी। गुरनाम ने अपनी मां की बातों की सच्चाई को समझ कर दीक्षा से अपना व्यवहार ठीक करने के लिए और साथ घर का काम करने के लिए कहना शुरू कर दिया। परंतु दीक्षा की आरामपरस्ती एवं मोबाइल पर चैटिंग की आदत पक चुकी थी। वह अपने आप को अपने ससुराल की जिम्मेदारियों के अनुसार ढालने के लिए तैयार नहीं थी। साथ ही वह घूमने-फिरने की भी शौकीन थीं इसीलिए जब गुरनाम अपने दोस्तों के साथ बाला जी धाम जा रहा था तो जिद करके वह भी उनके साथ चली गई।

बालाजी धाम के माहौल में अवचेतन तौर पर अस्थिर होने के कारण वह सिर घुमा कर खेलने भी लग गई। साथ ही वहां पर आए लोगों से घरों में आग लगने, कपड़े कट जाने तथा भूत-प्रेत बाधा से ग्रसित होने की बातें देख व सुन कर मानसिक रोगी बन कर घर वापिस आई।

घर वापिस आकर वह घर के काम से और भी अधिक जी चुराने लग गई। इस से परेशान हो कर गुरनाम कई बार उसके साथ गुस्से से पेश आता था। इससे दीक्षा के मन में अपनी सास व अपने पति के प्रति नफरत भरती चली गई और वह कुण्ठाग्रत होती गई। इसी कुण्ठित अवस्था में उसने अपने पति व सास से बदला लेने के लिए घर में आग लगानी शुरू कर दी। घर वालों को जब अचानक से आग लगने के कारण समझ में नहीं आए और वे बाबाओं की शरण में चले गए। बाबाओं द्वारा यह सारा कारनामा कथित भूत-प्रेतों व ओपरी-पराई के द्वारा किया जाना घोषित कर दिया गया तो अवचेतन तौर पर दीक्षा का हौसला और भी बढ़ता चला गया और वह अपने घर में बार-बार आग लगाती चली गई। इन सभी घटनाओं में सब से महत्वपूर्ण बात यह थी कि दीक्षा के मायके वालों द्वारा दिये गये सामान को कभी भी कोई नुकसान नहीं हुआ। दहेज का सारा सामान बिल्कुल सुरक्षित रहा। भूसे के कूपों के अतिरिक्त दीक्षा ने अपनी सास की पेटी में रखे सभी कपड़े, बैड व चारपाइयां तथा बिस्तरे इत्यादि सभी जला दिये।

मैंने मनौवैज्ञानिक ढंग से दीक्षा के अवचेतन मन में बैठी नफरत और कुण्ठा को निकाल दिया। साथ ही उसके मन में बैठी ससुराल वालों से बदला लेने की भावना के भंयकर परिणामों के बारे में जब उसे अवगत करवाया तो वह क्षमा मांगने लगी और उसने वचन दिया कि आगे से वह अपनी सास का पूर्ण सहयोग करेगी तथा ऐसी घटिया हरकत वह कभी नहीं करेगी। उस दिन पश्चात् उनके घर में कभी कोई ऐसी घटना घटित नहीं हुई।

नोट : यह एक सत्य घटना है, परिस्थितिवश पात्रों के नाम बदल दिये गये हैं।

रागनी

-जीत जांडल
मो. 98135 30347

किसे गाम की बात बताऊं एक रहता पूछागर था
वे भी भगत कुहाग्या सजणो, घणा पाखंडी नर था।

मैल में सड़ता हांड्य करता नहीं हमें पैनहाणा था
टूटी जूती पाटे कपड़े, बिल्कुल मैला बाणा था।
रोटी-लासी रूखा-सूखा, बासी-कुसी खाणा था
दिन में सोणा रात नै जागणा उसमें ऐब पुराणा था
आया गाम मैं एक स्याणा वो लाग्या करण लटोटर था
वे भी भगत कुहाग्या सजणो, घणा पाखंडी नर था।

जो करतूत करै था स्याणा ध्यान तै देख लाग्या
बस दो दिन मैं चेला बण गया, मौका मिलते भाग्या
बालक बच्चे और गृहस्थी सबतै मोह तुड़वाग्या
छः महीने तक धक्के खाये, वापस घर नै आग्या
पूजा खातर घरां बणाया एक छोटा सा मंदिर था।
वे भी भगत कुहाग्या सजणो, घणा पाखंडी नर था।

तंत्र-मंत्र सब सिद्ध होंगे अफवाह खूब फैलाई
पांच सात दस चेले बणगे जगाह खाण नै पाई
पूछ करावण आण लागगे, माणस और लुगाई
सोना चांदी नकद रूपये परोपर्टी खूब बणाई
तीन मंजल बणाई कोठी जित फूस का घर था।
वे भी भगत कुहाग्या सजणो, घणा पाखंडी नर था।

इसा लाग्गया रोग गात मैं रड़ा रड़ाके मरग्या
दवा लेई ना खुद के भाणे बजा बजाक मरग्या
आखिर मैं सब साथ छोड़कगे, चिला लिाके मरग्या
आप मर्‌या भक्तां की जिंदगी नरक बणाके मरग्या।
कहे जीत सिंह एक नंबर का पापी उत लफंडर था।
वे भी भगत कुहाग्या सजणो, घणा पाखंडी नर था।

भूत-प्रेत से डरी छात्राओं को तर्कशीलों ने कराया भयमुक्त

-मा अजायब जलालआना
9416724331

सिरसा जिला के एक आरोही स्कूल के छात्रावास में पिछले तीन दिनों से लगातार छात्राएं भय के माहौल में रह रही थीं। हुआ यूँ कि अचानक एक छात्रा की तबियत खराब होने लगी, उसने अपनी सहेली को किसी विशेष धार्मिक प्रार्थना करने के लिए कहा। उस द्वारा प्रार्थना सुनाने के थोड़ी देर बाद लड़की की तबियत और खराब होने लगी।

वह होस्टल में चीखने लगी अपने रूम से बाहर निकली दौड़ने लगी, जो हाथ में आया उसे जोर से फैंकने लगी और अपने हाथों से सिर को पकड़ती। आखिर वह फर्श पर गिर पड़ी, बेहोश हो गई। उसे काफी देर के लिए दौरा पड़ा। स्टाफ सदस्यों द्वारा उस लड़की को उठाकर चारपाई पर लेटाया गया। पूरे होस्टल में ये दृश्य देख सभी लड़कियां भयभीत हुईं। वह कुछ समझ नहीं पा रही थीं।

डॉक्टर बुलाया गया चौकअप के बाद उसे बुखार होने का पता चला। परन्तु वार्डन मैडम ने उससे जब प्यार से पूछा तो पीड़ित लड़की ने अपनी सहेली के मृत पिता के दिखाई देने की बात बताई गई।ऐसा कहने के बाद वह लड़की अब किसी से कोई बात भी नहीं कर रही थी,गुम-सुम रहने लगी, खाना पीना भी छोड़ दिया।

पूरा दिन उसकी निगरानी की गई उसके माता-पिता को बुलाया गया। लड़की अब भी ठीक नहीं थी। पिता द्वारा अपनी लड़की को मोबाईल पर किसी धार्मिक व्यक्ति से फिर प्रार्थना सुनवाई गई।

शाम को वह लड़की वार्डन मैडम के पास ही थी उसके शरीर में फिर अचानक अकड़न आई। उसने बैड पर पड़े कपड़ों को अपने हाथों से जोर से पकड़ना शुरू किया, हाथों पैरों में अकड़न आने पर मैडम ने उस लड़की के शरीर को अपने हाथों से जोर से पकड़ा। उसे काबू करने की कोशिश की गई ।जब जोर से झटका दिया तो वह थोड़ा आराम की स्थिति में वापिस लौटी।

मैडम द्वारा फिर पूछने पर वह अपनी सहेली के पिता के दिखने की बात को फिर दोहरा रही थी। जिसकी मौत 2 महीने पहले ही हुई थी।

अब यह बात होस्टल के साथ स्कूल में फैल चुकी थी। तरह तरह की अफवाहें फैलने लगी। लड़कियों में डर पैदा होने और उसे दूर करने के लिए ऐसी स्थिति में वार्डन द्वारा प्रिंसिपल को होस्टल में किसी धार्मिक आयोजन का प्रस्ताव रखा गया। उसी स्कूल के स्टाफ सदस्यों में से एक तर्कशील सदस्य होने के कारण तर्कशील सोसाईटी कालांवाली से सहयोग लेने का प्रस्ताव रखा गया जिसे तुरन्त मानते हुए प्रिंसिपल ने हमें बुलाया।

हमारी तीन सदस्यों वाली टीम में मा. शमशेर चोरमार, मनजीत कौर और इन पंक्तियों का लेखक भी साथ था। जब हम होस्टल में गये तो वास्तव में डर का माहौल था! लड़कियां डरी हुईं थीं क्योंकि हमने शुरू में ही उन बैठी छात्राओं से हाथ ऊपर उठाकर पूछा कि आपमें में से कितनी छात्राओं को डर लगता है? आधी से अधिक लड़कियों के हाथ ऊपर उठे हुए थे। हमारे द्वारा उन्हें आश्वासन दिया गया कि हम डर के बारे में दो घण्टों के बाद आपसे पुनः पूछेंगे तब तक आपका डर दूर भाग चुका होगा!

सबसे पहले अलग से उनकी वार्डन से पूरी कहानी को समझा गया। फिर उस लड़की को वार्डन रूम में बैठाकर बातचीत की गई। हमने निष्कर्ष निकाला जो उसकी पक्की सहेली थी, उसके पिता की मौत हो गई थी जिस कारण वह अब स्कूल नहीं आ पा रही थी, जिससे उसे सदमा लगा था और सहेली की यादों में खोई रहती थी।घटना वाले दिन उसे सिर दर्द हुआ उसने अपनी अन्य सहेली से धार्मिक प्रार्थना सुनी, उसके बाद अपनी मर्जी से कोई दर्द निवारक गोली भी ली...जिससे वह ज्यादा बेचैन

हुई और बुखार भी हुआ।

इसी अर्धचेतन अवस्था में उसने अपने आप को अजीब स्थिति में पाया और सहेली के पिता को भी देखने का एहसास किया। जिससे होस्टल की लड़कियों ने सुनी सुनाई बातों के आधार पर किसी भूत-प्रेत, ओपरी पराई का किया कराया समझ लिया जिससे पूरे होस्टल में डर का माहौल पैदा हुआ।

उस लड़की को सम्मोहन क्रिया से नींद में ले जाया गया और सहेली के मृत पिता को सदा-सदा के लिए उसकी यादों में से दूर भेजने की कल्पनाओं को साकार होते हुए अहसास करवाया गया। और उसके जल्दी ठीक होने, खुश रहने, डर न लगने के आदेश प्रदान किये गए व इसके लिए पक्का पहरा लगा होने आदि व मनोविज्ञान ढंग से लड़की में आत्मविश्वास पैदा करने के बाद... कुछ देर के लिए गहरी नींद में ले जाया गया..ये दृश्य उसकी वार्डन मैडम देखकर काफी प्रभावित हुई। थोड़ी देर बाद उस लड़की को विशेष आवाज से उठा गया और अब सब कुछ ठीक हो जाने का कहा गया।

अब होस्टल की सभी लड़कियों को एक साथ बैठाकर उन्हें बारी-बारी से ऐसे केस जो पहले हल किये थे, उनकी केस हिस्ट्री सुनाई गई। तथा उन्हें कैसे हल किया गया, साथ ही बाल मनोविज्ञान का कंसैप्ट समझाया गया। प्रेक्टिकली कुछ जादू के ट्रिक्स के माध्यम से भी सिद्ध किया गया।

चेतन, अवचेतन तथा अर्धचेतन मन की अवस्थाओं की व्याख्या की गई। लड़कियों ने सवाल भी किये लगातार 2 घण्टों तक चली इस सामूहिक बातचीत के बात अब दोबारा हमने डर से ग्रस्त उन लड़कियों से हाथ ऊपर उठाने की बात पूछी तो अब किसी का भी हाथ नहीं उठा! वह अब बहुत खुश नजर आ रही थीं, जोर जोर से तालियां बजा रही थीं। वार्डन मैडम बोली आपने बहुत अच्छे से समझा दिया..मुझे पूरी उमीद है अब मेरी बच्चियां नहीं डरेंगी! और न ही कोई धार्मिक आयोजन कराने की जरूरत होगी! अगर जरूरत हुई तो हम आपसे ही प्रोग्राम करवाएंगे....

उन्हें और काफी क्रिएटिव सुझाव देते हुए लड़कियों को भूत-प्रेत के काल्पनिक डर से मुक्त करते हुए हमने होस्टल से विदा ली...।

°°°

शब्द-सैनिकों से

-डा॰ रणजीत

जाओ!
ओ मेरे शब्दों के मुक्ति-सैनिको, जाओ!
जिन-जिन के मन का देश अभी तक है गुलाम
जो एकछत्र सम्राट स्वार्थ के शासन में पिस रहे
अभी है सुबह-शाम
घेरे हैं जिनको रूढ़ि--ग्रस्त चिन्तन की ऊंची दीवारें
जो बीते युग के संस्कारों की सरमायेदारी का शोषण
सहते हैं बेरोकथाम
उन सब तक नयी रोशनी का पैगाम आज पहुंचाओ

जाकर उनको इस क्रूर दमन की कारा से छुड़वाओ!
जाओ!
ओ मेरे शब्दों के मुक्ति-सेनिक, जाओ!

फेफडों के कैंसर से बचाएगी लाल मिर्च

वाशिंगटन-फेफड़ों के कैंसर को रोकने की दिशा में बड़ी कामयाबी मिली है। पाया गया है कि मिर्च को तीखा बानाने वाले एक तत्व से इस घातक बीमारी को फैलाने से रोकने में मदद मिल सकती है। कैंसर फैलने की इस प्रक्रिया को मेटास्टेसिस कहते हैं। अमेरिका की मार्शल यूनिवर्सिटी के शोधकर्ता जेमी फ्रायड ने कहा कि फेफड़ों का कैंसर और अन्य प्रकार के कैंसर आमतौर पर दिमाग, लीवर और हड्डियों तक फैल जाते हैं। जबकि मिर्च के नेचुरल कंपाउंड से लंग-कैंसर में मेटास्टेसिस से मुकाबला आसान होता हैं

-एजेंसी

गिरीश कारनाड से जुड़ी यादें

–रामचंद्र गुहा

उन्होंने कभी भी अपनी देशभक्ति और एक्टिविज़्म का प्रदर्शन नहीं किया। उनकी मर्यादा और उनकी सादगी ने इसकी इजाज़त नहीं दी। उन्होंने निर्देश दिया था कि उनकी मौत के बाद उनकी अंत्येष्टि राजकीय सम्मान से न की जाए।

गिरीश कारनाड एक महामानव थे। पिछले हफ्ते बंगलूरू में सोते समय उनका निधन हो गया। कारनाड ने चार तरह का करियर चुना और वह उन सबमें उत्कृष्ठ थे। वह तार्किक रूप से आजादी के बाद भारत के सर्वाधिक प्रभावशाली नाटककार थे, जिनका रचनात्मक योगदान अपने विषयगत और लौकिक श्रेणी में आश्चर्यजनक रूप से व्यापक था। उन्होंने आधा दर्जन शानदार नाटक लिखे; इनमें राजनीतिक दृष्टांत तुग़लक, सामाजिक सुधारवादी तलेदंड और गहरा हास्य व्यंग्य ओदकलू बिम्ब शामिल था। (मूलतः ये सभी कन्नड़ में लिखे गये और इनमें से सभी का आठवीं अनुसूची में शामिल प्रायः अधिकांश भाषाओं में प्रदर्शन हुआ। वह एक असाधारण अभिनेता थे, जैसा कि श्याम बेनेगल की शुरूआती हिंदी फिल्में में और पट्टाभिराम रेड्डी की कन्नड़ क्लासिक संस्कार में वह नज़र आए थे। वह एक कुशल निर्देशक थे और उन्होंने के.वी.पुत्तप्पा *और एस*.एस.भाइरप्पा के प्रमुख उपन्यासों पर फिल्में बनाईं। वह फिल्म एंड टेलीविज़न इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया, पुणे (एफटीआईआई) संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली और नेहरू सेंटर, लंदन के काबिल प्रशासक थे। एफटीआईआई में उन्होंने अन्य लोगों के साथ नसीरूद्दीन शाह, ओम पुरी और टॉम आल्टर को तराशा।

एक बार मैं बंगलूरू से मुंबई जा रहा था। कारनाड भी उसी फ्लाइट में मौजूद कुछ आगे की पंक्ति पर बैठे हुए थे। जैसे ही मैं उनके पास से गुज़रा तो वह कागज के दस्ते पर पेन से कुछ कर रहे थे। मैंने जब उनसे पूछा कि वह क्या कर रहे हैं तो उन्होंने बताया कि वह अपने नए नाटक के मराठी अनुवाद का प्रूफ देख रहे हैं। कारनाड के प्रति मेरे मन में पहले ही बहुत सम्मान था और इसके बाद वह और बढ़ गया। एक शख्स जिसकी मातृभाषा कोंकणी थी और जो कन्नड़ में लिखता था, धाराप्रवाह अंग्रेजी बोलता था और वह मराठी में भी पूरी तरह से सहज था।

कारनाड सिर्फ अनेक भाषाओं में दक्षता के कारण ही अन्य लेखकों और कलाकारों से अलग नहीं थे। मैं ऐसे किसी शख्स को नहीं जानता, जो इतनी उदारता के साथ अपने शरीर और अपनी आत्मा में भारतीय सभ्यता को लेकर इतना समृद्ध और परिपूर्ण हो और वह भी खुद को लेकर अतिरिक्त सावधानी बरते बिना। अपने जीवन और काम में वह उत्तर दक्षिण, लोक और शास्त्रीय, लोकगत और विद्वता में पूरी तरह से घुले मिले रहे। वह केसरबाई केरकर और मोहम्मद रफी के संगीत पर, बाला सरस्वती और फराह खान के नृत्य पर तथा बासवा और आंबेडकर के नैतिक दर्शन पर बोलते हुए भी इसी तरह से काफी सहज रहते थे। वह शेक्सपीयर और फिलिप लार्किन की अतंर्दृष्टि पर भी बात कर सकते थे।

सितंबर, 2017 में जब गौरी लंकेश की हत्या हुई थी, तब यह अफवाह उड़ी थी कि आतंकियों की हिटलिस्ट में अगले लेखक के रूप में गिरीश कारनाड हो सकते हैं। मैंने एक सुबह गिरीश को फोन किया और उनसे पूछा कि क्या मैं दोपहर में उनसे मिल सकता हूं। मेरे घर से उनकी दूरी तय करने एक घंटा लगता है। और उनकी प्रतिबद्धताओं को देखते हुए मैं उनसे मुलाकात के लिए अक्सर कई दिन पहले उन्हें मेल करता था। गिरीश ने अचानक आए मेरे फोन को सहजता से लिया और मुझे अपने घर बुलाया। मैं ड्राइव करता हुआ निर्जन शहर को

पार कर कारनाड के घर जे पी नगर पहुंचा। घर के बाहर लेखक की 'सुरक्षा' में तैनात वर्दीधारी गार्ड कुर्सी पर उनींदा बैठा हुआ था। जैसे ही मेरी कार वहां रुकी वह खड़ा हो गया और मुझे अंदर लेकर गया।

मैं वहां आधा घंटा बिताने के इरादे से गया था, लेकिन चार घंटे तक हम बात करते रहे। बेशक, हमने गौरी लंकेश के साथ-साथ अन्य मुद्दों पर भी बात की, जिसमें हमारे अपने जीवन के उतार-चढ़व भी शामिल थे। मैंने गिरीश से धारवाड़ के उनके शुरुआती दिनों के बारे में पूछा, तो उन्होंने देहरादून में मेरे बचपन के बारे में बात की। हम दोनों छोटे शहरों से महानगरों तक पहुंचे थे; बंगलूरू आने से पहले वह मुंबई गए थे और मैं दिल्ली। पहले बंगलूरू को हम एक कस्बे के तौर पर जानते थे और जब यहां हम रहने आए तो यह अच्छा खासा शहर बन चुका था। हमने अपने भाई-बहनों और ऐसे अन्य विषयों पर बात की जो अन्यथा हमारी साहित्यिक और बौद्धिक बातचीत का हिस्सा नहीं बनते। उनके भाई संगीतकार हैं, और मेरी बहन डॉक्टर हैं।

जब रात होने लगी तो मैं वापस जाने के लिए उठा। गिरीश चलकर मुझे मेरी कार तक छोड़ने आए। तब वहां सिक्योरिटी गॉर्ड कहीं नहीं था। गिरीश ने मुझे अचानक हुए मेरे प्रवास के लिए धन्यवाद दिया और कहा कि उन्हें और उनकी डॉक्टर पत्नी सारस को अच्छा लगा। मैंने कहा, 'मुझे लगता है कि एक ही शहर में रहने वाले दो लेखकों को एक दूसरे की जरूरत तब पड़ी जब एक साथी लेखक की हत्या हो गई।

सांस से संबंधित बीमारी के कारण कारनाड खुद भी काफी अस्वस्थ थे। उसके बाद आई जनवरी में वह धारवाड़ गए थे और वह जानते थे कि यह उस शहर की उनकी अंतिम यात्रा थी, जहां वह बड़े हुए, पढ़ाई की और अपने शुरुआती नाटक लिखे थे। उन्होंने मुझे साथ चलने के लिए कहा था। मैं उनके साथ गया। इस तरह मुझे गिरीश कारनाड की अपने गृह नगर की अंतिम यात्रा में जाने का दुर्लभ अवसर मिला। लेकिन यह अवर्णनीय रूप से दुखी करने वाला था। धारवाड़ में सुभाष रोड पर स्थित लक्ष्मी भवन की सीढ़ियां चढ़ते हुए मैं उनके साथ उनके लंबे समय तक प्रकाशक रहे मनोहर ग्रंथ माला के कार्यालय भी गया, जो वहां का उनका अंतिम प्रवास था।

कारनाड में उच्च स्तर की सामाजिक चेतना थी और अपने देश के प्रति उनमें गहरा प्रेम था। लेकिन उन्होंने कभी भी अपनी देशभक्ति और एक्टिविज़म का प्रदर्शन नहीं किया। उनकी मर्यादा और उनकी सादगी ने इसकी इजाज़त नहीं दी। उन्होंने निर्देश दिया था कि उनकी मौत के बाद उनकी अंत्येष्टि राजकीय सम्मान से न की जाए। वह जानते थे कि भांति-भांति के राजनेता वहां आना चाहेंगे और उनके पार्थिव देह के साथ तस्वीरें खिंचवाएंगे और एक ऐसे शख्स के साथ खुद को जोड़कर अपना पाप धोने की कोशिश करेंगे जो कि महान कन्नड़ लेखक ही नहीं था, बल्कि अपने युग का महान कन्नदिगा (महान सपूत) भी था। अवसरवादियों और कट्टरपंथियों का साहस के साथ सामना करने वाले कारनाड को एक एक्टिविस्ट या पब्लिक इंटलैक्चुअल के रूप में देखना उन्हें पूरी तरह न समझ पाने और उनका कद कम करने जैसे है। इसके बजाय हमें उन्हें एक महान नाटककार, शानदार अभिनेता और एक गंभीर शिष्ट व्यक्ति के रूप में याद करना चाहिए जिन्होंने भारतीय संस्कृति के बारे में उतना ज्ञान तो विस्मृत कर दिया होगा जितना कि भारतीय संस्कृति के आज के रक्षक जानते भी न हों।

..अमर उजाला से साभार

(रामचंद्र गुहा जाने-माने इतिहासकार हैं)

भूल-सुधार

तर्कशील पथ के मई, 2019 के अंक में 42 पृष्ठ पर छपी कविता 'पूरी दुनिया एक परिवार हो' में कविता गलती से 'कात्यायनी' के नाम से छप गई है। वास्तव में इस कविता के रचनाकार डा. रणजीत है। भूल के लिए खेद है।

-संपादक

मैडम क्यूरी

-विनिता सहगल

पोलैंड के एक छोटे से कस्बे में एक गरीब लड़की रहती थी उसका नाम मानिया सकोलो डू विस्का था वह ट्यूशन पढ़ाकर गुजर बसर करती थी

19 बरस की उम्र में वह एक अमीर खानदान की 10 साल की बच्ची को पढ़ाती थी बच्ची का बड़ा भाई उसमें दिलचस्पी लेने लगा। वह भी उसकी तरफ आकर्षित हो गई। चुनांचे दोनों ने शादी करने का फैसला किया। लेकिन जब लड़के की मां को पता चला तो उसने आसमान सर पर उठा लिया। उसने मानीया को कान से पकड़ा और हाल में ला खड़ा किया। उसने आवाज देकर सारे नौकर जमा किए और चिल्ला कर कहा-देखो यह लड़की जिसके पास पहनने के लिए सिर्फ एक फराक है जिसके जूतों के नीचे छेद है और जिसको 24 घंटे में सिर्फ एक बार अच्छा खाना नसीब होता है, वह भी हमारे घर से यह लड़की मेरे बेटे की बीवी बनना चाहती है। यह मेरी बहु कहलाने की ख्वाहिश पाल रही है। तमाम नौकरों ने कह कहा लगाया और खातून दरवाजा बंद कर के अंदर चली गई।

मानीया को यह महसूस हुआ जैसे किसी ने उसके ऊपर तेजाब की बाल्टी उड़ेल दी हो। वह तौहीन के शदीद एहसास में गिरफ्तार हो गई। और उसने उसी हाल में खड़े-खड़े फैसला किया कि वह जिंदगी में इतनी इज्जत, इतनी शौहरत कमाएगी की पूरा पोलैंड उसके नाम से पहचाना जाएगा। यह 1891 था।

वह पोलेंड से पेरिस आ गई। उसने यूनिवर्सिटी में दाखिला लिया और फिजिक्स पढ़ना शुरू कर दी। वह दिन में 20 घंटे पढ़ती थी। उसके पास पैसा कुछ भी नहीं था। जो कुछ जमा पूंजी थी वह उसी में गुज़र-बसर करती थी। वह रोज सिर्फ एक सीलिंग खर्च करती थी। उसके कमरे में बिजली गैस और कोयले की अंगेठी तक नहीं थी। वह बर्फीले मौसमों की रातें कंपकपा कर गुजारती थी जब सर्दी बर्दाश्त से बाहर हो जाती थी तो वह अपने सारे कपड़े निकालती थी। आधे बिस्तर पर बिछा थी और आधे ओढ़ कर लेट जाती थी।फिर भी गुजारा ना होता तो वह अपनी सारी किताबें यहां तक कि अपनी कुर्सी तक अपने ऊपर गिरा लेती थी। पूरे 5 साल उसने डबल रोटी के सूखे टुकड़ों और मक्खन के सिवा कुछ ना खाया। कमजोरी का यह आलम था कि वह बिस्तर पर बैठे-बैठे ही बेहोश हो जाती थी लेकिन जब होश आता था तो वह अपनी बेहोशी को नीद समझ कर खुद को तसल्ली देती थी।

वह एक रोज क्लास में बेहोश हो गई। डॉक्टर ने उसका चेकअप किया। करने के बाद कहा आपको दवा के बजाय दूध के एक गिलास की जरूरत है।

उसने यूनिवर्सिटी में ही पायरी नाम के एक साईसदान से शादी कर ली थी। वह साईसदान भी उसकी तरह गरीब ही था।शादी के वक्त दोनों का कुल जमा पूंजी दो साईकिल थी। वह गरीबी के इसी आलम के दौरान पीएचडी तक पहुंच गई। मानिया ने PHD के लिए बड़ा दिलचस्प मौजू चुना था। उसने फैसला किया की वह् दुनिया को बताएगी कि यूरेनियम से रोशनी क्यों निकलती है। यह एक मुश्किल ही नहीं नामुमकिन काम था लेकिन वह उस पर जुट गई।

तमाम तजुर्बे किए। उसी दौरान उसने एक ऐसा आंसर दरियाफ्त कर लिया जो यूरेनियम के मुकाबले में 2000000 गुना रोशनी पैदा करता है और उसकी किरनें लकड़ी पत्थर तांबे और लोहे गर्ज कि दुनिया की हर चीज से गुज़र जाती हैं। उसने उसका नाम रेडियम रखा। यह साईस में एक बहुत बड़ा धमाका था।

लोगों ने रेडियम का सबूत मांगा। मानिया और पायरी ने एक खस्ताहाल घर लिया, जिसकी न

छत सलामत थी और ना ही फर्श और वह 4 साल तक किसी घर में लोहा पिघलाते रहे। उन्होंने तनो-तन्हा 8 टन लोहा पिघलाया और उसमें से मटर के दाने के बराबर रेडियम हासिल की। यह 4 साल उन लोगों ने गर्मी हो या सर्दी अपने-अपने जिस्मों पर झेलीं। भट्टी के जहरीले धुएं ने मानिया के फेफड़ों में सुराख कर दिया लेकिन वह काम में जुटी रही उसने हार ना मानी।

पूरी साइंस उसके कदमों में झुक गई। यह रेडियम कैंसर के लाखों-करोड़ों मरीजों के लिए जिंदगी का पैगाम लेकर आया। आज हम जिन किरणों का इलाज कहते हैं यह मानिया की ही खोज थी।

लड़की दुनिया की वाहिद साइंसदान थी जिसे जिंदगी में दो बार नोबेल प्राइज मिला, जिसकी जिंदगी पर 30 फिल्में और सैकड़ों किताबें लिखी गईं और जिसकी वजह से आज साइंस के स्टूडेंट पोलैंड का नाम आने पर सर से टोपी उतार देते हैं।

जब दुनिया ने मैडम क्यूरी को उसकी ईजाद के बदले अरबों डॉलर की पेशकश की तो जानते हो उसने क्या कहा? उसने कहा कि मैं यह दरियाफ्त सिर्फ उस कंपनी को दूंगी जो पोलैंड की एक बूढ़ी औरत का मुफ्त इलाज करेगी। जी हां, वह अमीर पोलिश औरत जिसने कभी क्यूरी को कान से पकड़ कर बाहर निकाल दिया था, वह उस वक्त कैंसर के मर्ज में मुब्तिला हो चुकी थी और वह उस वक्त बिस्तर पर तड़प रही थी।

रेशनलिस्ट सोसायटी उड़ीसा की त्रैमासिक पत्रिका 'ह्यूमनिस्ट'

यहां 'हेतुवादी चतन' देश भर में चलते वैज्ञानिक चेतना के साथ अंधविश्वास, अज्ञानता, सामाजिक ना बराबरी और अन्य कुरीतियों के विरुद्ध प्रचार प्रसार में लगी विभिन्न संस्थाओं द्वरा प्रकाशित पत्रिकाओं की जानकारी तर्कशील के पाठकों के लिए प्रस्तुत करने की कड़ी में इस बार पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं उड़िया पत्रिका 'ह्यूमनिस्ट'।

-हरचंद भिडर/गुरमीत अम्बाला

ह्यूमनिस्ट -रेशनलिस्ट सोसायटी उड़ीसा की त्रैमासिक पत्रिका है जो उड़िया भाषा मे निकाली जाती है। पत्रिका के सम्पादक प्रो.धनेश्वर शाहू जी हैं। संस्था का मानना है कि लोगों को समाज की मूल आवश्यक ताओ से अवगत कराना और तर्कशीलता का संदेश देने के लिए तर्कशील साहित्य की बहुत जरूरत है, इसी लिए पत्रिका ह्यूमनिस्ट का प्रकाशन किया जाता है। भुवनेश्वर से उड़िया भाषा मे छपने वाली यह त्रेमासिक पत्रिका संस्था की मुख्य आवाज़ है। पत्रिका का प्रकाशन लगभग एक हज़ार की संख्या में है इसके पाठक वर्ग में विद्यार्थियों, नौजवानों, अध्यापकों सहित समाज के अन्य वर्ग भी शामिल हैं। पत्रिका में तर्कशीलता, विज्ञान के बारे में जानकारी के साथ ही साहित्यिक कहानी, कविताएं आदि भी छापे जाते है। पत्रिका में साम्प्रदायिकता , जातिवाद पर लेख छापे जाते हैं। राज्य में फैले अंधविश्वास, अवैज्ञानिक रीति रिवाज को खत्म करने के लिए अभियान चलाया जाता है। पत्रिका एंव संस्था समाज को सामाजिक रूप से कमजोर करने, साम्प्रदायिकता फैलाने वाली शक्तियों के विरोध में सदा सक्रिय रहती है। इसका मन्तव्य इतिहास के इस दौर में संविधान एंव धर्म निरपेक्षता, लोकतंत्र को बचाने के लिए लोगो को जागरूक करना है। फेडरेशन आफ इंडियन रेशनलिस्ट एसोसिएशन (फिरा) के एक संगठन के रूप में ओडिशा में 30 जिलों में इकाइयों के रूप में कार्यरत है। जिनके माध्यम से पत्रिका कार्यकर्ताओ, पाठकों तक पहुंचती है। वैज्ञानिक चेतना एंव सामाजिक जागरूकता को समाप्त यह पत्रिका लगातार अपनी लोकप्रियता को बढ़ा रही है। संस्था के कार्यकर्ता राज्य भर में तर्कशीलता को समर्पित सेमिनारों का आयोजन करते रहते हैं। संस्था का मन्तव्य जाति-पाती, लिग भेद, धर्म के नाम पर होने वाले भेदभावों पर प्रहार करना है। जितना ज्यादा साहित्य लोगों तक जाएगा लोग वैज्ञानिक चेतना से लैस होंगे। संस्था अपनी पत्रिका को द्विमासिक, मासिक करने के लिए यत्नशील है।

सांपों के बारे अंधविश्वास

हमारे समाज में सांपो को लेकर कई तरह के अन्धविश्वास और भ्रम फैले हुए है। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

कि सांप दूध पीते है

सांपो से जिुडी हुई हमारी प्रथम मान्यता यह है कि सांप दूध पीते है। यहाँ तक की हम नाग पंचमी और अनेक अवसरो पर उन्हे दूध पिलाते भी है। तो क्या यह वैज्ञानिक द्रष्टिकोण से सही है? इसका जवाब है, नहीं। जीव विज्ञान के अनुसार सांप पूरी तरह से मांसाहारी जीव है, ये मेंढक, चूहा, पक्षियों के अंडे व अन्य छोटे-छोटे जीवों को खाकर अपना पेट भरते हैं। दूध इनका प्राकृति आहार नहीं है। सपेरों को जब भी सांप को दूध पिलाना होता है तो वो उन्हे भूखा प्यासा रखते है। भूखे प्यासे सांप के सामने जब दूध लाया जाता है तो वो इसे पी लेता है लेकिन यह कभी कभी सांप कि मौत का कारण भी बन जाता है क्योकि कई बार दूध सांप के फेफड़ों में घुस जाता है जिससे उसे निमोनिया हो जाता है।

-कि सांप अपने साथी कि मौत का बदला लेते हैं।

हमारे समाज में ऐसी मान्यता है कि यदि कोई मनुष्य किसी सांप को मार दे तो मरे हुए सांप की आंखों में मारने वाली की तस्वीर उतर आती है, जिसे पहचान कर सांप का साथी उसका पीछा करता है और उसको काटकर वह अपने साथी की हत्या का बदला लेता है। यह सांपो से जुड़ा एक ऐसा अंधविश्वास है जिसका हमारे यहाँ कहनियों और फिल्मो मे जमकर इस्तमाल हुआ है।

कि सांप बीन कि धुन सुनकर नाचते है

खेल-तमाशा दिखाने वाले कुछ लोग सांप को अपनी बीन की धुन पर नचाने का दावा करते हैं जबकि ये पूरी तरह से अंधविश्वास है क्योंकि सांप के तो कान ही नहीं होते। सपेरे की बीन को इध ार-उधर लहराता देखकर नाग उस पर नजर रखता है और उसके अनुसार ही अपने शरीर को लहराता है और लोग समझते हैं कि सांप बीन की धुन पर नाच रहा है।

कि सांप मणिधारी होते है

सांपो से जुडी एक अन्य मान्यता यह है कि कई सांप मणिधारी होते है यानी इनके सिर के ऊपर एक चमकदार, मूल्यवान और चमत्कारी मणि होती है। ये मणि यदि किसी इंसान को मिल जाये तो उसकी किस्मत चमक जाती है। जीव विज्ञान के अनुसार यह मान्यता भी पूरी तरह से अंधविश्वास है क्योंकि दुनिया में अभी तक 3000 से भी ज्यादा प्रजातियों के करोडो सांप पकडे जा चुके है लेकिन किसी के पास भी इस प्रकार कि कोइ मणि नही मिली है। तमिलनाडु के इरुला जनजाति के लोग जो सांप को पकडने में माहिर होते हैं वे भी मणिधारी सांप के होने से इंकार करते हैं।

कि कुछ सांपो के दोनो सिरों पर मुंह होते हैं

कभी कभी जेनेटिक चेंज कि वजह से ऐसे सांप तो पैदा हो जाते हैं जिनके एक सिर की जगह दो सिर होते है ऐसा इन्सान सहित इस धरती के किसी भी प्राणी के साथ हो सकता है। लेकिन ऐसा कोई भी सांप नही होता है जिसके दोनो सिरो पर मुंह होते है। होता यह है की कुछ सांपों की पूंछ नुकीली न होकर मोटी और ठूंठ जैसी दिखाई देती है। चालाक सपेरे ऐसे सांपों की पूंछ पर चमकीले पत्थर लगा देते हैं जो आंखों की तरह दिखाई देते हैं और देखने वाले को यह लगता है कि इस सांप को दोनों सिरों पर दो मुंह हैं।

कि कुछ सांपो की मुंछे होती है

सांपो कि एक प्रजाति 'हॉर्नड वाईपन' के सींग तो होते है पर सांप कि किसी भी प्रजाति के मुंछे नही होती हैं क्योकि सांप सरीसृ (रेप्टाइल) वर्ग के जीव हैं, इनके शरीर पर अपने जीवन की किसी भी अवस्था में बाल नहीं उगते। होता यह है की सांप

को कोई खास स्वरूप देने पर अच्छी कमाई हो सकती है इसी लालच में सपेरे घोड़े की पूंछ के बाल को बड़ी ही सफाई से सांप के ऊपरी जबड़े में पिरोकर सिल देता है। इसके अलावा जब कोई सांप अपनी केंचुली उतारता है तो कभी-कभी केंचुली का कुछ हिस्सा उसके मुंह के आस-पास चिपका रह जाता है। ऐसे में उस सांप को देखकर मुंछों का भ्रम हो सकता है।

कि उड़ने वाले सांप होते है

वैसे तो सांपो की किसी भी प्रजाति मे उडने का गुण नही होता है। लेकिन भारत और दक्षिण पूर्वी एशिया के वर्षा वनों (रेन फारेस्ट) में एक साँप पाया जाता है जिसका नाम ही फ्लाइंग स्नेक है। हालांकि इनमे भी इनके नाम के अनुरुप उड़ने का गुण नहीं होता है। लेकिन इनमे अन्य सांपो से अलग एक विशेष क्वालिटी पायी जाती है। ये फ्लाइंग स्नेक अपना अधिकांश समय वर्षा वनों के ऊंचे ऊंचे पेडों पर बिताते है। इन सांपो को जब एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर जाना होता है तो यह अपने शरीर को सिकोड़कर छलांग लगा देते है। जब ये सांप उछलकर एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर जाते हैं तो ऐसी प्रतीत होता है कि जैसे ये उड़ रहे हों। हालांकि इस तरह से यह 100 मीटर तक की दूरी तय कर लेते है।

कि कुछ सांप इच्छाधारी होते हैं

एक और बहुप्रचलित मान्यता जिसका कि हुमारे साहित्य और फिल्मौं मे जमकर प्रयोग हुआ है वो यह है की कुछ सांप इच्छाधारी होते हैं यानी वे अपनी इच्छा के अनुसार अपना रूप बदल लेते हैं और कभी-कभी ये मनुष्यों का रूप भी धारण कर लेते हैं, ये भी एक मान्यता है जो कि पूरी तरह से गलत है। जीव विज्ञान के अनुसार इच्छाधारी सांप सिर्फ मनुष्यों का अंधविश्वास और कोरी कल्पना है, इससे ज्यादा और कुछ नहीं।

कि सांपों कि आंखो मे सम्मोहन शक्ति होती है

कुछ लोग मानते हैं कि सांप की आंखों में किसी को भी सम्मोहित करने की शक्ति होती है यानी सांप जिसकी भी आंखों में देख लेता है वह मनुष्य या अन्य कोई प्राणी उस सांप के आदेश का पालन करता है। यह भी अंधविश्वास और कोरी कल्पना के अलावा कुछ नहीं है।

कि सभी सांप अंडे देते है

ऐसा नही है। धरती पर पाए जाने वाले सांपो में से 70 प्रतिशत सांप अंडे देते है पर बाकि की 30 प्रजातिया, इंसानो की तरह सीधे बच्चे पैदा करते है। *(साभार)*

लघु-कथा

पूंजीपति और मंदिर-मस्जिद

-वीरेंदर भाटिया

पूंजीपति ने बस्ती का कुछ हिस्सा खरीद कर एक होटल बनाया ! होटल अच्छा चलने लगा, लेकिन बस्ती वालो की रौशनी, रास्ता, पानी की निकासी सब रुक गए! बस्ती वाले सरकार के हर दरवाजे पर गए लेकिन सरकारी कारिंदो की हिम्मत नहीं थी कि पूंजीपति को कुछ कह पाते!

बस्ती वालों ने तरकीब निकाली, हिन्दुओं ने एक पुरानी ईमारत को मंदिर घोषित कर दिया और मुसलमानों ने एक बुर्ज को मस्जिद मान लिया! दोनों ने लाऊडस्पीकर टांग दिए, पूरा दिन नमाज और आरती फुल स्पीड में बजने लगे ! होटल में रुकने वाले शोर से परेशान होने लगे और होटल की सेल एकाएक गिर गयी!

पूंजीपति के पास अब कोई इलाज ना था। उसने सरकारी कारकुन्नों के पास शिकायत की लेकिन धर्म के खिलाफ भी कौन अफसर उठ जाए !

गरीब और अमीर में अब ठन गयी थी ! पूंजीपति के पास लेकिन बहुत सारे अस्त्र होते हैं जिनमें पूँजी का ईंधन भरा जाता है! उसने बस्ती के एक सफेदपोश को खरीद लिया और लड़ाई को अमीर-गरीब की बजाय हिन्दू-मुसलमान की बना दिया ! बस्ती के बड़े बुजुर्ग चिल्लाते रहे कि हमारा आपस में कोई झगड़ा नहीं है। तुम आपस में मत लड़ो, तुम्हारी लड़ाई पूंजीपति से है जिसने तुम्हारी जिंदगी रोक दी है! लेकिन जैसे-जैसे पूँजी का दखल बढ़ता वैसे वैसे बस्ती में तनाव बढ़ जाता!

बहुत समय हुआ, होटल का मालिक मर गया! सफेदपोश भी मर गया! बड़े बुजुर्ग भी मर गए तमाम ! लेकिन उस बस्ती में हिन्दू-मुस्लिम तनाव आज भी जिन्दा है!

हमारा और अन्य सजीवों का शरीर कैसे बनता है ?

'शारद कोकास'

आपसे यदि पूछा जाए कि सजीवों के कुछ प्रमुख लक्षण बताइये तो आप क्या कहेंगे ? सजीव वही है जो जीवित है या जिसके पास एक जीवित देह है फिर पूछा जाये कि जीवित देह में क्या होता है तो आप कहेंगे, एक सिर, दो हाथ, दो पाँव, दो आँखें, दो कान, एक दिल, एक पेट वगैरह वगैरह और बेशक एक दिमाग भी। मेरे जैसे कुछ कविनुमा लोग इसे कुछ और ढंग से कहेंगे- मसलन उसकी कटीली आँखें हैं , पत्थर जैसा दिल है, नागिन जैसी जुल्फें है, कूएँ जैसा पेट है, सूअर जैसा मुँह है, आदि आदि। लेकिन माफ कीजिये मैं सिर्फ मनुष्यों के बारे में थोड़े ही पूछ रहा हूँ । मेरा आशय तो हर उस शरीर से है जिसे हम सजीव कहते हैं। सजीवों में मनुष्यों से लेकर तमाम कीड़े- मकोड़े और पशु-पक्षी, वनस्पति आदि आते हैं। बिलकुल सही फरमाया आपने लेकिन इस शरीर की वैज्ञानिक परिभाषा जानना भी तो जरूरी है ।

ब्रह्माण्ड, सूर्य, पृथ्वी के जन्म लेने के बाद इस क्रम में यह तो आपने अपने स्कूल की किताबों में भी पढ़ा होगा कि या जीवन कैसे आया। चलिए एक बार और दोहराते हैं। पृथ्वी पर सबसे पहले कई गैसें थीं कार्बन डाईक्साइड, अमोनिया, नाइट्रोजन हाइड्रोजन, जलवाष्प आदि। अल्ट्रा वायलेट किरणों से इन गैसों के अणुओं में कार्बन यौगिक बने फिर इनसे डी.एन.ए. और प्रोटीन युक्त कोशिकाएँ, फिर एक कोशिकीय जीव, फिर बहुकोशिकीय जीव अर्थात सजीव। यह वाक्य तो आपको रट गया होगा कि मनुष्य एक बहुकोशिकीय जीव है इस तरह बना सजीवों का यह शरीर सजीवों के लिए जो सबसे जरूरी चीज होती है वह उनका शारीरिक संगठन और उसमे उपस्थित जीवद्रव्य 'जीवद्रव्य क्या है'

लाखों कोशिकाओं या सेल्स से बने मनुष्य के शरीर में जीवद्रव्य कोशिका के भीतर उपस्थित होता है। सजीव की कोशिका की झिल्ली के भीतर स्थित सम्पूर्ण पदार्थ को जीवद्रव्य कहते हैं । समस्त सजीवों का शरीर जीव द्रव्य से ही बनता है। इस जीव द्रव्य में मुख्यतः कार्बनिक व अकार्बनिक ठोस पदार्थ, प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेटस, न्यूक्लीइक एसिड ,लवण तथा जल होता है। ये सभी यौगिक निर्जीव तत्वों से बनते हैं। यह पारदर्शी, चिपचिपा, रवेदार, जेलीनुमा, अर्धतरल पदार्थ होता है। निर्जीव तत्वों से बने इन यौगिकों के एक विशेष तरह के अणु संग्रह में जीवन होता है। इन्हें केवल इलेक्ट्रोन सूक्ष्मदर्शी से देखा जा सकता है ।

आपने किसी निर्माणाधीन भवन के बाहर का दृश्य देखा है ? कहीं ईट का ढेर, कहीं गिट्टी का, कहीं रेत का, कहीं सीमेंट, कहीं लोहे की छड़। यह सब सामग्री जब तक एक निश्चित अनुपात और निश्चित क्रम में नहीं उपयोग में लाई जाती तब तक भवन नहीं बनता। सामग्री वही होती है लेकिन उसे अलग अलग तरह से जोड़कर भवन भी अलग अलग डिजाइन के बनाते हैं। कहीं हम जैसे मध्यवर्गीय का छोटा सा मकान, कहीं किसी पूंजीपति की भव्य इमारत । ऐसा ही कुछ जीवद्रव्य के साथ है, जीवद्रव्य के भी अनेक प्रकार के जोड़े होते हैं यानी सेट, जिनसे अलग अलग तरह के प्राणियों के अलग अलग शरीर बनते हैं। यह उनका शारीरिक संगठन कहलाता है।

'शारीरिक संगठन किसे कहते हैं'

शारीरिक संगठन यह सजीवों का महत्वपूर्ण लक्षण है । एक निश्चित शरीर का निर्माण करने वाला जीव द्रव्य छोटे छोटे टुकडों में कोशिका कला से घिरकर शरीर की वह इकाई बनाता है जिसे कोशिका कहते हैं । कुछ जीवों का शरीर एक कोशिका से बना होता हैं । ये एक कोशिकीय जीव कहलाते है जिसे अमीबा, वालवक्स आदि । मनुष्य, अन्य जंतु व पौधे जो अनेक कोशिकाओं से बनते हैं 'बहुकोशिकीय जीव' कहलाते हैं। इस तरह असंख्य कोशिकाओं से मिलकर बनते हैं 'ऊतक'। विभिन्न ऊतकों से मिलकर बनते हैं अंग। कई अंगों को मिलाकर बनता है एक तंत्र। तंत्रों के संगठन से निर्माण होता है शरीर। इस तरह बने हुए शरीर की एक निश्चित पहचान होती है जैसे मनुष्य का शरीर, भैंस, हाथी, कुत्ता, गाय, मख्खी और गधे आदि का शरीर। ऐसे ही तरीके से बनता है एक पौधा। पौधे की भी एक निश्चित आकृति होती है जिससे हमे पहचानते हैं यह पीपल का पेड़ है या आम का या बबूल का ।

■

मानसिक थकान

न्यूरसथीनिया (Neurasthenia)

जब थक जाता है मन, तब टूट जाता है तन

- डा० दिव्य मंगला

इंसान जीवन में आ रही छोटी-बड़ी बाधाओं या फिरआपसी संबंधों में तनाव आदि को लेकर किसी-न-किसी समस्या से घिरा ही रहता है। लगातार चलती यह समस्याएं मानसिक-तनाव को जन्म देती हैं। यही मानसिक-तमनाव आगे चलकर 'मानसिक थकान' नामक मनोरोग का कारण बनता है। मेडिकल की भाषा में इस समस्या को 'न्यूरसथीनिया' के नाम से जाना जाता है।

मानसिक थकान के लक्षण

शारीरिक लक्ष्णः

★ शरीर में थकावट

★ बदहजमी, कब्ज याफिर दस्त

★ शरीर में दर्द, मांसपेशियों में खिंचाव

★ जोड़ों में दर्द

★ सिरदर्द, चक्कर आना

★ दिल का तेज धड़कना

★ जरूरत से ज्यादा पसीना आना

★ ऊर्जाविहीन महसूस होना

★ मुंह में सूखापन

★ कमर-दर्द

★ बैठे-बैठे तलबी सांसें भरतना

मानसिक लक्षण

★घबराहट

★ध्यान शक्ति में कमी

★कमजोर याददाश्त

★यौन समस्याएं-जैसे यौन-इच्छा में कमी

★हाथों-पैरों में अजीब-सी हरकतें महसूस होना।

★नींद की कमी।

★नकारात्मक नज़रिया

★चिड़चिड़ापन।

★दिमाग में भारीपन

मानसिक थकान से ग्रस्त व्यक्तियों की यह समस्या लंबे समय तक पता नहीं चलती, क्योंकि रोगी की शारीरिक जांचों में सब कुछ सामान्य पाया जाता है। फैमिली डॉक्टर से अकसर यही राय मिलती है-'आपको कुछ नहीं है, सभी रिपोर्ट ठीक हैं, थोड़ा टेंशन कम रखा करो', परंतु ऐसा क ने से समस्या हल नहीं होती।

हर व्यक्ति में मानसिक थकान के अलग-अलग लक्षण हो सकते हैं। ये लक्षण अन्य शारीरिक व मानकसक रोगों में भी हो सकते हैं।

कारणः

निम्नलिखित कारणों की वजह से लगातार बढ़ता मानसिक दबाव (तानाव) तेजी से लोगों को मानसिक थकान का शिकार बना रहा है-

★आगे निकलने की दौड़

★जटिल होता समाज

★परिवारों में आपसी कलह व विघटन

★अपने आप से जरूरत से ज्यादा आशाएं रखना व अपनी क्षमता से ज्याइदा काम करना।

★बढ़ता पूंजीवाद औद्योगिकीकरण।

★व्यक्ति पर बढ़ता आर्थिक, सामाजिक व सपारिवारिक दबाव।

मानसिक थकान की समस्या के लक्षण कुछ-कुछ डिप्रेशन की बीमारी से मिलते हैं, परंतु मानसिक थकान से ग्रस्त व्यक्ति के मन में डिप्रेशान के रोगी की तरह उदासी पैदा नही होती। इसी लक्षण के आध ार पर मनोचिकित्सक दोनों रोगों में अंतर करता है।

बढ़ते मानसिक दबाव के चलते कुछ लोग तो अपने आपको परिस्थितियों के अनुसार ढाल पाने में सक्षम महसूस कर रहे हैं जिसक कारण वे कामयाब भी हो रहे हैं। परंतु कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कि अपनी समस्याओं को सुलझ्ााने में असमर्थ हैं और तरह-तरह की मानसिक समस्याओं से ग्रस्त हो रहे हैं, जिनमें

मानसिक थकान एक प्रमुख समस्या है। यहां पर एक बात और ध्यान देने वाली है। अकसर लोग मानसिक तनाव व मानसिक थकान को एक ही चीज समझ लेते हैं। वास्तव में तनाव एक स्थिति है और थकान एक रोग।

कैसे पैदा होता है मानसिक थकान ?

जरूरत से ज्यादा बढ़ता मानसिक तनाव, दिमाग की कोशिकाओं में न्यूरोट्रांसमीटर नामक रसायनों की कमी पैदा करने लगता है, जो कि आगे चलकर मानसिक थकान का कारण बनता है। इसके अलावा दूसरे हारमोंन्स में आ रही गड़बड़ भी इसका एक कारण है।

जिंदगी में मनसिक रूप से तंदरुस्ती रहले के लिए थोड़े मानसिक तनाव का बने रहना जरूरी है अन्यथा दिमाग बिन इस्तेमाल की गई मशीन की तरह जंग पकड़ने लगता है। मशीन को ठीक हालत में रखने के लिए उसे समय-समय पर चलाना जरूरी होता है। इसी प्रकार दिमाग को चुस्त-दुरुस्त रखने के लिए एक निश्चत सीमा तक मानसिक तनाव को होना जरूरी है। इस तनाव को लाभदायक आवश्यक तनाव कहा जासकता है। परंतु जब यही तनाव जरूरत से ज्यादा बढ़ने लगे या फिर अपनी सीमा लांघने लगे, तब मानसिक परेशानियां पैदा होनी शुरू हो जाती हैं।

मानसिक तनाव से मुक्तिः

मानसिक थकान के लक्षण्ण दिखाई देने पर व्यक्ति को सबसे पहले डॉक्टरी जांच करानी चाहिए ताकि इन लक्षणों के पीछे किसी अन्य रोग की मौजूदगी का पता लगाया जा सके।

एक बार पता चलने पर कि पैदा हुए लक्षण मानसिक थकान की वजह से ही हैं, तब नीचे दिए उपाय इस्तेमाल कर व्यक्ति इस समस्या से मुक्ति पा सकता है।

★निश्चलता का अभ्यासः यह क्रिया तानावग्रस्त लोगों में बहुत ही फायदेमंद सिद्ध हो सकती है।

★श्वास क्रियाएंः तनाव की स्थिति में श्वास क्रिया तेज व बेतरतीब हो जाती है। व्यक्ति पेट की जगह, छाती की मांसपेशियों का ज्यादा उपयोग करने लगता है। आराम की अवस्था में हम सांस लेते समय, छाती की जगह, उदर की मांसपेशियों का ज्यादा इस्तेमाल करते हैं। तनाव की स्थिति में व्यक्ति श्वास लेते समय छाती पर ज्यादा जोर डालने लगता है। श्वास क्रियाओं में मुख्य तौर पर छाती की बजाय उदर से श्वास लेने की विधि सिखाई जाती है, जो कि तनाव के समय स्थिति को नियंत्रित रखने में मदद करती है। ये क्रियाएं तानाव को दूर कर शरीर को तरोताजा व ऊर्जावान बनाए रखती है।

★ व्यायाम व ध्यानः एरोबिक एक्सरसाइज जैसे 15-20 मिनट की हलकी दौड़ या जोगिंग, तनाव के दुष्प्रभावों को दूर करने में सहायक होती है। मेडिटेशन व ध्यान की अन्य क्रियांए भी निश्चत तौर पर आाराम पहुंचाती हैं, परंतु तनाव की गंभीर स्थितियों मं इन क्रियाओं का करना थोड़ा मुश्किल हो जाता है।

★समस्याओं को क्रमबद्ध करेंः गंभीरता अनुसार अपनी समस्याओं को क्रम में लिख लें। जो समस्या प्रमुख वर्तमान में निपटानी आवश्यक हो, पहले उसको हल करें। उसके बाद दूसरी समस्याओं का हल ढूंढें।

★कुछ चिंताओं को बाद के लिए छोड़ देंः कुछ लोग बेकार की ऐसी चिंताओं से घिरे रहते हैं, जिसका न तो एकदम कोई हल निकल सकता है और न ही वे फिलहाल कोई मायने रखती हैं। उदाहरण के लिए एक मां जिसकी बेटी केवल दस वर्ष की है, चिंता कर रही है कि 'पता नहीं मेरी बेटी बड़ी होकर क्या बनेगी? शादी करके कौन से घर जाएगी? उसका पति कैसा होगा?' इत्यादि। ऐसी चिंताएं भविष्य के लिए छोड़ दें। समय अपने आप इनका हल ढूंढ लेगा।

★ खाली मत बैठेंः कई बार खाली बैठे रहना भी मन को नकारात्मक विचारों की ओर ले जाता है। इसलिए अगर आप के पास काफी खाली वक्त है तो उसको किसी रचनात्मक व सृजनात्मक कार्यों में लगाइए जैसे बागवानी, कुकिंग, पेंटिंग, संगीत आदि।

★सोचने का तरीका बदलिएः याद रखिये आप वो हैं जो आप सोचते हैं। अतः सोच को सकारात्मक बनाइए। अगर आप कोई स्थिति नहीं बदल सकते, तब अपने आपको स्थिति के अनुसार बदल लीजिए।

★दवाइयों का सेवनः कुछ दवाइयां भी मनसिक तनाव से मुक्ति दिलाने में मदद कर सकती हैं, परंतु इन्हें कभी भी बिना डॉक्टरी सलाह के नहीं लेना चाहिए। बिना सोचे-समझे दवाइयों का सेवन गंभीर समस्याओं जैसे नशाखोरी, दिमागी मंदता आदि को जन्म दे सकता है।

★इसके अलावा कई अन्य तरीके भी उपयोग में लाए गए हैं जैसे बायोफीडबैक, मसाज, हिप्नोसिस इत्यादि। देखा जाए तो तनाव पर नियंत्रण पाने हेतु कई विधियां और तरीके हैं, परंतु कौन-सा उपाय किस स्थिति में लाभदायक होगा यह व्यक्ति विशेष के व्यक्तित्व व उसकी परिस्थितियों पर निर्भर करता है। सोचे-समझे ढंग से कि एक जीवन शैली में बदलाव कुछ समय बाद इंसान को काफी कुछ देकर जाते हैं। इसलिए चाहे छोटे सेकदम से ही शुरू करें, एक दिन आप तनावमुक्त जीवन जीना सीख जाएंगे। और मासिक थकान आपके पास भी नहीं फटकेगी। यदि फिर भी आप मानसिक थकान से मुक्त पाने में असफल रहते हैं या सही दिशा नहीं पाते हैं तब मनोरोग विशेषज्ञ से मिलने में देर नहीं करनी चाहिए।

-(लेखक की पुस्तक 'हर दसवां भारतीय मन का रोगी' से)

जहां मासिक धर्म होने से महिलाएं क्या अछूत हो जाती हैं

मासिक धर्म के समय महिला को गांव से निकलना अंधविश्वास

-डॉ दिनेश मिश्र

हमें राजनांदगांव जिले के एक ग्राम से यह खबर मिली थी कि वहां मासिक धर्म होने से महिलाओं को चार दिनों तक अछूत के जैसा रखा जाता है। उन्हें अपने घर में रहने की भी इजाजत नहीं होती। ज्ञात हो 28 मई को प्रति वर्ष विश्व मासिक धर्म स्वच्छता दिवस मनाया जाता है। मासिक धर्म से जुड़ी भ्रान्तियों के सम्बंध में जागरूकता हेतु कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं, तब ऐसी परम्पराओं से ग्रामीण अंचल में महिलाओं के जूझते रहने की खबरें हतप्रभ करने वाली हैं।

राजनांदगांव जिले के कोरकट्टा गांव में इस कुरीति के कारण मासिक धर्म के समय गाँव से बाहर बनी झोंपड़ी में उन्हें रहना होता है। उनके लिए रहने खाने पीने के लिए राशन वहां लाकर दिया जाता है। नहाने का पानी दूसरा व्यक्ति कुएं से निकाल कर सबसे बाद में देता है। चार दिनों के वाद उन्हें अपने घर में रहने की इजाजत मिलती है। 21 वीं सदी जब महिलाएं माह के तीसों दिन पुरुषों के कंधे से कन्धा मिला हर क्षेत्र में आगे बढ़ कर काम कर रही हैं, चारों ओर महिला समानता, शिक्षा, सुरक्षा की बातें हो रही हैं, तब ऐसी परम्पराओं को ढोने की खबरें हतप्रभ कर देती हैं। जब एक समाचारपत्र के संवाददाता ने मुझे यह जानकारी दी तो मैं आश्चर्यचकित रह गया। मैंने जब और आगे जानकारी ली तब पता चला कि यह परंपरा मानपुर ब्लॉक के कोरकट्टा गांव में काफी अर्से से चली आ रही है और महिलाएं पीढ़ी दर पीढ़ी इस कुरीति को ढोने को मजबूर हैं। इसके अलावा कुछ अन्य स्थानों में भी इस प्रकार की परंपरा के प्रचलित होने के समाचार मिले हैं। जबकि ऐसे समय उक्त महिला स्वयं को असहज महसूस करती हैं, कमजोर और अस्वस्थ असुरक्षित भी महसूस करती हैं, तब उसे न केवल घर बल्कि गांव से बाहर भेजने और निर्वासित सा रहने की परंपरा गलत है। मासिक धर्म महिलाओं में एक सामान्य प्रक्रिया है, इसे किसी भी अन्धविश्वास से जोड़ना एवं कुरीति बनाना अनुचित है। हम इस छुआछूत की परंपरा का विरोध करते हैं। उनकी उस गांव के निवासियों, से मुलाकात व उनसे चर्चा हुई है। मेरा वहां जाना भी हुआ है । हम जन जागरण अभियान चला कर ग्रामीणों का जागरूक करेंगे और इस कुरीति का निर्मूलन करेंगे।

अन्धविश्वासी गुरू-भक्ति

-आर.पी.गांधी

बच्चे का जन्म एक प्राकृतिक घटना है जिस परिवार में बच्चा जन्म लेता है। उसी परिवार के धर्म के नाम का ठप्पा उस पर लगा दिया जाता है जबकि बचपन में बच्चा धर्म जैसी बातों से अनजान होता है। ज्यों ज्यों उसको बोध होता है और उसमें समझ विकसित होती है तो वह परिवार में की जाने वाली धार्मिक रस्मों को देखने, समझने लगता है और बिना किसी तर्क के उनको करने लगता है। उस परिवार के संस्कार ही उसको हिन्दू, मुस्लिम, सिख अथवा ईसाई बनाते है। उसकी शिक्षा, संगत और पुस्तके भी उसके विचारों को निर्धारित करती है। अध्यात्मवादी सोच की पट्टी आंखों पर बांध दी जाती है जिससे बाहर सोचने की उसकी क्षमता ही नही रहती। युवा होने पर वह अपने ही धर्म को दूसरो के धर्म से श्रेष्ठ मानता है और दूसरे धर्म अथवा सम्प्रदाय के लोगों को तुच्छ समझता है। उसकी कट्टरवादी सोच उसको बहुत ही संकीर्ण बना देती है। एक छोटी सी चिंगारी को हवा देकर एक बहुत बड़ा शोला बना दिया जाता है जबकि मानवता, नम्रता, दया और सहयोग की शिक्षा देती है परन्तु ये कट्टरवादी सस्थाएं इन बातों को सुनने या मानने को तैयार नहीं होती। जब कोई व्यक्ति इन सकीर्णताओं से ऊपर उठता है,अन्ध-विश्वास के विरूद्व नैतिकता की बात करता है, उसको गोली का निशाना बना दिया जाता है। उदाहरण के लिए नरेन्द्र दाभोलकर को भी हिंसा का शिकार होना पड़ा जबकि वे वर्षो से अन्धविश्वास के विरूद्व आवाज बुलन्द किए हुए थे। उसकी मृत्यु उपरान्त महाराष्ट्र सरकार ने अन्ध-विश्वास के विरूद्व कानून भी बना दिया जिसके लिए वे समय से संघर्ष कर रहे थे। इनको मारने के पीछे भी कट्टरवादी ताकतें ही काम कर रही थीं। धर्म या मजहब जो भी हो बचपन से ही बच्चो को ऐसी घुट्टी पिला दी जाती है कि यह संसार मिथ्या है और असली जीवन मृत्यु उपरान्त शुरू होता है। स्वर्ग या जन्नत का लालच और नरक या दोजख का भय दिखाया जाता है। अगर आपने इस भवसागर को पार करना है तो आपको गुरू या पीर का सहारा लेना होगा। गुरू या पीर ही वह व्यक्ति है जो आपको स्वर्ग अथवा जन्नत दिला सकते हैं। इसलिए स्वयं को गुरू के चरणों में समर्पित कर दो। कम विकसित बुद्वि के लोग अन्ध-विश्वासी बन जाते है और वे अपने गुरू के प्रति इतने श्रद्वालु हो जाते हैं कि उसकी किसी कमी अथवा बुराई को देखने के लिए तैयार नही होते। कुछ इसी ढंग के विचार उनके मस्तिष्क में भर दिए जाते है जैसे गुरू-निन्दा घोर पाप, गुरू बिन ज्ञान नहीं। गुरू बिना गति नहीं। हिन्दु दर्शन आवागमन में विश्वास करता है। लोगो में ये प्रचार किया जाता है कि अगर आवागमन से छुटकारा पाना चाहते हो और स्वर्ग की इच्छा रखते हो तो स्वयं को गुरू भक्ति में लगा दो। इसके लिए आवश्यकता है मन की एकाग्रता की जबकि वैज्ञानिक सच यह है कि जब तक मनुष्य गहरी नीदं सो जाए मस्तिष्क अपना काम करता रहता है और स्वप्न भी अर्ध-निद्रा की अवस्था में देखे जाते हैं। इस तरह के आचार और विचार मनुष्य को अन्ध-विश्वासी ही बनाते हैं। उसकी बुद्वि को कुंठित करते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि जब भी किसी बाबा, गुरू अथवा स्वामी के बुरे कर्मो से पर्दा उठता है तब भी श्रद्वालु अपने गुरू का दामन थामे रहता है और उसके विरूद्व कोई बात सुनने को तैयार नही होते यहां तक कि अपने गुरू के पक्ष में उसके बचाव में हिसां पर भी उतारू हो जाते हैं।

तर्कशील सोसायटी के सदस्यों को पाखण्डी गुरूओं की पोल खोलने में अनेक खतरों का सामना करना पडा। यहां तक कि हिसां का शिकार होना पड़ा। इसके अतिरिक्त न्यायालयों के चक्कर भी लगाने पड़े जिससे समय और धन की काफी बर्बादी हुई। जब भी कोई सच्चाई उजागर करता है तो धर्म के तथा कथित ठेकेदारों को ठेस पहुंचती है और वे इसका विरोध हिंसा द्वारा करते है जो किसी भी तरह से धार्मिक कृत्य नही है। डा0 नरेन्द्र दाभोलकर भी ऐसी ही हिसां का शिकार हुए जिसका हम पहले जिक्र कर आए हैं। इन दिनों आसा राम भी चर्चा का विषय बना

हुआ है जिस पर एक नाबलिग के यौन-शोषण का आरोप है और इसी आरोप में जेल में बन्द है। लड़की आसा राम के एक आश्रम में पढ़ती थी और लड़की के माता-पिता लगभग 10 वर्ष से आसा राम के परम भक्त थे। आसा राम पर भू-माफिया होने का भी आरोप है। उन पर भिन्न-भिन्न स्थानों पर अवैध कब्जा कर आश्रम बनाने के आरोप भी लगे हैं। और कुछ मामलों में कार्यवाही भी हो रही है। आसू मल के नाम से जो व्यक्ति कभी साईकल में पक्चर लगाता था गुरू के धन्धे में पड़कर असीम सम्पति का मालिक बन बैठा। इसके आश्रमों की सख्या भी सैकड़ो में है और ये आश्रम भारत में ही नही विदेशों में भी बताए जाते है। टी.वी. में आए समाचार के अनुसार इसकी वार्षिक आय लगभग 1800 करोड़ रू है। इसके अन्ध-भक्तों की सख्या भी करोड़ों में है जब कि आसा राम स्वयं मैट्रिक पास भी नहीं है। इन दिनों उसके चेहरे से गुनाहों के पर्दे एक-एक करके उठाए जा रहे हैं। इस पर भी अन्ध-भक्त उसका पीछा छोड़ने को तैयार नहीं। उसका पुत्र नारायण साईं भी अपने पिता के पद चिन्हों पर चल रहा है और अपने पिता के बचाव की मुद्रा में है।

हमारे संस्कारो में कई ऐसी भावनाएं भर दी जाती है कि सामान्य व्यक्ति उनसे बाहर नहीं आ पाता। एक दोहा जिसे कथावाचक प्रायः सुनाते है'गुरू-गोविन्द दोउ खड़े,काके लागे पावं, बलिहारी गुरू आपनो, जिन गोविन्द दिओ मिलाय'।

यह दोहा इस बात को सिद्ध करता है कि गुरू को ईश्वर से भी बड़ा दर्जा दे दिया गया है। अन्ध ा-विश्वासी भक्त इन्हीं कारणों से गुरू में बुराइयां न देख वो ये मानतें है कि गुरू ही है जो उनको हर प्रकार के कष्टों से छुटकारा दिलाएगा। इसीलिए कथित गुरूओं के बेनकाब हो जाने पर भी वे अपने गुरू का दामन नही छोड़ते। हमारे देश में भिन्न- भिन्न समुदाओं के कथित गुरू हैं जिनसे भक्त-जन गुरू-मन्त्र अथवा बीज-मन्त्र लेते हैं और मन्त्र लेने के बाद वे घमण्डी हो जाते हैं। वे प्रायः यह कहते हुए पाए जाते हैं कि मैंने तो मन्त्र ले रखा है इसलिए मैं औरो से श्रेष्ठ हूं। वे दूसरों को गुरू-मन्त्र, नाम दान अथवा बीज-मन्त्र नहीं बताते हैं। कारण गुरू ने मन्त्र देते हुए इस बात की प्रताड़ना की होती है कि अगर यह मन्त्र किसी को बताओगे तो नरक के भागीदार होंगे। जिस भक्त को गुरू-मन्त्र चाहिए वह गुरू शरण में आए और स्वयं को सिद्ध करे मैं आपका सच्चा भक्त हूं तब गुरू जी महाराज कृपालु हो कर उसको गुरू-मन्त्र देंगे। इस तरह से वह व्यक्ति एक कट्टर भक्त बन जाता है। जो व्यक्ति भी उसके गुरू की आलोचना करे तो वह भक्त इसे सहन नही करता और लड़ाई करने पर उतारू हों जाता है। इस तरह ये गुरू थोड़े ही समय में बहुत बड़े-बड़े आश्रम खड़े कर लेते है जहां भक्तों की भीड़ लगी रहती है। भक्तों के परिश्रम और पैसे से लगंर चलाए जाते हैं। भक्तजन उस लगंर के खाने को खाकर धन्य मानते हैं। वह लगंर गुरू लगंर कहलाता है और जिनके पैसे से वह लगंर चलता है उनका कहीं नाम तक नहीं होता।

हमारे देश में कथित बाबाओं की कोई कमी नहीं है। अपने नाम के साथ जगतगुरू, श्री श्री 1008 पुजनीय, बंदनीय, स्वामी, महाराज जैसे शब्द लगा कर खुद को महान साबित करने का प्रयास करते है। भोली-भाली जनता को त्याग का पाठ पढ़ाने वाले अपने आश्रमों के अन्दर हर प्रकार की सुख-सुविधा जुटाने में कोई कसर नही छोड़ते। कल तक जो तन पर एक चादर ओढ़ कर जीवन बसर करते थे कुछ दिनों में जनता की गाढ़ी कमाई से वैभवशाली आश्रम खड़ा कर लेते हैश और उदाहरण के लिए शंकर नाम का लड़का जिसने बाद में सत्य साई बाबा के नाम से ख्याति पाई। इसने अपनी भविष्यवाणी में अपनी आयु 96 वर्ष बताई थी, वह इतनी आयु प्राप्त होने से पहले ही मौत का शिकार हो गया। अपने चाचा मदारी से कुछ चालाकियां सीख कर हवा में से भभूति, घड़ी, चेन आदि पैदा कर दिखाने लगा। यह तेलगू भाष के सिवाय कुछ नहीं जानता था। मरते समय उसका भार केवल 20 कि.ग्रा. रह गया था। कैंसर तथा एड्स जैसी बीमारियों में वज़न कम हो जाता है। कैंसर तो इनको था नहीं अतः एड्स होने की सम्भावना थी। सन 2003 में 'टुड़' नाम की पत्रिका में एक लेख छपा था जिसका शीर्षक था 'एक देवता को लगा दाग' जिसमें इसकी काली करतूतों को बेनकाब किया गया था। कुछ विदेशी युवकों ने इस पर यौन-सम्बन्धी मुकदमें भी दर्ज कराए थे। इसके मरने पर 400 अरब की सम्पति आंकी गई जो इसके ट्रस्ट वगैरा के नाम थी। एक सामान्य व्यक्ति उंची से उंची डिग्रियॉ हासिल करके भी इतनी सम्पति अर्जित नही कर

पाता। जबकि इस बाबा ने अनपढ़ होते हुए भी सम्पति का अथाह भण्डार एकत्रित कर लिया था। मैसूर विश्वविद्यालय के 20 वैज्ञानिकों ने इसके चमत्कारों को चुनौती दी थी जो इसने कभी स्वीकार न की। बी. प्रेमानन्द ने इसके दरवाजे पर जाकर वे सभी चमत्कार करके दिखाए जो सत्य-साई बाबा खुद करके अपने भक्तों को प्रभावित करता था। एक बार देश के बड़े-बड़े राजनेता इसके आश्रम में थे तब इसने एक सोने के चेन हवा में से प्रकट कर एक आर्किटैक्ट को भेंट करनी थी। कैमरे ने इसकी सारी चालाकी पकड़ ली। इसकी सी.ड़ी.बना कर देश के भिन्न-भिन्न हिस्सों में बांटी गई। इस पर सत्य साईं ने उन चार-पांच आदमियों को मौत के घाट उतरवा दिया जो इसकी चालाकी को नगां करने में शाामिल थे। सब कुछ बेनकाब होने पर भी इसके अन्ध-भक्त इसके साथ चिपके रहे। पूरी दुनिया में अढ़ाई करोड़ के करीब इसके श्रद्वालु थे। दुख तो तब होता है जब लोग सब कुछ देखने के बाद भी मक्खी निगलते हैं और सच्चाई से मुहं फेर लेते है। इस प्रकार इन पाखण्डी बाबाओं का धन्धा शान से चलता रहता है।

ऐसे ही दक्षिण भारत के गुरू शकंराचार्य ने अपने प्रबन्धक की हत्या करवा दी थी क्योंकि वह इसकी कमज़ोरियों से परिचित हो चुका था। दो मास तक उसकी जमानत न हो पाई और काफी लम्बे समय तक केस चला। इस केस की लम्बे समय तक प्रिटं मीडिया और इलैकट्रानिक मीडिया में चर्चा होती रही। एक बार टी.वी.चैनल ने अपने स्टिंग आपरेशन में बाबाओं के काले धन्धे का पर्दाफाश किया था जिसमें में काले धन को श्वेत धन में बदलने की एवज में मोटी रकम वसूलते थे। सबसे बड़ी विड़म्बना तो यह है कि आए दिन बाबाओं की काली करतूतें बेनकाब होने पर भोली-भाली जनता इनके प्रति श्रद्वा बनाए रखती है। और अपनी गाढ़ी कमाई इन पर लुटाते रहते हैं। जब भी कोई व्यक्ति इनकी करतूतों का पर्दाफाश करने का प्रयास करता है तो ये अपने गुर्गो द्वारा उसको मौत की नीदं सुला देते हैं। मरवाने वाले इस बात को भूल जाते है कि मरने वाला शारीरिक रूप से तो मर जाता है पर उसके विचार नही मरते और वे लोगो का पथ-प्रदर्शन करते रहते है। इस कार्य में तर्कशील सोसायटी भी प्रयासरत है। उसकी कोशिश रहती है कि लोगों का सच्चाई से परिचय कराया जाए और अन्ध-विश्वासों के अन्धेरे से बाहर लाया जाए। नरक का भय और स्वर्ग का लालच उनके मन से निकाला जाए और जीवन के यथार्य को समझे और इन पाखण्ड़ी बाबाओं के दिए गए प्रलोभनों से छुटकारा पाएं। जीवन बहुमूल्य है जो एक बार ही मिलता है। हमारा न पहले कोई जीवन था और न ही भविष्य में होगा। इसलिए हम अपने वर्तमान को सुधारे और भविष्य को उज्जवल बनाने का रास्ता खोजें। कमज़ोर लोग भाग्य का सहारा लेते हैं परन्तु विचारवान और हिम्मत वाले लोग अपना भाग्य स्वयं निर्धारित करते हैं। वह स्वयं को किसी दैवी-शक्ति के सहारे नही छोड़ते। वे अपने ही अन्दर आत्म-विश्वास पैदा करते हैं जबकि ये कथावाचक हमें असत्य के सहारे जीने की शिक्षा देते हैं। अपने अन्दर झांको, भगवान तुम्हारे अन्दर ही रहता है। हमारे अन्दर हड्डिया, मांस खून के सिवा कुछ नही। हमारी सोच का केन्द्र केवल मस्तिष्क है जो हमारे पूरे शरीर को नियन्त्रित करता है। वैज्ञानिक सोच एक ऐसी सोच है जो कारणों को जानकार हमारा उचित पथ प्रदर्शन करती है। इसलिए हम उन सभी भक्तों को निवेदन करते हैं कि इन पाखण्डी बाबाओं के बताए गए रास्तों से मुक्ति पाकर, स्वयं अपने अन्दर भरोसा जगाएं तथा अपने भविष्य को उज्जवल बनाएं। यह अन्ध-भक्ति हमें पथ-भ्रष्ट ही नही करती बल्कि कई प्रकार का शोष्ण भी करती है। ये बड़ी-बड़ी दरगाहें, मठ, आश्रम, धर्म-स्थल आदि हमें सच्चाई से दूर ले जाते है। यूरोपियन देश इन दिनों अपने चर्चो को बेच रहे है। कारण वे रूढ़ियों को तिलांजलि देकर जीवन की वास्तविकताओं को समझने का प्रयास कर रहे है। नित नई खोजों द्वारा जीवन के लिए हर प्रकार की सुख सुविधा जुटाने में लगे हैं। जो देश पूरी तरह विकसित नहीं है वहां के लोग उन चर्चो को खरीदकर अपने-अपने विश्वास अनुसार धर्म-स्थलों में बदल रहे है। अपने द्वारा बनाए गए मकड़-जाल मे और उलझते जाते हैं।

अब हालात ऐसे बन चुके है कि विश्व भर के मानव का यह दायित्व बनता है कि सभी तरह के भेद-भाव से मुक्त होकर प्यार, दोस्ती और अमन की अलख जगाएं।

(आर.पी.गांधी की अप्रकाशित पुस्तक 'दर्पण' से)

★★★

लेखकों/पाठकों के लिए :

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. अस्वीकृत रचना की वापसी हेतू पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर लिफाफा संलग्न करें।
3. रचना बायीं तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ-साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए
4. रचना सोसायटी के उदेश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
5. पत्रिका में छपी रचनाओं पर प्रतिक्रिया साधारण पोस्ट कार्ड से भी भेजी जा सकती है।
6. लेख, कहानी, कविता तथा रचनाओं पर प्रतिक्रिया ईमेल tarksheeleditor @gmail.com अथवा वट्सएप नः 9416036203 भी भेजी जा सकती है।
7. पत्र व्यवहार करते समय लिफाफे पर पूरे पैसों के टिकट लगाकर ही प्रेषित करें। बैरंग पत्र हो जाने की स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
8. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।
9. पत्रिका में छपी किसी भी रचना पर लेखक को मानदेय का प्रावधान नहीं है क्योंकि यह पत्रिका पूर्णतःअव्यवसायिक/ अवैतानिक संपादक एवं संपादक मंडल द्वारा अन्धविश्वासों, पाखण्डों, रूढ़ियों के विरूद्ध जागृति लाने हेतु जनहित में प्रकाशित की जाती है।

सहयोग

अमिताभ बसु, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली से तर्कशील सोसायटी हरियाणा को 5000/- (पांच हज़ार रुपये) का आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ है।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा उनके इस सहयोग के लिये आभार प्रकट करती है।

रागणी

मां गंगा होगी खारी

-रामेश्वर गुप्त

इतने धोए पाप इस म्हं, मां गंगा हो गी खारी रै।
सच्चे का ना कोई हिमाती, न्यू मर आगी म्हारी रै।।

नहीं सुरक्षित बाहण बेटी, इज्जत लुटती गालां म्हं।
नेता जी भी खड़े दीखते, गुण्डयां आले पाल्यां म्हं,
छल कपट चौगिर्दे सै, ईब माणस आले ढालां म्हं,
सै राज की नीयत खोटी, कोनी दम सवालां म्हं,
सारी दुनिया इन के पाछै, सीगां माटी ठा री रै।

सरे आम हो गी छीना-झपटी, धक्केशाही चाल पड़ी ,
अपहरण-फिरौती की अड़ै, इसी लड़ाई चाल पड़ी,
हक की ना बात करैं, सब कपट कमाई चाल पड़ी,
अड़ै कुर्सी के उपर भी आज, दादा लाही चाल पड़ी,
दूर-दूर तक अंधेरा दीखै, मेरा न्यू मायूसी छा री रै।

रोज सवेरा खूनी-खूनी, रोती देखी शाम मनै,
गालां म्हं फिरते देखे, बिन जूती के राम मनै,
खाली हाथ फिरै जवानी, नहीं दीखता काम मनै,
नेताओं के घरां म्हां रहे, दीख छलकते जाम मनै,
बारूद का घुंआ फैल रहया, जनता शीश झुका री रै।

घणी शर्म करैं अपराधी, ईब या लाचारी ना रहगी,
कड्डे हो आवाज़ उठावैं, हिम्मत म्हारी ना रहगी,
भीतर तक तो घर दीखैं, अड़ै चार दीवारी ना रहगी,
नंगे हो कै लूट रहे, कोए पर्दादारी ना रहगी,
'रामेश्वर' जित भी देखैं, उड़ै बाड़ खेत नै खा री रै।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की अपील

हरियाणा के असंध में शीघ्र ही 'तर्कशील केंद्र' के रूप में एक भवन निर्माण की योजना प्रस्तावित है। जिसके लिए सोसायटी के कार्यकर्ता मेहर सिंह विर्क ने असंध जिला करनाल में एक भूखण्ड प्रदान किया है। अतः सभी साथियों से अपील की जाती है कि इस योजना हेतु बढ़-चढ़ कर आर्थिक सहयोग करें। **-राज्य कार्यकारिणी**

साथी मुखविंदर सिंह चोहला का चले जाना

ताउम्र तर्कशील लहर को समर्पित मुखविंदर सिंह चोहला जी अब हमारे बीच नहीं रहे हैं। एक दूरदृष्टा कार्यकर्ता, चिंतक, लेखक और ज़िंदादिल इसनसान के रूप में वैज्ञानिक सोच के प्रसार के लिए उनके कार्यो को सलाम करते हैं।

15 जून को तर्कशील अदारे के अंदर यह खबर सबको सुन्न कर गई जब यह सुना कि तर्कशील मुखविंदर सिंह चोहला जी नहीं रहे। जिसने भी सुना, उसकी आंखें नम हो गईं। मुखविंदर सिंह सदा-सदा के लिए चला गया। हर सुबह उनका प्रतिदिन विचार पढ़ने वालों की आदत में शामिल हो गया था और उनका दिन मुखविंदर सिंह के उस हर रोज के नये विचार से शुरू होता था। इतिहास के पन्नों को हर रोज स्मरण करवाते हुए वे अपने इस प्रतिदिन के विचार में अपने वट्सएप, फेसबुक व सोशल मीडिया के अन्य माध्यमों से पाठकों के सामने रखते थे। हज़ारों पाठक केवल उन्हें इसी प्रतिदिन के विचार से जानते थे।

मुखविंदर सिंह चोहला बीमार तो पहले से ही चल रहे थे और वे पिछले लगभग 8 वर्षों से कैंसर की बीमारी से पीढ़ित थे लेकिन अपनी ज़िंदादिली और तर्कशील विचारों के हौसले से मौत को मात देते चले आ रहे थे।

13 जून 2019 को उनका लिखा विचार अंतिम सिद्ध हुआ। 14 जून को दिमाग में क्लॉट्स बनने से उन्हें इमरजेंसी में तरनतारन, पंजाब के अस्पताल में दाखिल किया गया जहां पर उनकी स्थिति बिगड्ती चली गई और 15 जून को उन्होंने अंतिम सांस ली।

तरनतारन जिले के गांव चोहला साहब के निवासी एक लेखक, चिंतक व एक तर्कशील कार्यकर्ता थे। युवाावस्था से ही बहुत से सामाजिक भलाई के कार्यो में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया करते थे। वह लोगों को वहमों, भ्रमों में से निकालने के लिए आम लोगों की सोच को वैज्ञानिक सोच बनाने के लिए व समाजिक बुराइयां दूर करने के लिए लगातार लिखते रहते थे और नाटक, ड्रामे, गदरी बाबाओं के मेले भी लोगों के सहयोग से करवाते रहे। वे तर्कशील सोसायटी के कई



सम्मानित पदों पर भी रहे।पिछल 20 वर्ष से से तर्कशील सोसायटी पंजाब, अमृतसर जोन में अलग-अलग पदों पर काम किया। 'अज दा विचार' कालम वे लगातार लिख करते थे। जिसम हर रोज का संक्षिप्त इतिहास देश भक्तों के संघर्ष के अनुछुए पन्नों के बारे बारे वे पाठकों को अवगत करवाया करते थे।

चोहला जी अपने जीवन में अपनी मृत्यु के बाद अपना शरीर वैज्ञानिक कार्यो के लिए प्रदान करने के लिए वसीयत कर गये थे। और इस प्रकार उनकी इच्छानुसार उनके शरीर को अग्नि भेंट न करके तर्कशील सोसायटी के सैंकड़ों कार्यकर्ताओं, बुद्धिजीवी साथियों, उनके पारिवारिक मैंबरों व रिश्तेदारों की उपस्थिति में आदेश मेडिकल मैडीकल कालेज के खोज केंद्र, बठिंडा को सौंप दिया गया। जिसमें उनके परिवार ने उनकी इच्छा का पालन करते हुए पूर्ण सहयोग दिया। तर्कशील सोसायटी हरियाणा चोहला जी के अतुलनीय योगदान को स्मरण रखेगी और साथी उनके कार्यो से प्रेरणा लेते रहेंगे।

मेरी मुट्ठी में सुलगती रेत रख कर चल दिया,
कितनी आवाज़ें दिया करता था ये दरिया मुझे।

***

तर्कशील सोसायटी पंजाब के राज्य स्तरीय प्रतिनिधि सम्मेलन की झलकियां



अध्यक्षीय मंडल एवं सम्बोधन करते हुए डा. दिप्ती



सम्मेलन में उपस्थित प्रतिनिधि

अमृतसर जोन के वरिष्ठ तर्कशील साथी, लेखक चिंतक मुखविन्द्र चोहला के सदा के लिए अलविदा कर जाने पर उनके कार्यों को सलाम



24 जून 2019 को साथी मुखविन्द्र चोहला के आदरांजलि समारोह में सम्बोधन करते हुए विभिन्न वक्ता एवं उपस्थित तर्कशील साथी

If undelivered please return to :

Tarksheel

Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera By Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55
Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

प्रो. बलवंत सिंह, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक मकान न. 1062, आदर्श नगर, पिपली, जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा) द्वारा रमणीक प्रिटरज, नजदीक लक्ष्मी सिनेमा, जिला यमुनानगर - 135001 (हरियाणा) से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।